श्री
कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ।।

✷ बड़ा कयामतनामा ✷

नोट—श्री देवचन्द्रजी महाराज ने श्री इन्द्रावतीजी को कहा था कि खेल में शाकुंडल और शाकुमार परमधाम की दो सखियां राजघरानों में आई हैं। ऐसा उनकी परआतम से पता चलता है, क्योंकि वह परमधाम में हंस रही हैं। उनको जगाकर तुम्हें लाना है। उनमें एक सखी शाकुंडल महाराजा छत्रसाल के तन में बैठी है। दूसरी शाकुमार औरंगजेब के तन में लीला कर रही है। श्री देवचन्द्रजी महाराज ने नाम नहीं बताए थे। बाद में श्री प्राणनाथजी महाराज ने उनको पहचाना।

खास उमतसों कहियो जाई, उठो मोमिनों कयामत आई।
केहेतीहों माफक कुरान, तुमारे आगे करों बयान।। १ ।।

हे शाकुंडल (महाराजा छत्रसालजी)! खास उम्मत जो औरंगजेब बादशाह है, उससे जाकर कहो कि कयामत के निशान जाहिर हो गए हैं। उनको कुरान के अनुसार तुम्हारे लिए बता रही हूं।

जो कोई खास उमत सिरदार, खड़े रहो होए हुसियार।
वसीयत नामे देवे साख, अग्यारैं सदीं होसी बेबाक।। २ ।।

ब्रह्मसृष्टियों में जो भी सिरदार सखियां हैं, वह सब सावचेत (सावधान) होकर जागृत हो जाओ। मक्का मदीना से वसीयतनामे इस बात की गवाही देते हैं कि ग्यारहवीं सदी में सबका न्याय कर देंगे।

बरकत दुनियां और कुरान, और फकीरों की मेहेरबान।
ए दरगाह से आया बयान, जबराईल ले जासी अपने मकान।। ३ ।।

वसीयतनामे में लिखा है कि मक्का मदीने से दुनियां की बरकत उठ गई और फकीर की शफकत (कृपा) उठ गई। वहां से साफ लिखकर आया है कि जबराईल फरिश्ता हिन्दुस्तान में जहां इमाम मेंहेंदी प्रगट हुए हैं, पन्नाजी में ले गए हैं।

और तिन दिन होसी अंधाधुंध, द्वार तोबा के होसी बंध।
कह्या होसी और रवेस, तब कोई किसी का नाहीं खेस।। ४ ।।

अब यहां मक्का मदीने में अन्धाधुन्ध का राज हो गया है जो जिसके मन में आता है वह वही करता है। तोबा के दरवाजे भी बन्द हो गए हैं। जैसा कुरान में कहा था, उसी के अनुसार सब जमाना बदल गया है। अब कोई किसी का मददगार नहीं रह गया।

Nijanand App

अब कहो जी बाकी क्या रह्या, निसान कयामत का जाहेर कह्या।
पातसाही ईसा बरस चालीस, लिख्या सिपारे अठाईस।।५।।

श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि मक्का मदीने में अब रह क्या गया है? कयामत के सभी निशान जाहिर हो गए हैं। कुरान के अट्ठाइसवें सिपारे में लिखा है कि ईसा रूह अल्लाह चालीस वर्ष तक बादशाही करेंगे। ईसा रूह अल्लाह की बादशाही ग्यारहवीं के दस, बारहवीं के तीस अर्थात् सम्वत् १७३५ से १७७५ तक हो गए। इसमें सोलह वर्ष तक स्वामीजी के तन से और २४ वर्ष महाराजा छत्रसालजी के तन से बादशाही हुई। इस समय में महाराज छत्रसालजी ने जगह-जगह प्रचार कराया।

क्या हिंदू क्या मुसलमान, सब एक ठौर ल्यावें ईमान।
सो क्या होसी उठे कुरान, ए विचार देखो दिल आन।।६।।

अब क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, सभी एक दीन (निजानन्द सम्प्रदाय) पर यकीन लाएंगे। जरा दिल से विचार करके देखो। कुरान के उठ जाने का अर्थ क्या है? इसका अर्थ यही है कि कुरान के छिपे रहस्य इमाम मेंहेंदी खोलेंगे। वह जाहिर हो गए।

नव सै नब्बे हुए वितीत, तब हजरत ईसा आए इत।
सो लिख्या अग्यारहें सिपारे माहें, मैं खिलाफ बात कहोंगी नाहें।।७।।

रसूल साहब के नौ सौ नब्बे वर्ष के बाद रूह अल्लाह श्री देवचन्द्रजी महाराज सम्वत् १६३८ में प्रगट हुए। यह कुरान के ग्यारहवें सिपारे में लिखा है। मैं कुरान के खिलाफ क्यों कहूंगी?

रूहअल्ला पेहेनें जामें दोए, ए लिख्या कुरान में सोई होए।
ए लिख्या छठे सिपारे माहें, धोखे वाला जाए देखे तांहें।।८।।

रूहअल्लाह दो तनों से लीला करेंगे, ऐसा कुरान में लिखा है। वही हो रहा है। यह कुरान के छठे सिपारे में लिखा है। जिसे संशय हो देख सकता है।

ए जो बरस ईसा की कही, तिनकी तफसीर कर देऊं सही।
दस अग्यारहीं बारहीं के तीस, ईसा पातसाही बरस चालीस।।९।।

ईसा रूह अल्लाह की चालीस वर्ष की बादशाही बताई है। उसका भी खुलासा कर देता हूं। ग्यारहवीं सदी के दस वर्ष सम्वत् १७३५ से १७४५—बारहवीं के तीस सम्वत् १७४५ से १७७५ तक—यह ईसा के चालीस वर्ष की बादशाही है।

सत्तर बरस और जो रहे, सो तो पुल—सरात के कहे।
मोमिन चलें बिजली की न्यात, मुतकी भी घोड़े की भांत।।१०।।

इसके आगे सत्तर साल पुलसरात के कहे हैं, अर्थात् सम्वत् १७७५ से १८४५ तक कर्मकाण्ड पर आधारित पुलसरात का समय है। इस समय में मोमिन बिजली की तरह जागेंगे। ईश्वरीसृष्टि की घोड़े की तरह चाल होगी। घोड़े की चाल का अर्थ है कि वह निराकार को कूदकर पार हो जाएंगी।

और जो जाहेरी उमत रही, दस बिध तिनको दोजख कही।
पुल-सरात कही खांडे की धार, गिरे कटे नहीं पावे पार।।११।।

जो जाहेरी जमात जीवसृष्टि है, कर्मकाण्ड करती है। उसे दस तरह की दोजख की अग्नि में जलना कहा है। यह कर्मकाण्ड का रास्ता ऐसा कठिन है, जैसा तलवार की धार पर चलना कठिन होता है। जिस

Nijanand App

पर चलने से तलवार की धार पैर काट देती है। कोई आगे कैसे चले? इस प्रकार कर्मकाण्ड पर चलने वाले पार नहीं जा सकते।

अमेतसालून में कह्या ए, ए जाए देखो दीदे दिलके।
ए जाहेर कह्या बयान, पर दिल के अंधे न सके पेहेचान।। १२ ।।

इस तरह की दोजख का ब्यान कुरान के तीसवें सिपारे की पहली आमेत सालून सूरत में लिखा है। इसको आत्मदृष्टि से देखो तो समझ में आएगा। इस स्पष्ट लिखे को भी शरीयत (कर्मकाण्ड) पर चलने वाले जीव (अन्धे) नहीं देख पाते।

दसहीं ईसा अग्यारहीं इमाम, बारहीं सदी फजर तमाम।
ए लिखी बीच सिपारे आम, तीसमा सिपारा जाको नाम।। १३ ।।

कुरान के तीसवें आम सिपारा में लिखा है कि दसवीं सदी में ईसा रूह अल्लाह आएंगे। ग्यारहवीं सदी में इमाम मेंहेंदी प्रगट होंगे और ग्यारहवीं सदी में कुलजम सरूप की वाणी मारफत सागर जाहिर होगी। इनके अनुसार दसवीं सदी सम्वत् १६३८ में श्यामा महारानी (देवचन्द्रजी) प्रगटे। ग्यारहवीं सदी में इमाम मेहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज मेहराज ठाकुर के तन में प्रगट हुए और बारहवीं सदी १७४८ तक कुलजम सरूप की पूरी वाणी जाहिर हो गई।

आए ईसा महंमद और इमाम, सब कोई आए करो सलाम।
पर न देखो आंखों जाहेरी, दिल दीदे देखो चित्त धरी।। १४ ।।

अब श्री प्राणनाथजी महाराज के तन के अन्दर ईसा रूह अल्लाह, रसूल साहब और इमाम मेंहेंदी अर्थात् तीनों सूरतें बसरी, मलकी, हकी एक तन में विराजमान हैं। अब सब कोई आकर इनके दर्शन करो और सिजदा करो। इनके स्वरूप को जाहेरी आंखों से मत देखो, क्योंकि तन तो आदमी जैसा ही है। इनके स्वरूप को आत्मदृष्टि से चित्त लगाकर देखो।

अजाजीलें देख्या वजूद, तो आदम को न किया सजूद।
सिजदे किए तिनें बेहद, सो सारेही हुए रद।। १५ ।।

अजाजील फरिश्ता ने आद आदम के शरीर को देखा। वह यह भी भूल गया कि खुदा ने इस आदम के अन्दर अपनी रूह को बिठा दिया है और इसलिए आदम के ऊपर सिजदा नहीं किया। खुदा का हुकम न मानने का उस पर गुनाह लगा। उसने जो पहले सिजदे किए थे, वह रद्द हो गए।

जो उनने देख्या आकार, तो लगी लानत और हुआ खुआर।
तब अजाजीलें मांग्या वचन, के आदम मेरा हुआ दुस्मन।। १६ ।।

अजाजील ने आदम के शरीर को देखा और रूह को नहीं पहचाना, इसलिए उसको लानत लगी और उसकी दुर्दशा हुई। तब अजाजील ने पारब्रह्म से प्रार्थना की कि यह आदम मेरा दुश्मन बन गया है। मैंने आपकी बहुत बन्दगी की है, इसलिए मेरी बन्दगी का बदला मिलना चाहिए।

इनकी औलादकी मारों राह, सबके दिल पर होऊं पातसाह।
आदम अजाजीलसों ऐसी भई, आठमें सिपारे में जाहेर कही।। १७ ।।

मैं इस आदम की औलाद (हर आदमी) के अन्दर बैठकर उसे सच्चे रास्ते से भटका दूंगा और इस तरह से उनके दिलों में बैठकर उन पर हुकूमत करूंगा। आदम अजाजील की यह बात कुरान के अन्दर आठवें सिपारे में जाहिर लिखी है।

Nijanand App

फेर तुम लेत वाही की अकल, पर क्या करो तुम जो वाही की नसल।
तुम दज्जाल बाहेर ढूंढ़त, वह दिल पर बैठा ले लानत।। १८ ।।

हे संसार के लोगो! तुम आदम की ही औलाद हो। अजाजील की ही बुद्धि के अनुसार दज्जाल को बाहर ढूंढ़ रहे हो। वह तो लानत लगने के बाद तुम्हारे अन्दर बैठकर तुम्हें भी परमात्मा की राह से भटका रहा है।

ऊपर माएने न होए पेहेचान, ए तुम सुनियो दिल के कान।
हमेसां आवत है ज्यों, अब भी फेर आए हैं त्यों।। १९ ।।

इन बातों को दिल से विचार करके ही पहचान सकोगे। ऊपर के मायने लेने से जानकारी नहीं होगी। हमेशा से हिन्दुओं के बीच अवतार होते आए हैं। अब भी उसी तरह से हिन्दुओं के बीच ईसा रूह अल्लाह देवचन्द्रजी और इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी प्रगट हुए हैं।

सब पैगंमर जहूद खिलके, विचार देखो दीदे दिलके।
ओ तो आए हिंदुओं दरम्यान, जिनको तुम केहेते कुफरान।। २० ।।

पहले भी सभी पैगम्बर यहूदियों में आए। यह तुम दिल से विचार करके देखो। इस बार भी हिन्दुओं के बीच आए हैं, जिनको तुम काफिर कहते हो।

तुम ढूंढ़ो अपने खिलके माहें, तामें तो साहेब आया नाहें।
जिनको तुम केहेते काफर जात, सो सबकी करसी सिफात।। २१ ।।

हे शरीयत के मुसलमानो! तुम अभी भी अपने बीच उनके आने का रास्ता देख रहे हो, परन्तु जिन हिन्दुओं को तुम काफिर कहते हो, अब वही तुम्हारी सिफारिश कर तुम्हें बहिश्तों में कायम करेंगे।

रब ना रखे किसीका गुमान, ओ तो गरीबो पर मेहेरबान।
परदा लिख्या जो हजरत के रूए पर, तिनकी क्या तुमको नहीं खबर।। २२ ।।

खुदा किसी का अहंकार नहीं रहने देते। उनकी मेहर तो सदा गरीबों पर होती है। कुरान और अंजील में लिखा है कि जब ईसा रूह अल्लाह दुबारा आएंगे, तो उनके मुंह पर परदा होगा। इसकी जानकारी क्या तुम्हें नहीं हुई?

परदा लिख्या वास्ते आवने हिंदुओं माहें, ए पढ़े इसारत समझत नाहें।
जो देखत हैं जेर जबर, सो हकीकत पावें क्यों कर।। २३ ।।

आखिर के समय जब रूह अल्लाह आएंगे तो उनके मुंह पर परदा होगा। इसका अर्थ यही है वह हिन्दुओं में आएंगे और तुम उन्हें पहचान न सकोगे, इसलिए तुम्हारे पढ़े-लिखे लोग इसको नहीं समझ पाते। जो भाषा को मात्राओं के रूप में देखते हैं, वह हकीकत के ज्ञान को कभी नहीं पा सकते।

ऐसी हिंदुओंकी कही सिफत, आखिर हिंदुओंमें मुलक नबुवत।
और आप हजरत रिसालत-पनाह, जहूद फकीरों में पातसाह।। २४ ।।

इस तरह से वक्त-ए-आखिरत को हिन्दुओं की बड़ी सिफत बताई है, क्योंकि हिन्दुओं के अन्दर ही ब्रह्मसृष्टियों का आना होगा। ब्रह्मसृष्टि ही कुरान में लिखे यहूदियों में फकीर होंगे और उन्हें उनके मालिक सिरदार खुद इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज अपनी शरण में लेंगे।

Nijanand App

पांचमें सिपारे में एह बयान, न मानो सो जाए देखो कुरान।
और हिंदवी किताबोंमें यों कही, बुध कलंकी आवेगा सही।। २५ ।।

यह हकीकत कुरान के पांचवें सिपारे में लिखी है। जिसको विश्वास न हो वह कुरान को जाकर देख ले। हिन्दुओं के धर्मग्रन्थों में भी लिखा है कि आखिर के समय विजियाभिनन्द बुध निष्कलंक अवतार प्रगट होंगे।

सो आएके करसी एक रस, मसरक मगरब होसी बस।
कोई केहेसी क्या दोऊ होसी एक बेर, तिनका भी कर देऊं निबेर।। २६ ।।

वही आकर सबको एक रास्ते पर चलाएंगे। पूरब को मानने वाले हिन्दू और पच्छिम दिशा को मानने वाले मुसलमान दोनों ही इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के अधीन होंगे। कोई पूछ सकता है कि विजियाभिनन्द बुधजी ईसा रूह अल्लाह और इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी एक साथ आएंगे? तो उसका भी विवरण कर देता हूं।

ए इसारत खोले निज बुध, बिना हादी न पाइए सुध।
घोड़ेको लिख्या कलंकी कर, ताकी किनकों नहीं खबर।। २७ ।।

धर्मग्रन्थों की इन इशारतों को कुलजम सरूप की वाणी ही खोलेगी और श्री प्राणनाथजी के बिना इसकी जानकारी किसी को नहीं होगी। हिन्दू शास्त्रों में घोड़े को कलंकी कहा है, क्योंकि वह तीन पैर पर खड़ा है, अर्थात् अथर्ववेद का अर्थ कोई नहीं करता था। व्यासजी को वेदत्रयी कहते हैं। श्री प्राणनाथजी महाराज ही बुध के अवतार हैं। उन्होंने अथर्ववेद के अर्थ खोले। ज्ञान के घोड़े पर सवारी की। ज्ञान के घोड़े को निष्कलंक किया। इसकी जानकारी क्या तुममें किसी को नहीं है?

जोतिष कहे विजिया अभिनंद, सब कलिजुगको करसी निकंद।
अंजील कहे ईसा बुजरक, सो आएके करसी हक।। २८ ।।

ज्योतिषशास्त्र भी कहता है कि विजियाभिनन्द प्रगट होंगे और कलिजुग के प्रभाव को नष्ट कर देंगे। अंजील में लिखा है कि आखिर के वक्त में ईसा आएंगे और वही सबसे महान् होंगे और सत्य (धर्म) की स्थापना करेंगे।

जहूद कहें मूसा बड़ा होए, ताके हाथ छूटें सब कोए।
यों सारोंने रसम जुदी कर लई, सब बुजरकी धनीकी कही।। २९ ।।

यहूदी भी कहते हैं कि अन्त समय में मूसा पैगम्बर आएंगे और उनके हाथों से सबको अखण्ड मुक्ति मिलेगी। इस तरह से सभी ने अपने-अपने तरीके से लिखा है, परन्तु यह सभी साहेबी जुदा-जुदा ग्रन्थों में श्री प्राणनाथजी महाराज के लिए कही गई है। यही एक सारे जगत के मालिक हैं।

ओ उरझे जुदे नाम धर, रब आलमका आया आखिर।
अपनी अपनी में समझे सब, जुदा न रह्या कोई अब।। ३० ।।

दुनियां के सभी धर्म वाले अपने नामों में उलझे हुए हैं, जबकि सारे जगत के मालिक श्री प्राणनाथजी महाराज आ गए हैं। अब सभी लोग अपनी-अपनी भाषा और अपने-अपने ग्रन्थों से समझ जाएंगे। श्री प्राणनाथजी महाराज ने सबको उनकी भाषा और उनके ग्रन्थों से ही समझाया। इसलिए अब कोई जुदा नहीं रहेगा।

Nijanand App

सब किताबों दई साख, जुदे नाम जुदी लिखी भाख।
सत असत दोऊ जुदे किए, माया ब्रह्म चिन्हाएके दिए।। ३१ ।।

अब सभी धर्मग्रन्थ अपनी-अपनी भाषा में अपने-अपने अगुओं के नाम से गवाही दे रहे हैं। श्री प्राणनाथजी महाराज ने माया और ब्रह्म की पहचान करा दी है और सत्य और झूठ को अलग-अलग करके दिखा दिया है।

दोनों जहानमें थी उरझन, करमकांड सरीयत चलन।
करी हकीकत मारफत रोसन, साफ किए आसमान धरन।। ३२ ।।

हिन्दू और मुसलमान दोनों ही कर्मकाण्ड और शरीयत के नियमों में झगड़ा करते थे। श्री प्राणनाथजी महाराज ने हकीकत और मारफत की वाणी (कुलजम सरूप की वाणी) से हिन्दू-मुसलमान सबके संशय मिटा दिए।

ब्रह्मांडको भान्यो खिलाफ, सब जहान को कियो मिलाप।
ग्वाही खुदाकी खुदा देवे, करे बयान हुकम सिर लेवे।। ३३ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज ने संसार के सभी धर्मों के झगड़े मिटाए और उनको एक झण्डे के नीचे लाए। यह खुद खुदा हैं। हुकम की आड़ में अपनी गवाही स्वयं दे रहे हैं।

सब पूजसी साहेब सरत, कलाम अल्ला यों केहेवत।
ए लिख्या तीसरे सिपारे, खोले अर्स अजीमके द्वारे।। ३४ ।।

कुरान में लिखा है कि खुदा अपने किए वायदे के अनुसार आएंगे और सारी दुनियां उनकी पूजा करेगी। वह कुलजम सरूप की वाणी से परमधाम की पहचान करा देंगे। यह बात कुरान के तीसरे सिपारे में लिखी है।

लैलत-कदर के तीन तकरार, तीसरे फजर में कार गुजार।
रूहों फरिस्तों वजूद धरे, लैलत कदरके माहें उतरे।। ३५ ।।

कुरान में लैल तुल कदर की रात के तीन भाग बताए हैं। इस रात्रि में ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि परमधाम और अक्षरधाम से उतरी हैं। लैल तुल कदर का पहला भाग बृज लीला, दूसरा भाग रास और तीसरे भाग में कुलजम सरूप की वाणी से ज्ञान का सवेरा होगा और ब्रह्माण्ड को अखण्ड करने के सारे काम पूरे किए जाएंगे।

खैर उतरी महीने हजार, गिरो दोऊ भई सिरदार।
हुकम दिया साहेबें इनके हाथ, भई सलामती इनके साथ।। ३६ ।।

इसी तीसरे भाग में जागनी के ब्रह्माण्ड में सम्वत् १६६४ से १७४८ तक श्री राजजी महाराज की मेहर उतरी। १६६४ में श्री देवचन्द्रजी को भागवत के रहस्यों का पता लगने लगा। आखिर १७४८ में कुलजम सरूप की पूरी वाणी आई जिससे ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि सबसे श्रेष्ठ हैं, दुनियां वालों को इसकी पहचान हुई। श्री राजजी महाराज ने ब्रह्माण्ड को अखण्ड करने का पूरा काम इनके हाथ सौंपा, जिससे सारी दुनियां में इनकी शोभा हुई।

Nijanand App

यों केतिक ग्वाही देऊं कुरान, इन्ना इन्जुलना में एह बयान।
तीसरे तकरार की भई फजर, अग्यारैं सदी में देखो नजर।। ३७ ।।

कुरान की मैं कितनी गवाही दूं। इन्ना-इन्जुलना में मेहर उतरने की हकीकत लिखी है। लैल के तीसरे भाग जागनी की लीला में कुल्जम सरूप के ज्ञान से ग्यारहवीं सदी में अज्ञानता का अन्धकार मिटकर सवेरा होगा।

और पेहेले सिपारेमें जो लिखी, सो तुम क्या नहीं देखी।
साहेदी कुंन की देवे जोए, खास उमत का कहिए सोए।। ३८ ।।

कुरान के पहले सिपारे में जो लिखा है वह क्या तुमने नहीं देखा? मूल-मिलावा में श्री राजजी महाराज ने इश्क रब्द के बाद कुंन शब्द कहकर संसार को बनाने का आदेश दिया। उस समय की श्री श्यामाजी महारानी और रूहें अब गवाही देते हैं। यही मोमिन हैं।

अब जो कोई होवे खास उमत, देवे ग्वाही सो होए साबित।
उड़ाए गफलत हो सावधान, छोड़ो पढ़ों का गुमान।। ३९ ।।

अब जो भी खास उम्मत मोमिनों में से हों, वह मूल-मिलावा की इस बात की गवाही दें। दुनियां के पढ़े-लिखे लोगों के अहंकार को तोड़कर उनकी भ्रान्तियां दूर करो और उनको सावचेत करो।

हकुल्यकीन और सुंनी जोए, पेहेले ईमान ल्यावेगा सोए।
पीछे जाहेर होसी साहेब, तब तो ईमान ल्यावेंगे सब।। ४० ।।

अब यह ब्रह्मसृष्टियां (मोमिन) ही यकीन वाले हैं। सुंनत जमात सुनकर ईमान लाने वाले कहलाते हैं। यही सबसे पहले इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज के ऊपर ईमान लाएंगे। कुलजम सरूप की वाणी से जब प्राणनाथजी के स्वरूप की पहचान हो जाएगी तो फिर सभी ईमान लाएंगे।

भिस्त दोजख जाहेर भई, नफा किसीको न देवे कोई।
ले हिरदे हादी के पाए, छत्रसाल यों कहे बजाए।। ४१ ।।

महाराजा छत्रसाल कहते हैं कि श्री प्राणनाथजी की वाणी ने कयामत के सभी निशान जाहिर कर दिए हैं और अब दुनियां वालों को बहिश्त और दोजख की पहचान हो गई है। अब न्याय का दिन आ गया है और सबको अपनी करनी का फल मिलेगा। कोई किसी की मदद न कर सकेगा, इसलिए श्री प्राणनाथजी महाराज के चरणों में ध्यान लगाकर मैं सारे संसार को सावचेत (सावधान) कर रहा हूं।

|| प्रकरण || १ || चौपाई || ४१ ||

एक तो कहे अल्ला कलाम, जाहेरी माएनों का नाहीं काम।
दूजे तो इसारत कही, इत हुज्जत काहूकी ना रही।। १ ।।

कुरान को अल्लाह की वाणी कहा है, इसलिए इसके जाहिरी मायने लेने से इसके रहस्य का पता नहीं चलेगा। कुरान में जो बातें कही हैं वह सब इशारतों में कही गई हैं जिनको रूहों (मोमिनों) के अतिरिक्त कोई नहीं कह सकता कि मैंने समझ लिया है।

तीसरे जंजीरों करी जिकर, पोहोंचे न चौदे तबकों की फिकर।
सोए परोवनी मोतियों माहें, खुदा बिन दावा किनका नाहें।। २ ।।

तीसरी खास बात यह है कि कुरान में अलग-अलग आयतों में अलग-अलग किस्सों के रूप में हकीकत कही है जो चौदह तबक की दुनियां वाले नहीं समझ सकते। इसे केवल खुदा ही जानता है, इसलिए उनकी इस वाणी को जिन्हें परमधाम के मोती कहा है, उनके दिल में बैठाना है।

Nijanand App

यों केतिक ग्वाही देऊं कुरान, इन्ना इन्जुलना में एह बयान।
तीसरे तकरार की भई फजर, अग्यारैं सदी में देखो नजर।। ३७ ।।

कुरान की मैं कितनी गवाही दूं। इन्ना-इन्जुलना में मेहर उतरने की हकीकत लिखी है। लैल के तीसरे भाग जागनी की लीला में कुल्जम सरूप के ज्ञान से ग्यारहवीं सदी में अज्ञानता का अन्धकार मिटकर सवेरा होगा।

और पेहेले सिपारेमें जो लिखी, सो तुम क्या नहीं देखी।
साहेदी कुंन की देवे जोए, खास उमत का कहिए सोए।। ३८ ।।

कुरान के पहले सिपारे में जो लिखा है वह क्या तुमने नहीं देखा? मूल-मिलावा में श्री राजजी महाराज ने इश्क रब्द के बाद कुंन शब्द कहकर संसार को बनाने का आदेश दिया। उस समय की श्री श्यामाजी महारानी और रूहें अब गवाही देते हैं। यही मोमिन हैं।

अब जो कोई होवे खास उमत, देवे ग्वाही सो होए साबित।
उड़ाए गफलत हो सावधान, छोड़ो पढ़ों का गुमान।। ३९ ।।

अब जो भी खास उम्मत मोमिनों में से हों, वह मूल-मिलावा की इस बात की गवाही दें। दुनियां के पढ़े-लिखे लोगों के अहंकार को तोड़कर उनकी भ्रान्तियां दूर करो और उनको सावचेत करो।

हकुल्यकीन और सुंनी जोए, पेहेले ईमान ल्यावेगा सोए।
पीछे जाहेर होसी साहेब, तब तो ईमान ल्यावेंगे सब।। ४० ।।

अब यह ब्रह्मसृष्टियां (मोमिन) ही यकीन वाले हैं। सुंनत जमात सुनकर ईमान लाने वाले कहलाते हैं। यही सबसे पहले इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज के ऊपर ईमान लाएंगे। कुलजम सरूप की वाणी से जब प्राणनाथजी के स्वरूप की पहचान हो जाएगी तो फिर सभी ईमान लाएंगे।

भिस्त दोजख जाहेर भई, नफा किसीको न देवे कोई।
ले हिरदे हादी के पाए, छत्रसाल यों कहे बजाए।। ४१ ।।

महाराजा छत्रसाल कहते हैं कि श्री प्राणनाथजी की वाणी ने कयामत के सभी निशान जाहिर कर दिए हैं और अब दुनियां वालों को बहिश्त और दोजख की पहचान हो गई है। अब न्याय का दिन आ गया है और सबको अपनी करनी का फल मिलेगा। कोई किसी की मदद न कर सकेगा, इसलिए श्री प्राणनाथजी महाराज के चरणों में ध्यान लगाकर मैं सारे संसार को सावचेत (सावधान) कर रहा हूं।

॥ प्रकरण ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ४१ ॥

एक तो कहे अल्ला कलाम, जाहेरी माएनों का नाहीं काम।
दूजे तो इसारत कही, इत हुज्जत काहूकी ना रही।। १ ।।

कुरान को अल्लाह की वाणी कहा है, इसलिए इसके जाहिरी मायने लेने से इसके रहस्य का पता नहीं चलेगा। कुरान में जो बातें कही हैं वह सब इशारतों में कही गई हैं जिनको रूहों (मोमिनों) के अतिरिक्त कोई नहीं कह सकता कि मैंने समझ लिया है।

तीसरे जंजीरों करी जिकर, पोहोंचे न चौदे तबकों की फिकर।
सोए परोवनी मोतियों माहें, खुदा बिन दावा किनका नाहें।। २ ।।

तीसरी खास बात यह है कि कुरान में अलग-अलग आयतों में अलग-अलग किस्सों के रूप में हकीकत कही है जो चौदह तबक की दुनियां वाले नहीं समझ सकते। इसे केवल खुदा ही जानता है, इसलिए उनकी इस वाणी को जिन्हें परमधाम के मोती कहा है, उनके दिल में बैठाना है।

Nijanand App

केहेलावें काजी पढ़े कुरान, अल्ला रसूल ना उमत पेहेचान।
ना कुरान ना आप चिन्हार, अहेल किताब यों कहावें दीनदार।। ३ ।।

दुनियां में कुरान के पढ़ने वाले अपने को काजी कहते हैं, परन्तु न तो उनको अल्लाह की, रसूल की और मोमिनों की पहचान है और न उन्हें कुरान की। न अपने आपकी पहचान है, परन्तु वह अपने को कुरान का वारिस कहकर दावा लेते हैं।

जाहेरी माएने लिए अंधेर, जाको लानत लिखी बेर बेर।
ढांपे कुरान की रोसनाई, अंदर सैतानें एही सिखाई।। ४ ।।

कुरान में साफ लिखा है कि जो अज्ञान से जाहिरी अर्थ करेंगे, उनको लानत लगेगी। उन सबके अन्दर शैतान अबलीस बैठा है जो कुरान के ज्ञान को ढक रहा है (जाहिर नहीं होने देता)।

दिल पर दुस्मन हुआ पातसाह, मारी दीन इसलाम की राह।
हुए हिरस हवा के बंदे, किए सैताने देखीते अंधे।। ५ ।।

दुनियां के दिलों पर दुश्मन अबलीस की बादशाही है जो लोगों को धर्म की राह पर नहीं चलने देता। उसने सबको माया की चाहना में भटका रखा है और इसलिए पढ़े-लिखे लोग अबलीस के कारण अंधेरे की तरफ चल रहे हैं।

सब अंगों बैठा दुस्मन जोर, दिलके दीदे दिए फोर।
दुस्मनें ना छोड़्या कोई ठौर, चौदे तबकों इनकी दौर।। ६ ।।

दुनियां में लोगों के रोम-रोम पर शैतान अबलीस बैठा हुआ है और इसने सबके दिल की आंखों को फोड़ दिया है, अर्थात् सबके सोचने की शक्ति समाप्त कर दी है। यह शैतान अबलीस इतना शक्तिशाली है कि इसने चौदह लोक के ब्रह्माण्ड में कहीं जरा भी ठिकाना नहीं छोड़ा।

उबरीं एक रूहें उमत, दूजी गिरो फरिस्तोंकी इत।
जिनमें इमाम हुआ आखिरी, हिंदू फकीरोंमें पातसाही करी।। ७ ।।

इस शैतान के पंजे से ब्रह्मसृष्टियां ही निकल सकीं और दूसरी जमात ईश्वरीसृष्टि ही बच कर निकलीं। इन ब्रह्मसृष्टियों और ईश्वरीसृष्टियों में आखिर के समय श्री प्राणनाथजी महाराज की साहेबी हुई। कुरान में इनकी हिन्दू फकीरों में बादशाही करना, लिखा है।

देखाई राह तौरेत कुरान, कुफर सबों का दिया भान।
ल्याया नहीं जो आकीन, सो जल दोजख आए मिने दीन।। ८ ।।

इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी महाराज ने तौरेत और कुरान, अर्थात् कलस और सनंध की वाणी से सबको सच्चा रास्ता दिखाया और सभी का अज्ञान मिटा दिया। इनके ऊपर जो यकीन नहीं लाया वह पहले पश्चाताप की अग्नि में जलेगा और फिर निजानन्द सम्प्रदाय में आएगा।

जो थी चौदे तबकों अंधेर, भान्यो सैतानी उल्टो फेर।
कराया सबों को सिजदा, जाहेर किया जो साहेब है सदा।। ९ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज ने चौदह तबक में फैले अज्ञान को मिटाया और शैतान अबलीस जो सबको उल्टा भटका रहा था, उसे समाप्त किया और फिर अखण्ड परमधाम में विराजमान श्री राजजी महाराज की पहचान कराकर सभी से सिजदा कराया।

Nijanand App

खास गिरो नूरजमाल में लई, नूरजलाल ठौर दूजी को दई।
तीसरी जो सब दुनियां कही, करी नूर नजर तले सही।। १० ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज ने ब्रह्मसृष्टियों को परमधाम में लिया। दूसरी जमात ईश्वरीसृष्टि को अक्षरधाम का ठिकाना दिया और तीसरी जमात जीवसृष्टि को अक्षर की नजर के नीचे योगमाया में आठ प्रकार की बहिश्तों में कायमी दी।

भिस्तां बांट दइयां इन बिध, काम सबोंके किए यों सिध।
कहे छत्ता जो पेहेले ल्यावे ईमान, खास उमतका सोई जान।। ११ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज ने इस तरह से सब जीवों को उनकी करनी के हिसाब से बहिश्तें बांटकर सबको अखण्ड कर दिया और उनके सभी काम पूरे कर दिए। महाराजा छत्रसाल कहते हैं कि इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के ऊपर जो पहले ईमान लाएगा, वही परमधाम की खास ब्रह्मसृष्टि है।

|| प्रकरण || २ || चौपाई || ५२ ||

लिख्या चौथे सिपारे, सुख उमत को खुदा के सारे।
कहे मक्के के काफर, आराम करते बीच घर।। १ ।।

कुरान के चौथे सिपारे में लिखा है कि खुदा ने ब्रह्मसृष्टियों की जमात को सब तरह के अखण्ड सुख दे रखे हैं, इसलिए यह माया के सुख नहीं चाहते। इस ठिकाने पर और लिखा है कि मक्का जो खुदा का घर है, उसके दावेदारों को दीन (धर्म) की चिन्ता नहीं है। वह घर में बैठकर आराम से दुनियां के सुख भोगते हैं। यहां नौतनपुरी में खुदा के स्वरूप श्री देवचन्द्रजी श्यामा महारानी हैं। उनके वारिस बिहारीजी ने चाकले मन्दिर की गद्दी ली है। उन्हें दीन (धर्म) पर यकीन नहीं है और प्राणनाथजी से मुनकिरी है। सुन्दरसाथजी जो पैसा चढ़ाते हैं उससे वह ऐशो-आराम करते हैं।

जो पूजें मक्के के पत्थर, इनों एही जान्या सांच कर।
और जिनको खुदाए की पेहेचान, सहें दुख न छोड़ें ईमान।। २ ।।

श्री बिहारीजी महाराज जो काले पत्थर के समान कठोर हृदय वाले थे। सुन्दरसाथ की उस समय के गादी पूजक समाज ने इनको ही देवचन्द्रजी के समान मान लिया है और खास जो मोमिन हैं वे श्री राजजी महाराज के स्वरूप श्री प्राणनाथजी को मानकर अपने घर परिवार को छोड़कर साथ में चल दिए और दिल्ली, उदयपुर, मन्दसौर, औरंगाबाद, रामनगर, आदि जगह-जगह पैदल चलकर लाखों कष्ट सहे, परन्तु उन्होंने अपने ईमान को नहीं छोड़ा।

तिनकी तसल्ली के कारण, महंमद को हुआ इजन।
और इसलाम कहे दरवेस, कही खास उमत इन भेस।। ३ ।।

इन मोमिनों के वास्ते ही परमधाम का सुख देने के लिए श्री प्राणनाथजी को कुलजम सरूप की वाणी से सुन्दरसाथ को सुख देने का आदेश श्री राजजी महाराज ने दिया। इन मोमिनों को दरवेश (फकीर) कहा है, अर्थात् दुनियां से वैर करने वाले और खुदा से प्रेम करने वाले फकीर कहा है। खासलखास मोमिन इस तरह के फकीरी भेष में रहते हैं।

याकी मुराद कही इसलाम, यों कह्या माहें अल्ला कलाम।
कोई कर ना सके भेव, जो महंमदको देवें फरेब।। ४ ।।

कुरान की हदीसों में कहा है कि ईमानदार मोमिन सदा ही दीन (धर्म) की इच्छा रखते हैं। जो काफिर हैं, वह श्री कुलजम सरूप की वाणी पर नहीं चलते। इस वास्ते वह कहते हैं कि श्री प्राणनाथजी के पास

Nijanand App

खास गिरो नूरजमाल में लई, नूरजलाल ठौर दूजी को दई।
तीसरी जो सब दुनियां कही, करी नूर नजर तले सही।। १० ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज ने ब्रह्मसृष्टियों को परमधाम में लिया। दूसरी जमात ईश्वरीसृष्टि को अक्षरधाम का ठिकाना दिया और तीसरी जमात जीवसृष्टि को अक्षर की नजर के नीचे योगमाया में आठ प्रकार की बहिश्तों में कायमी दी।

भिस्तां बांट दइयां इन बिध, काम सबोंके किए यों सिध।
कहे छत्ता जो पेहेले ल्यावे ईमान, खास उमतका सोई जान।। ११ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज ने इस तरह से सब जीवों को उनकी करनी के हिसाब से बहिश्तें बांटकर सबको अखण्ड कर दिया और उनके सभी काम पूरे कर दिए। महाराजा छत्रसाल कहते हैं कि इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के ऊपर जो पहले ईमान लाएगा, वही परमधाम की खास ब्रह्मसृष्टि है।

|| प्रकरण || २ || चौपाई || ५२ ||

लिख्या चौथे सिपारे, सुख उमत को खुदा के सारे।
कहे मक्के के काफर, आराम करते बीच घर।। १ ।।

कुरान के चौथे सिपारे में लिखा है कि खुदा ने ब्रह्मसृष्टियों की जमात को सब तरह के अखण्ड सुख दे रखे हैं, इसलिए यह माया के सुख नहीं चाहते। इस ठिकाने पर और लिखा है कि मक्का जो खुदा का घर है, उसके दावेदारों को दीन (धर्म) की चिन्ता नहीं है। वह घर में बैठकर आराम से दुनियां के सुख भोगते हैं। यहां नौतनपुरी में खुदा के स्वरूप श्री देवचन्द्रजी श्यामा महारानी हैं। उनके वारिस बिहारीजी ने चाकले मन्दिर की गद्दी ली है। उन्हें दीन (धर्म) पर यकीन नहीं है और प्राणनाथजी से मुनकिरी है। सुन्दरसाथजी जो पैसा चढ़ाते हैं उससे वह ऐशो-आराम करते हैं।

जो पूजें मक्के के पत्थर, इनों एही जान्या सांच कर।
और जिनको खुदाए की पेहेचान, सहें दुख न छोड़ें ईमान।। २ ।।

श्री बिहारीजी महाराज जो काले पत्थर के समान कठोर हृदय वाले थे। सुन्दरसाथ की उस समय के गादी पूजक समाज ने इनको ही देवचन्द्रजी के समान मान लिया है और खास जो मोमिन हैं वे श्री राजजी महाराज के स्वरूप श्री प्राणनाथजी को मानकर अपने घर परिवार को छोड़कर साथ में चल दिए और दिल्ली, उदयपुर, मन्दसौर, औरंगाबाद, रामनगर, आदि जगह-जगह पैदल चलकर लाखों कष्ट सहे, परन्तु उन्होंने अपने ईमान को नहीं छोड़ा।

तिनकी तसल्ली के कारण, महंमद को हुआ इजन।
और इसलाम कहे दरवेस, कही खास उमत इन भेस।। ३ ।।

इन मोमिनों के वास्ते ही परमधाम का सुख देने के लिए श्री प्राणनाथजी को कुलजम सरूप की वाणी से सुन्दरसाथ को सुख देने का आदेश श्री राजजी महाराज ने दिया। इन मोमिनों को दरवेश (फकीर) कहा है, अर्थात् दुनियां से वैर करने वाले और खुदा से प्रेम करने वाले फकीर कहा है। खासलखास मोमिन इस तरह के फकीरी भेष में रहते हैं।

याकी मुराद कही इसलाम, यों कह्या माहें अल्ला कलाम।
कोई कर ना सके भेव, जो महंमदको देवें फरेब।। ४ ।।

कुरान की हदीसों में कहा है कि ईमानदार मोमिन सदा ही दीन (धर्म) की इच्छा रखते हैं। जो काफिर हैं, वह श्री कुलजम सरूप की वाणी पर नहीं चलते। इस वास्ते वह कहते हैं कि श्री प्राणनाथजी के पास

Nijanand App

रसायन है। भुरकी डालकर वश में करते हैं। उनके पास चर्चा सुनने मत जाना। कोई-कोई तो उन्हें कवि और जादूगर कहते हैं और कहते हैं कि वह दुनियां को ठगने के लिए घूम रहे हैं।

बीच आवें जाएं सौदागर, वास्ते फानी फल कुफर।
काफर होए सिताबी दूर, मोमिन साहेब के हजूर।। ५ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज मोमिनों के बीच बैठकर चर्चा करते हैं और चितवनी कराते हैं। इसी बीच में कई संसारी लोग धन, सन्तान, मान, शक्ति, यन्त्र-मन्त्र के लिए आते-जाते हैं। ऐसे लोग चर्चा वार्ता में रुकावट डालते हैं। पूर्ण पहचान करके मोमिन ही सच्चा सुख लेने वाले हैं और हमेशा श्री प्राणनाथजी के सामने रहते हैं।

सो काफर पड़े माहें दोजख, आखिर को जो ल्यावे सक।
जो मोमिन हैं खबरदार, डरते रहें परवरदिगार।। ६ ।।

आखिर जमाने के खाविंद श्री प्राणनाथजी के तन को देखकर अज्ञानता के कारण बेइमानी लाते हैं। ऐसे काफिर लोग सदा दोजख की अग्नि में जलते रहेंगे। जो मोमिन हैं, उन्होंने दुनियां की रिश्तेदारियां (जो बलाएं हैं) अपने गुण, अंग, इन्द्रियों को वश में करके कुलजम सरूप की वाणी द्वारा श्री प्राणनाथजी की पूरी पहचान करते हैं और मूल स्वरूप श्री राजजी महाराज से हमेशा डरकर बन्दगी करते हैं।

बीच आखिरत के बुजरकी, हुई है इस उमतकी।
सांची गिरो जो है हक, तहां बाग भिस्त बुजरक।। ७ ।।

आखिर के जमाने में मोमिनों की बड़ी सिफत होगी। यह मोमिन सच्चे पारब्रह्म की जमात हैं। यह परमधाम में रहते हैं जहां बाग-बगीचे सदा हरे-भरे रहते हैं।

दूध सहत की नदियां चलें, बागों बीच दरखतों तले।
है इसलाम को मेहेमानी, होसी खुदाकी मेहेरबानी।। ८ ।।

परमधाम में जहां मोमिन रहते हैं, वहां बाग बगीचों में दरखतों के नीचे दूध और शहद की नदियां बहती हैं। श्री राजजी महाराज ने इन मोमिनों के ऊपर मेहरबानी करके परमधाम के सुखों के लिए निमन्त्रण दिया है।

जहां बिध बिध की हैं न्यामत, मेवा मिठाइयां बीच भिस्त।
करके तमासा नूर, इसलाम साहेबके हजूर।। ९ ।।

अक्षरब्रह्म की कुदरत के खेल का तमाशा देखकर और अपनी चाहना पूरी करके मोमिन जब धाम धनी के पास परमधाम में पहुंचेंगे, तो उनके वास्ते तरह-तरह की मेवा, मिठाइयां हाजिर मिलेंगी।

जो हमेसां दरगाह के, ए बीच भिस्त खुदाएके।
और जाहेद जो चाहें भिस्त, आसिकों दीदारकी कस्त।। १० ।।

अक्षरधाम के रहने वाले परहेजगार ईश्वरीसृष्टि हैं। जाहिरी बन्दगी करने वाले जीवसृष्टि बहिश्तों के सुख चाहते हैं। जो परमधाम की रहने वाली ब्रह्मसृष्टि हैं, वह आशिक अपने माशूक श्री राजजी महाराज के वास्ते कष्ट उठाते हैं।

Nijanand App

जो कहे हैं नेकोंकार, पाया छिपा भला दीदार।
जो फुरमान के बरदार, सोई नेक गिरो सिरदार।। ११ ।।

इस खेल के बीच मोमिनों ने खुदा के छिपे स्वरूप को श्री प्राणनाथजी के रूप में देखा। श्री प्राणनाथजी का ऊपर का स्वरूप पांच तत्व का है। कुलजम सरूप की वाणी से देखने में यह साक्षात् मूल स्वरूप श्री राजजी महाराज हैं। इन्होंने ही कुलजम सरूप की वाणी को अपने मुखारबिन्द से फरमाया है कि इनके अनुसार रहनी पर चलकर भजन करके चलने वाले मोमिन हैं। यह मोमिन ही जीवों को बहिश्तों में अखण्ड मुक्ति देने वाले सिरदार (प्रमुख) हैं।

ए जो कही किताबें तीन, तिन पर है हकका आकीन।
सिफत जमाने पैंगमर, रखना बीच खुदाएका डर।। १२ ।।

यह जो तीन किताबें रास, कलस और सनंध कही हैं, इनके ज्ञान से श्री प्राणनाथजी के स्वरूप की पहचान होती है और ईमान आता है, इसलिए इन किताबों द्वारा सच्चा पैगाम देने वाले आखिरी जमाने के खाविंद श्री प्राणनाथजी को बताया है। यह खुदा के समान ही महान् हैं। ऐसा समझकर इनसे डरना चाहिए, अर्थात् इनके स्वरूप को पहचानना चाहिए।

अंजील तौरेत और कुरान, इन पर होए आया फुरमान।
जो हवसेका पातसाह, पाई इन किताबों से राह।। १३ ।।

जब श्री प्राणनाथजी महाराज हवसा में थे, तब रास और कलस की दो चौपाइयां उतरीं। वहां से दीन की रोशनी बढ़ती ही गई, इसलिए श्री प्राणनाथ जी को हवसे का बादशाह कहा है। रास, कलस, सनंध किताब में वाणी को जाहेर करने का हुकम श्री राजजी महाराज ने दिया। इस वास्ते इन किताबों द्वारा ही परमधाम पहुंचने का सच्चा रास्ता मिलता है।

इनकी जो करे उमेद, मुराद इसलाम पावे भेद।
जो कहे दोस्त साहेब मोहोल, नजीक खुदाएके खासे फैल।। १४ ।।

इन तीनों किताबों की चर्चा (वार्ता) सुनने की चाहना मोमिनों के दिल में हमेशा रहती है। वह अपनी चाहना के लिए निजानन्द सम्प्रदाय के छिपे भेद तथा प्रेम और इश्क को इन्हीं किताबों से पाते हैं। जिन मोमिनों के दिल को खुदा का अर्श कहा है वही खुदा के अत्यन्त प्यारे आशिक कहे जाते हैं। वह इश्क, ईमान की अच्छी रहनी से चलकर खुदा के नजदीक रहते हैं।

सब्द न छोड़े ए महंमद, वास्ते फानी दुनियां रद।
वास्ते नेकी आखिरत, कबूं न छोड़ें खास उमत।। १५ ।।

यह मोमिन श्री प्राणनाथजी की वाणी के अनुसार चलते हैं और एक हर्फ को भी नहीं छोड़ते। झूठी दुनियां का सुख नहीं चाहते। आखिर के समय में मोमिनों को मिलने वाली नेकी के लिए ही यह कभी श्री प्राणनाथजी महाराज का साथ नहीं छोड़ते।

अदा हुए सब फरज, तब सिर से छूट्या करज।
खुसालियां इनों होसी घनी, भिस्त खजाना पाया अपनी।। १६ ।।

लोक-व्यवहार, मान-मर्यादा कर्ज के समान दुनियां के ऊपर लदी हुई है। मोमिन अपनी बन्दगी से इन सब कर्जों से मुक्त हो गए, अर्थात् दुनियां की मान-मर्यादा, बिरादरी, भाई-चारा मोमिनों से छूट गया। इन मोमिनों को परमधाम का अखण्ड खजाना मिला, जिससे इनको बड़ी खुशियां होंगी।

Nijanand App

इनों का होसी सिताब, नजीक खुदाएके हिसाब।
सब बंदगी एही मोमिन, जो अंदर के मारे दुस्मन।। १७ ।।

इन मोमिनों के इश्क, ईमान, बन्दगी, सेवा और कुर्बानी का हिसाब जल्दी ही होगा। इस वास्ते श्री प्राणनाथजी महाराज कहते हैं, कि हे मोमिनो! अपने शरीर के अन्दर के मान, गुमान, काम, क्रोध, अहंकार और गुण, अंग, इन्द्रियों की सभी इच्छाओं को समाप्त कर दो। यही सम्पूर्ण बन्दगी है।

एही कही तुम हकीकत, ए कबूल करो हुकम सरीयत।
आप रखो पांउं उस्तुवार, मैदान लड़ाई हो हुसियार।। १८ ।।

स्वामीजी कहते हैं कि कुरान के चौथे सिपारे की हकीकत मैंने तुमको बताई है अपने मूल घर परमधाम में पहुंचने का तरीका बताया है। उसे स्वीकार करो और उस रास्ते में ईमान, इश्क, सेवा, बन्दगी में अपने आप को दृढ़ता से लगाकर अपने दिल में माया की चाहनाओं को समाप्त करो। गुण, अंग, इन्द्रियां जो हराम की तरफ खींचती हैं, उनसे लड़ाई करो।

ए जो बैठा माहें सबन, एही खुदाएका है दुस्मन।
काफर करे बोहोतक सोर, तो मोमिनों सों न चले जोर।। १९ ।।

सभी लोगों के अंग-अंग में शैतान अबलीस बैठा है। यह खुदा के रास्ते में दुश्मन बनकर बैठा है। काफिर लोग मोमिनों को रास्ते से हटाने के बहुत उपाय करते हैं, मगर मोमिनों के ऊपर उनकी ताकत चलती नहीं।

बाजे नजीक अर्ज़ निमाज, और डरें नहीं हुकम आवाज।
निमाज पीछे कह्या यों कर, खुदाए का तुम राखो डर।। २० ।।

कई लोग धर्म के रास्ते पर चलकर धनी से हाथ जोड़कर विनती करते हैं, परन्तु श्री राजजी महाराज के हुकम से जो कुलजम सरूप की वाणी आई है, उससे नहीं डरते और न उस पर पूरा ईमान ही लाते हैं। वह अपने को ऊपर से दीन को मानने वाला बताते हैं। श्री प्राणनाथजी महाराज ने कहा है कि खुदा की बन्दगी भी करो और उसके बाद भी खुदा से डरो।

फुरमान बरदारी ल्यावे जोए, सिताब छुटकारा पावे सोए।
जिनों कुरान की पाई खबर, तिनों कह्या यों दिल धर।। २१ ।।

श्री मुख वाणी का जो आज्ञाकारी होगा और पूरे ईमान से सेवा बन्दगी करेगा, वह माया की फांसी से जल्दी छुटकारा पाएगा और परमधाम जाएगा। श्री प्राणनाथजी महाराज ने कुरान के रहस्य दृढ़ता के साथ खोल दिए हैं।

नफसों से करो सबर, मारो हिरस हवा परहेज कर।
दिलसे दृढ़ करो सबर, साबित बंदगी मौला पर।। २२ ।।

अपने गुण, अंग, इन्द्रियों से तथा बदफैली (बुरे कामों) से बचकर रहो। माया की चाहना झूठी है। इससे परहेज करके छोड़ दो। इ़स बात को दिल में निश्चित रूप से रख कर सब्र करो। तब तुम्हारी बन्दगी और सेवा श्री राजजी महाराज पर पूरी है।

Nijanand App

बंदगी वाले खुदाए राखत, बलाए सेती सलामत।
कजाए का सिर लेओ हुकम, हक मिलावे को रूह तुम।। २३ ।।

ईमान से बन्दगी करने वाली आत्माओं को धाम धनी मेहरबानी करके दुनियां के कष्टों से बचाकर रखते हैं, इसलिए यदि तुम्हारी आतम श्री राजजी से मिलना चाहती हो तो इन्साफ की वाणी कुल्जम सरूप के अनुसार चलो।

दूर करो जो बिना हक, करो उस्तुवारी जो बुजरक।
लुत्फ मेहेरबानगी पाओ भेद, छूटो तिनसे जो है निखेद।। २४ ।।

श्री राजजी महाराज के बिना माया की चीजों को छोड़ दो और दीन (धर्म), ध्यान, इश्क, प्रेम भाव के रास्ते पर दृढ़ता के साथ चलो। तब दुःखदायी माया से छूटकर तुम निर्मल हो जाओगे और तब श्री राजजी महाराज के दिल की बातों के गुझ (गुप्त) भेद उनकी मेहरबानी से जान सकोगे।

खुदाए बीच वजूद हिजाब, रूह तुमारी बैठा दाब।
पीछे फना के फायदा सब, दौलत खुदाए बका पाओ जब।। २५ ।।

तुम्हारे पांच तत्व के शरीर ने तुम्हारी आतम को दबा रखा है, इसलिए तुम्हारे और श्री राजजी महाराज के बीच में यह शरीर ही परदा बना है। श्री प्राणनाथजी के ऊपर अपने तन, मन, धन कुर्बान कर अपने अहंकार को मिटा दो। इसके बाद बहुत फायदा मिलने वाला है। तुम्हें धाम धनी के अखण्ड आनन्द की बेशुमार न्यामतें मिलेंगी।

बका चाहे सो फना होए, बिना फना बका न पावे कोए।
छोड़ो नाचीज जो कमतर, ताथें फना होउ बका पर।। २६ ।।

जो कोई परमधाम के अखण्ड सुखों को चाहने वाला हो, वह आखिरी जमाने के खाविंद के चरणों पर कुर्बान हो जाएं। बिना कुर्बानी के अखण्ड परमधाम के सुख किसी को नहीं मिल सकते, इसलिए नाचीज जो यह मोह माया है, इसको छोड़कर अखण्ड सुख के देने वाले इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के चरण कमलों पर अपने अहंकार को मिटाकर कुर्बान हो जाओ।

ढांपे थे जो एते दिन, हनोज लों न खोले किन।
बातून जो कुरान के स्वाल, सो जाहेर किए छत्रसाल।। २७ ।।

छत्रसालजी कहते हैं कि जब रसूल साहब आए थे, तब से एक हजार वर्ष तक अर्थात् सम्वत् १७३५ तक कुरान के छिपे रहस्यों को किसी ने नहीं खोला और न कोई जान ही सका था। अब कुरान के बातूनी अर्थ आखिर जमाने के खाविंद श्री प्राणनाथजी ने जाहिर कर दिए हैं।

।। प्रकरण ।। ३ ।। चौपाई ।। ७९ ।।

तीसरे सिपारे बड़ा जहूर, इमाम सुलतान का मजकूर।
महमूद गजनवी सुलतान, मिले इमाम सुख हुआ जहान।। १ ।।

इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज कहते हैं कि कुरान के तीसरे सिपारे में इमाम और सुल्तान का एक किस्सा है। सुल्तान महमूद गजनवी को भी इमाम से मिलने की इच्छा हुई। जब इमाम मिल गए तो बादशाह और उसकी जनता को भी सुख मिला। जाहिरी लोग कहते हैं कि यह बीता हुआ किस्सा है, परन्तु यह तो आखिर में होने वाली घटना की जानकारी है। इस किस्से में इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज हैं और महाराजा छत्रसाल के मिलने की जानकारी है।

Nijanand App

बंदगी वाले खुदाए राखत, बलाए सेती सलामत।
कजाए का सिर लेओ हुकम, हक मिलावे को रूह तुम।। २३ ।।

ईमान से बन्दगी करने वाली आत्माओं को धाम धनी मेहरबानी करके दुनियां के कष्टों से बचाकर रखते हैं, इसलिए यदि तुम्हारी आतम श्री राजजी से मिलना चाहती हो तो इन्साफ की वाणी कुल्जम सरूप के अनुसार चलो।

दूर करो जो बिना हक, करो उस्तुवारी जो बुजरक।
लुत्फ मेहेरबानगी पाओ भेद, छूटो तिनसे जो है निखेद।। २४ ।।

श्री राजजी महाराज के बिना माया की चीजों को छोड़ दो और दीन (धर्म), ध्यान, इश्क, प्रेम भाव के रास्ते पर दृढ़ता के साथ चलो। तब दु:खदायी माया से छूटकर तुम निर्मल हो जाओगे और तब श्री राजजी महाराज के दिल की बातों के गुझ (गुप्त) भेद उनकी मेहरबानी से जान सकोगे।

खुदाए बीच वजूद हिजाब, रूह तुमारी बैठा दाब।
पीछे फना के फायदा सब, दौलत खुदाए बका पाओ जब।। २५ ।।

तुम्हारे पांच तत्व के शरीर ने तुम्हारी आतम को दबा रखा है, इसलिए तुम्हारे और श्री राजजी महाराज के बीच में यह शरीर ही परदा बना है। श्री प्राणनाथजी के ऊपर अपने तन, मन, धन कुर्बान कर अपने अहंकार को मिटा दो। इसके बाद बहुत फायदा मिलने वाला है। तुम्हें धाम धनी के अखण्ड आनन्द की बेशुमार न्यामतें मिलेंगी।

बका चाहे सो फना होए, बिना फना बका न पावे कोए।
छोड़ो नाचीज जो कमतर, ताथें फना होउ बका पर।। २६ ।।

जो कोई परमधाम के अखण्ड सुखों को चाहने वाला हो, वह आखिरी जमाने के खाविंद के चरणों पर कुर्बान हो जाएं। बिना कुर्बानी के अखण्ड परमधाम के सुख किसी को नहीं मिल सकते, इसलिए नाचीज जो यह मोह माया है, इसको छोड़कर अखण्ड सुख के देने वाले इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के चरण कमलों पर अपने अहंकार को मिटाकर कुर्बान हो जाओ।

ढांपे थे जो एते दिन, हनोज लों न खोले किन।
बातून जो कुरान के स्वाल, सो जाहेर किए छत्रसाल।। २७ ।।

छत्रसालजी कहते हैं कि जब रसूल साहब आए थे, तब से एक हजार वर्ष तक अर्थात् सम्वत् १७३५ तक कुरान के छिपे रहस्यों को किसी ने नहीं खोला और न कोई जान ही सका था। अब कुरान के बातूनी अर्थ आखिर जमाने के खाविंद श्री प्राणनाथजी ने जाहिर कर दिए हैं।

।। प्रकरण ।। ३ ।। चौपाई ।। ७९ ।।

तीसरे सिपारे बड़ा जहूर, इमाम सुलतान का मजकूर।
महमूद गजनवी सुलतान, मिले इमाम सुख हुआ जहान।। १ ।।

इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज कहते हैं कि कुरान के तीसरे सिपारे में इमाम और सुल्तान का एक किस्सा है। सुल्तान महमूद गजनवी को भी इमाम से मिलने की इच्छा हुई। जब इमाम मिल गए तो बादशाह और उसकी जनता को भी सुख मिला। जाहिरी लोग कहते हैं कि यह बीता हुआ किस्सा है, परन्तु यह तो आखिर में होने वाली घटना की जानकारी है। इस किस्से में इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज हैं और महाराजा छत्रसाल के मिलने की जानकारी है।

Nijanand App

लागन हिंदू मुसलमान, गजनवी महमूद सुलतान।
ढ़ाए हिंदुओंके खाने बुत, दिलमें इमाम की ज्यारत।। २ ।।

हिन्दुस्तान में औरंगजेब के राज्य में हिन्दू-मुसलमान का युद्ध चल रहा था। औरंगजेब को मक्के मदीने से आए वसीयतनामों से पता चल गया कि इमाम मेंहेंदी हिंद में जाहिर हो गए, इसलिए इमाम मेंहेंदी को मिलने के लिए उसने साधु-सन्तों पर जुल्म ढाए। मन्दिरों और मूर्तियों को तोड़ा कि शायद कहीं मन्दिरों में इमाम मेंहेंदी हों, तो मिल जाएंगे।

अपने जमाने था उस्तुवार, कुतब औलियों का सिरदार।
बंदगी माहें था बड़ा, सफ तलेकी रेहेता खड़ा।। ३ ।।

औरंगजेब बादशाह अपने जमाने में सबसे बड़े कुरान के ज्ञानी थे। वह काजियों में सिरदार थे। इसको खुदा की बन्दगी से दृढ़ विश्वास था, इसलिए उनकी चाह में गरीबी से खड़ा रहता था।

तलब द्वा फातियाओं की कर, चाहता था तो अजमंतिसा अवसर।
फकीर सुलतानसों बातें भई, तब आकीन आया सही।। ४ ।।

अजमंतिसा कुरान की आयत में लिखा है कि खुदा सब प्रकार से समर्थ है। चाहे जिसको बादशाह बना दे, चाहे जिसको फकीर बना दे। उधर महाराजा छत्रसालजी बारह वर्ष पहले से ही बुधजी के आने की इन्तजार में थे, क्योंकि बारह वर्ष पहले उनको स्वामीजी ने पहचान के लिए अपना सिक्का दिया था। मऊ में तिदत्री दरवाजे पर मिलाप के समय बातें हुईं। तब महाराजा छत्रसाल को ऐसे और सिक्के देखने से और पक्का यकीन आ गया।

इमामें कह्या यों कर, पेसकसी ल्यावें हम घर।
बस्ती कोस पांच हजार, मुलक मदीने कई सेहेर बाजार।। ५ ।।

इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने छत्रसाल से पूछा कि हमारे लिए तुम क्या नजराने (भेंट) लाए हो। महाराजा छत्रसालजी ने कहा कि बुन्देलखण्ड की पांच हजार कोस की बस्ती अर्थात् यह मेरा पांच तत्व का शरीर, गुण, अंग इन्द्रियों सहित आपकी सेवा में अर्पित है।

एक हजार सात सै हाथी, लाख घोड़े सूरमें साथी।
एती आएके पेसकसी करी, ओढ़के पुरानी कमरी।। ६ ।।

सत्रह सौ हाथी और एक लाख घोड़े (दस इन्द्रियां, पांच प्राण, अपान-ब्यान, समान-उदान बुद्धि और चित्त यह सत्रह तत्वों का शरीर है। यही सत्रह सौ हाथी हैं। मेरा मन जो एक पल में एक लाख घोड़े के समान दौड़ने की शक्ति रखता है) इन्हें आपके चरणों में भेंट करता हूं। गरीबी और अधीनी की पुरानी कमरी ओढ़कर आपकी सेवा में खड़ा हूं (यह सब कुछ चोपड़ाजी की हवेली में पहली आरती के समय न्यौछावर किया)।

आप होए के नंगे पाए, तलेकी सफ में खड़ा आए।
आजिज होए नमाया सीस, कहे मोको करो बकसीस।। ७ ।।

अपने राजपूती अभिमान को त्याग दिया। यही नंगे पांव होना है। सब सुन्दरसाथ के पीछे हाथ जोड़कर खड़े हो गए और बड़ी नम्रता से श्री प्राणनाथजी के सामने सिर झुकाया और प्रार्थना की कि मेरी भूलों को क्षमा कर जो चाहो बख्शीश करो।

Nijanand App

कहे मोको सबूरी देओ, फकीरों के मिलावे में लेओ।
दुनियां थें आजाद किया, फकीरों के मिलावे में लिया।।८।।

महाराजा छत्रसालजी ने विनती की कि दुनियां के झंझटों से निकालकर मुझे अखण्ड परमधाम के सुख दीजिए और मोमिनों की जमात में मुझे शामिल कीजिए। तब श्री राजजी ने उन्हें माया के झंझटों से दूर करके सुन्दरसाथ में मिला लिया।

तो अजमंतिसा में सही, गजनवी को बकसीस भई।
इमाम पेहेचान करो रोसन, संसे भान देऊं सबन।।९।।

महाराजा छत्रसालजी को अजमंतिसा आयत में लिखे अनुसार बारह हजार मोमिनों में अमीरूल मोमिन के खिताब से सिरदारी मिली। अब छत्रसाल जी कहते हैं कि इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी विराजमान हैं। इनकी पहचान मैं सबको कराऊंगा। दुनियां के जो लोग कहते हैं कि यह बीते किस्से हैं, उनके संशय मिटांऊगा। यह किस्सा बीती बात नहीं है। यह आखिरत के निशान हैं।

देऊं कुरानकी साहेद, बिना फुरमान न काढ़ों सब्द।
छठे सिपारेमें एह सनंध, ईसा नुसखेका खावंद।।१०।।

महाराजा छत्रसाल जी कहते हैं कि मैं जो कहूंगा कुरान की गवाही देकर कहूंगा। कुरान के छठे सिपारे में लिखा है कि ईसा रूह अल्लाह श्यामा महारानी नुस्खा (तारतम ज्ञान) के मालिक हैं। उन्होंने माया से छुटकारा दिलाने के लिए तारतम ज्ञान रूपी औषधि पाई।

और साहेदी देऊं तीसरी, अहेल किताबें दिलमें धरी।
दस और एक सिपारा जित, एह सब्द लिखे हैं तित।।११।।

महाराजा छत्रसालजी कहते हैं कि कुरान की तीसरी गवाही देता हूं। ग्यारहवें सिपारे में लिखा है कि धर्मग्रन्थ के रहस्यों को जानने वाले मोमिन हैं। वह इन रहस्यों को सच्चाई से ग्रहण करते हैं।

बरस नव सै नब्बे हुए जब, मोमिन गाजी आए तब।
रूहअल्ला आए तिन मिसल, दूसरा जामा होसी मिल।।१२।।

रसूल साहब के नौ सौ नब्बे वर्ष बीतने पर श्यामा महारानी रूहों को लेकर संसार में प्रगटे और दूसरे तन से श्री प्राणनाथजी के रूप में जाहिर हुए।

बंदगी ए करसी कबूल, एकको हजार देवें इन सूल।
ए दूजा जामा ईसेका होए, बातून माएने पाइए सोए।।१३।।

श्यामा महारानी अपने दूसरे तन (श्री प्राणनाथजी महाराज) से सबकी बन्दगी को स्वीकार करेंगे और एक बन्दगी के बदले हजार बन्दगियों का फल देने वाले होंगे। रूह अल्लाह का दूसरा जामा जो लिखा है उसकी पहचान जाहिरी अर्थों से नहीं होती है। बातूनी से होती है। श्री श्यामाजी महारानी श्री देवचन्द्रजी का तन छोड़कर श्री इन्द्रावतीजी के तन में बैठे, यही दूसरा जामा है।

चौथी साहेदी नामें नूर, हुआ रूहअल्ला का नुसखा जहूर।
नव सै नब्बे नव मास ऊपर, ए नुसखा लिया मिसल मातबर।।१४।।

पहली गवाही तीसरे सिपारे से, दूसरी गवाही छठे सिपारे से और तीसरी गवाही ग्यारहवें सिपारे की दी है। चौथी गवाही नूर-नामा किताब की है। उसमें लिखा है कि रसूल साहब के नौ सौ नब्बे वर्ष नौ महीने

Nijanand App

के बाद में श्री श्यामा महारानी रूह अल्लाह श्री देवचन्द्रजी के तन में प्रगट हुईं और इन्हीं ने नुस्खे से मोमिनों की जमात में तारतम ज्ञान की रोशनी फैलाई।

असराफील इत बीच इमाम, ए नुसखे इलमकी किताबें कलाम।
एक रोज आए खाने किताब, कह्या पोहोंचाओ नुसखा सिताब।। १५ ।।

असराफील फरिश्ता ने यहां इमाम मेहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज के तन से कुलजम सरूप की वाणी जाहिर की। रामनगर की मंजिल में लालदासजी महाराज को औरंगजेब के पास जाने का हुकम हुआ था। तो उन्होंने लायब्रेरी (पुस्तकालय) में जाकर कुरान को देखकर श्री राजजी का हुकम निकाला, जिसमें सोलहवें सिपारे में लिखे मूसा, हारून और फिरऔन का किस्सा निकाला। उसे देखकर श्री प्राणनाथजी ने लालदासजी को कहा कि महाराजा छत्रसाल के पास तुरन्त समाचार पहुंचाओ।

महमूद गजनवी सुलतान, ओ नुसखा हासिल करे परवान।
जब नुसखा उनने सही किया, पंद्रा रोज सामें आएके लिया।। १६ ।।

स्वामीजी लालदासजी से कह रहे हैं कि कुरान में लिखे सुलतान गजनवी महाराजा छत्रसाल हैं। यह तारतम ज्ञान के नुस्खे को अवश्य लेंगे। उन्होंने लिया भी। उन्होंने अपने भतीजे देवकरण को पन्द्रह दिन पहले बुलाने भेज दिया और फिर मिलाप हुआ।

तब अव्वल आखिरकी मिली सब जहान, मिले तित हिंदू मुसलमान।
और भी मिली अनेक जात, सब कोई नुसखा करे विख्यात।। १७ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज के साथ देश-परदेश से आए हिन्दू-मुसलमान सुन्दरसाथ अव्वल के हैं। महाराजा छत्रसालजी और उनके साथ कई अनेक जातियों के लोगों ने श्री प्राणनाथजी महाराज से कुलजम सरूप की वाणी का प्रचार-प्रसार शुरू किया।

केतोंक अपना किया कुरबान, करें निछावर बुजरक जान।
इत पांच सै जुलजुलाटह्न, संग रसूल के असलू रूह।। १८ ।।

कितने ही खासलखास मोमिनों ने अपने तन, मन, धन कुर्बान करके सेवा-बन्दगी का लाभ लिया। श्री प्राणनाथजी के साथ पन्नाजी में पांच सौ ब्रह्मसृष्टियां थीं।

ए बखत हुआ कही कयामत, दोस्त खाना दाना पोहोंची सरत।
गुनाह सुलतान के किए सब माफ, लिया नुसखा हुआ साफ।। १९ ।।

कुरान में ग्यारहवीं सदी में जो कयामत का दिन लिखा है, वह श्री प्राणनाथजी के जाहिर होने के लिए है। उनके द्वारा ही कयामत के सात बड़े निशान जाहिर हुए। श्री प्राणनाथजी महाराज के दोस्त जो मोमिन रूहें हैं, उनको कुलजम सरूप की वाणी से परमधाम का ज्ञान (आतम का आहार) मिला। महाराजा छत्रसालजी के मिलने से पहले अनजाने में जो भी गुनाह हुए थे, वह सब श्री प्राणनाथजी ने माफ कर दिए। वह कुलजम सरूप की वाणी से निर्मल हो गए।

बारे हलके थे जो बंध, किए आजाद छूटे माया फंद।
लाख नंगों के दिए सिरो पाए, हुआ सुख दुख सबों जाए।। २० ।।

बारह हजार मोमिनों को त्रिगुण की माया के फन्दे से आजाद किया (त्रिगुण फांस के फन्द पड़े थे सो फन्दा निरवारे)। इन मोमिनों को पाक करके लाखों नगों से जड़ित सम्पत्ति परमधाम की बख्शीश में दी, जिससे मोमिनों के संसार के दुःख-सुख समाप्त हो गए। परमधाम के अखण्ड सुख प्रदान किए।

Nijanand App

पचास हजार बाग किए खैरात, बरकत नुसखे भई सिफात।
हवेलियां जो थी वैरान, सो किया खड़ियां हुए मेहरबान॥ २१ ॥

परमधाम की जमीन पचास हजार योजन की है जो मोमिनों को कुलजम सरूप की वाणी के नुस्खे से प्राप्त हुई। मोमिनों के अर्श दिल ही हवेलियां हैं। जो कुलजम सरूप की वाणी के बिना वीरान थीं। श्री प्राणनाथजी महाराज ने अपनी वाणी से पहचान कराकर इन मोमिनों को जागृत कर दिया।

ए जो बात कुराने कही, सो मैं जाहेर करी सही।
इनका बयान करे आलम, बिना फुरमाया करे जालम॥ २२ ॥

श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि कुरान के किस्से आखिर को होने वाली बातें हैं। मैंने तुमको बताई हैं। दुनियां वाले बातूनी अर्थों को बीती बातें कहते हैं और समाज के सामने हकीकत की पहचान करने में अड़चनें डालते हैं। ऐसा बड़ा जुल्म ढाते हैं।

तुम माएने ऊपर के यों लिए, किस्से कुरानके पेहेले हो गए।
जो जमाने हुए मनसूख, ए रोसनी तित क्यों डारो चूक॥ २३ ॥

यह लोग कहते हैं कि यह कुरान के किस्से बीती बातें हैं जो पहले हो गई हैं, वह जमाना गुजर गया, रद्द हो गया है, इसलिए अब इस ज्ञान को समझने में क्यों डरते हो?

ए जो इमाम गजनवीका मजकूर, लिख्या आखिरत को होसी जहूर।
सो मजकूर कहें हो गया, जो जाहेर कयामत में कह्या॥ २४ ॥

इमाम फकीर इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी हैं और गजनवी सुल्तान महाराजा छत्रसालजी हैं। इन दोनों स्वरूपों का किस्सा भविष्य में है ग्यारहवीं सदी में आएगा। कयामत के निशान जाहिर होंगे। इसको पढ़ने वाले लोग कहते हैं, यह बीती बात है।

उमी आप पढ़ें कुरान, सुनो जाहेरियों दिल के कान।
क़ाजी कजा पर आया आखिर, खोल दिल दीदे देखो नजर॥ २५ ॥

यह अनपढ़ सुन्दरसाथ कुरान पढ़ते हैं और उसके छिपे रहस्यों को समझा रहे हैं, इसलिए जाहिरी मायने से भूले-भटके लोग दिल के कानों से सुनो और विचारो कि खुदा ने संसार में आने का जो वायदा किया था, वह श्री प्राणनाथजी बनकर साक्षात् पन्नाजी में विराजमान हैं, परन्तु उनके स्वरूप को जाहिरी आंख से न देखना। अन्दर की आंखों से देखो और पहचानो।

ल्याओ आकीन कहे छत्रसाल, असलू पाक हुए निहाल॥ २६ ॥

महाराजा छत्रसालजी कहते हैं कि इस स्वरूप को दिल की आंखों से पहचान कर जिनको ईमान और इश्क आएगा, वही सच्चे मोमिन हैं और उनको दुनियां से पाक हो गए समझना।

॥ प्रकरण ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ १०५ ॥

लिख्या माहें नामें नूर, जाए देखो महंमद का जहूर।
आरिफ कहावें मुसलमान, पावें नहीं हिरदा कुरान॥ १ ॥

नूरनामे में मुहम्मद साहब की पहचान को देखो। मुसलमान अपने आपको कुरान का पढ़ा-लिखा कहते हैं, परन्तु कुरान के गुझ (गुप्त) अर्थों को नहीं समझते।

Nijanand App

पचास हजार बाग किए खैरात, बरकत नुसखे भई सिफात।
हवेलियां जो थी वैरान, सो किया खड़ियां हुए मेहरबान।। २१ ।।

परमधाम की जमीन पचास हजार योजन की है जो मोमिनों को कुलजम सरूप की वाणी के नुस्खे से प्राप्त हुई। मोमिनों के अर्श दिल ही हवेलियां हैं। जो कुलजम सरूप की वाणी के बिना वीरान थीं। श्री प्राणनाथजी महाराज ने अपनी वाणी से पहचान कराकर इन मोमिनों को जागृत कर दिया।

ए जो बात कुराने कही, सो मैं जाहेर करी सही।
इनका बयान करे आलम, बिना फुरमाया करे जालम।। २२ ।।

श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि कुरान के किस्से आखिर को होने वाली बातें हैं। मैंने तुमको बताई हैं। दुनियां वाले बातूनी अर्थों को बीती बातें कहते हैं और समाज के सामने हकीकत की पहचान करने में अड़चनें डालते हैं। ऐसा बड़ा जुल्म ढाते हैं।

तुम माएने ऊपर के यों लिए, किस्से कुरानके पेहेले हो गए।
जो जमाने हुए मनसूख, ए रोसनी तित क्यों डारो चूक।। २३ ।।

यह लोग कहते हैं कि यह कुरान के किस्से बीती बातें हैं जो पहले हो गई हैं, वह जमाना गुजर गया, रद्द हो गया है, इसलिए अब इस ज्ञान को समझने में क्यों डरते हो ?

ए जो इमाम गजनवीका मजकूर, लिख्या आखिरत को होसी जहूर।
सो मजकूर कहें हो गया, जो जाहेर कयामत में कह्या।। २४ ।।

इमाम फकीर इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी हैं और गजनवी सुल्तान महाराजा छत्रसालजी हैं। इन दोनों स्वरूपों का किस्सा भविष्य में है ग्यारहवीं सदी में आएगा। कयामत के निशान जाहिर होंगे। इसको पढ़ने वाले लोग कहते हैं, यह बीती बात है।

उमी आप पढ़ें कुरान, सुनो जाहेरियों दिल के कान।
क़ाजी कजा पर आया आखिर, खोल दिल दीदे देखो नजर।। २५ ।।

यह अनपढ़ सुन्दरसाथ कुरान पढ़ते हैं और उसके छिपे रहस्यों को समझा रहे हैं, इसलिए जाहिरी मायने से भूले-भटके लोग दिल के कानों से सुनो और विचारो कि खुदा ने संसार में आने का जो वायदा किया था, वह श्री प्राणनाथजी बनकर साक्षात् पन्नाजी में विराजमान हैं, परन्तु उनके स्वरूप को जाहिरी आंख से न देखना। अन्दर की आंखों से देखो और पहचानो।

ल्याओ आकीन कहे छत्रसाल, असलू पाक हुए निहाल।। २६ ।।

महाराजा छत्रसालजी कहते हैं कि इस स्वरूप को दिल की आंखों से पहचान कर जिनको ईमान और इश्क आएगा, वही सच्चे मोमिन हैं और उनको दुनियां से पाक हो गए समझना।

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। १०५ ।।

लिख्या माहें नामें नूर, जाए देखो महंमद का जहूर।
आरिफ कहावें मुसलमान, पावें नहीं हिरदा कुरान।। १ ।।

नूरनामे में मुहम्मद साहब की पहचान को देखो। मुसलमान अपने आपको कुरान का पढ़ा-लिखा कहते हैं, परन्तु कुरान के गुझ (गुप्त) अर्थों को नहीं समझते।

Nijanand App

महंमद मुरग कह्या आसमान, ए नीके कर देऊं पेहेचान।
इन मुरगने किया गुसल, धोए पर अरक निरमल।। २ ।।

मुहम्मद साहब को आसमानी मुर्ग कहा है, जिसने पानी में नहाकर अपने परों को धोया। इस किस्से की पहचान अब श्री प्राणनाथजी करा रहे हैं।

तिन मुरगें झटके अपने पर, ता बूंदोंके भए पैगंमर।
एक लाख भए बीस हजार, जिनों पैगाम दिए सिरदार।। ३ ।।

आसमानी मुर्ग श्यामाजी की आत्मा है, जिसने इल्म के सागर में नहाकर अपने पंख फड़फड़ाए जिससे एक लाख बीस हजार बूंदें गिरीं। दस-दस बूंदें एक एक मोमिन की पहचान है। जिन मोमिनों ने आखरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के हकीकत और मारफत के ज्ञान से कयामत के निशान और कुलजम सरूप की वाणी को दूर-दूर तक जाहिर किया।

कलाम अल्लाकी तो एह नकल, देखो दुनियां की अकल।
महंमदको करहीं औरों समान, इन दुनियांकी ए पेहेचान।। ४ ।।

कुरान में इस तरह के रहस्य लिखे हैं। अब दुनियां वालों की बुद्धि देखो। यह मुहम्मद को भी दूसरे पैगम्बरों के समान गिनते हैं।

जो कहावें महंमद के बंदे, सो भी न चीन्हें हिरदे के अंधे।
कहावें जाहेरी मुसलमान, गिनें महंमदको औरों समान।। ५ ।।

मुहम्मद साहब के मानने वाले भी ऐसे अन्धे हो रहे हैं और उनके स्वरूप की पहचान नहीं करते। यह जाहिरी मुसलमान मुहम्मद को दूसरे पैगम्बर के समान गिनते हैं।

ऊपर माएने ले भूले जाहेरी, कलाम अल्लाकी सुध न परी।
पेहेले कही जो तुम दिल में आनी, तुम जो जानी मुसलमानी।। ६ ।।

ऊपर के जाहिरी मायने लेकर यह बड़ी भूल करते हैं, इसलिए उनको कुरान के बातूनी मायनों की पहचान नहीं है। रसूल साहब ने पहले बुत परस्ती छुड़ाई और शरीयत की राह चलाई। लोगों ने इसी को ही मुसलमान धर्म समझ रखा है।

पाले अरकान मसले बावन, तुम वाही को जानो मोमिन।
उजू निमाज रोजा फरज, ए तो इन पर धरया करज।। ७ ।।

जो अपने अंगों को धोकर बावन मसले पालता है, नमाज पढ़ता है, रोजा रखता है, उसको तुम मोमिन कहते हो। यह तो मुसलमान को फर्ज बजाने के लिए नियम बनाया गया है, जिसे यह ऐसे पालन करते हैं, जैसे किसी का कर्ज देना हो।

और भी इनों मुसलमानी करी, सो भी देखो चलन जाहेरी।
ए लानत लिखी माहें फुरमान, सो बड़ी कर पकड़ी मुसलमान।। ८ ।।

कुरान में इब्राहीम पैगम्बर को जो सजा मिली थी, मुसलमानों ने उसे बड़ा भारी समझकर अपना लिया है। सजा को शरीयत बना ली।

Nijanand App

सरीयत यों कहे इभराम, जिनों किए हैं बद फैल काम।
जिनों अंगों लोप्या फुरमान, सो सारे किए नुकसान।। ९ ।।

शरीयत के मानने वाले कहते हैं कि इब्राहीम पैगम्बर ने बदफैली की थी और जिन अंगों से उसने नियम को तोड़ा था, पंच लोगों ने उन अंगों को काटने का आदेश दिया था। पैगम्बर इब्राहीम मर न जाएं इसलिए पंचों ने हाथ, पैर, सीने के कपड़े कटवा दिए और मुंह से दाढ़ी मूछ को विशेष रूप बनाकर सुंनत करा दी।

इबराहीम सिर ए लानत कही, सो पढ़ों सुंनत बड़ी कर लई।
जिन दई लानत ऊपर तकसीर, सो सोभा लई मुल्लां मीर पीर।। १० ।।

इब्राहीम को यह बदफैली की सजा मिली थी। इलम के पढ़े-लिखे मुल्लाओं ने सुंनत को बड़ा भारी मानकर शरीयत का नियम बना दिया।

ए पावें नहीं अल्ला कहानी, इन याहीमें कर लई मुसलमानी।
लानत करी ऊपरकी बानी, इनों सोई भली कर मानी।। ११ ।।

इन लोगों को कुरान की गुझ (गुप्त) बातों का पता नहीं है। इन्होंने शरीयत के नियमों को जो इब्राहीम को सजा मिली थी, उसे ही श्रेष्ठ मानकर शरीयत बना ली है।

पढ़े आलम आरिफ कहावें, पर एक हरफ को अर्थ न पावें।
मुखथें कहें किताबें चार, पर हिरदे अंधे न करें विचार।। १२ ।।

अपने आपको कुरान का ज्ञानी (आरिफ) कहलवाते हैं, परन्तु कुरान के गुझ (गुप्त) अर्थों में से एक को भी नहीं जानते हैं, परन्तु दावा लेते हैं कि हम अंजील, जंबूर, तौरेत और कुरान चारों किताबें पढ़े हैं, परन्तु दिल के ऐसे अन्धे हैं कि उनके गुझ (गुप्त) भेदों पर विचार तक नहीं करते हैं।

तौरेत अंजील और जबूर, चौथी कलाम अल्ला जहूर।
ए चारों उतरियां जिनों पर, सो चारों नाम कहे पैगंमर।। १३ ।।

तौरेत, अंजील जंबूर और कुरान जिन पैगम्बरों पर उतरी हैं उन पैगम्बरों के नाम बताते हैं।

मूसा ईसा और दाऊद, ए चारों आए बीच जहूद।
और आखिरी कहे महंमद, खतम किया इत बांधी हद।। १४ ।।

मूसा, ईसा और दाऊद यह सभी हिन्दुओं में आए हैं। उनमें से भी जो मुहम्मद साहब आखिरी पैगम्बर हैं, वह भी हिन्दुओं में आए हैं।

मनसूख तीन कही ता मिने, फुरकान एक यों भने।
समझे ना किताबोंके तांईं, क्या लिख्या है माएनों माहीं।। १५ ।।

कुरान में लिखा है कि अंजील, जंबूर और तौरेत को रद्द कर दिया है। किताबों को रद्द करने का अर्थ क्या है और उनमें लिखा क्या है? जाहिरी लोग जानते नहीं हैं।

तौरेत लिखी ठौर बीसेक कही, सो जुदे जुदे नामों पर दई।
ता बीच कहे अल्ला कलाम, कौल कयामत इन पर इसलाम।। १६ ।।

अलग-अलग नाम के बीस पैगम्बरों ने तौरेत किताब को लिखा है। इसमें अल्ला ताला के वचनों के अनुसार वह खुद ईमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के रूप में जाहिर होकर कयामत के निशान जाहिर करेंगे।

Nijanand App

अब को मनसूख और को कही हक, जाहेरी कोई न हुआ बेसक।
और भी तुमको कहूं हक, बिना पाए मगज न छूटे सक।। १७ ।।

अब महामतिजी कहते हैं कि कौन सी किताब सही रही और कौन सी रद्द कर दी? जाहिरी मुसलमान इसको नहीं समझ सके, इसलिए उनके संशय दूर नहीं हुए। इन ग्रन्थों के बातूनी अर्थ समझे बिना संशय नहीं मिट सकते।

कुरान लिख्या दिया चार ठौर, भी किताबें दैयां ठौर और।
अब को अव्वल को कलाम आखिरी, ए नीके तुम ढूंढ़ो जाहेरी।। १८ ।।

कुरान चार ठिकानों में लिखी है, ऐसा कहा है, अर्थात् कुरान को जानने वाले बसरी, मलकी, हकी, मुहम्मद की तीन सूरतें तथा चौथे मोमिन ही इनके बातूनी अर्थ जान सकेंगे। जाहिरी अर्थों को पकड़े रहने वाले विद्वान लोगो! अब तुम इस बात पर विचार करो कि कौन से ग्रन्थों को रद्द किया गया और उन्हीं के नाम से कौन सी किताबें दी गईं?

किस्से कुरानके डारो तित, रद जमाने हो गए जित।
ताए क्यों कहो यों कर, जो रोसनी होसी आखिर।। १९ ।।

जो जमाना रद्द हो गया है कुरान के किस्सों को बीती बातों में क्यों बताते हैं? यह तो आखिर की बातें हैं जो कयामत के समय जाहिर होंगी।

लिख्या अठारमें सिपारे, ले ऊपर के माएने सो हारे।
ऊपर माएने ले देवे सैतान, जाको कहिए बेफुरमान।। २० ।।

कुरान के अठारहवें सिपारे में लिखा है कि जो इनके ऊपर के मायने लेगा वह हार जाएगा। शैतान अबलीस सबके दिलों में बैठा है। वह सबको जाहिरी मायनों में उलझा देता है और बातूनी गुझ (गुप्त) बातों को समझने नहीं देता। वह पढ़े-लिखे लोगों को भी आज्ञा न मानने वाला बना देता है।

जो कोई होसी बेफुरमान, नेहेचे सो दोजखी जान।
ताको ठौर ठौर लानत लिखी, सोई जाहेरियों हिरदे में रखी।। २१ ।।

अब जो कोई जाहिरी अर्थ लेंगे वही आज्ञा न मानने वाले होंगे। उनको निश्चित ही दोजख में जाना पड़ेगा। उनके लिए जगह-जगह पर लानत लगेगी, ऐसा लिखा है। इन बातों को जाहिरी लोगों ने अपने दिल में रख लिया है।

अब और कहूं सो सुनो, महंमद को क्यों औरोंमें गिनो।
गिरो महंमद तो होए पेहेचान, जो मगज माएने पाओ कुरान।। २२ ।।

श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि हमारी दूसरी बात सुनो। मुहम्मद साहब को दूसरे पैगम्बरों के समान क्यों मानते हो? यदि तुम कुरान और हदीस के छिपे रहस्य को जान जाओ, तो मुहम्मद साहब की तीन सूरतों (बसरी, मलकी और हकी) और मोमिनों की पहचान हो जाएगी।

एक लाख भए बीस हजार, जिनों पैगाम दिए सिरदार।
सात कलमें वाले पैगंमर, गिरो सबों की कही काफर।। २३ ।।

कुरान में खुदा के पैगाम देने वाले पैगम्बरों की संख्या एक लाख बीस हजार बताई है। उनके उपर भी सात कलमे वाले पैगम्बर बताए हैं (१) आदम सफी अल्लाह (२) नूह नबी अल्लाह (३) मूसा कलीम

Nijanand App

अल्लाह (४) इब्राहीम खलील अल्लाह (५) अली वली अल्लाह (६) मुहम्मद रसूल अल्लाह (७) ईसा रूह अल्लाह। इन सब पैगम्बरों की जमात को बातूनी अर्थ न जानने के कारण नूरनामे में काफिर कहा है।

उनों करी बेफुरमानी, ताथें गिरो सबों की रानी।
अमेत सालून जो सूरत, तामें लिखी यों हकीकत।। २४ ।।

इन पैगम्बरों की जमात ने जाहिरी अर्थ लिए, बातूनी नहीं, इसलिए इनको रद्द कर दिया गया। कुरान के तीसरे सिपारे की पहली सूरत अमेत सालून है, जिसमें इस तरह का बयान लिखा है।

महंमद की जो उमत भई, दस विध दोजख तिनकों कही।
यामें फिरके कहे बहत्तर, तामे एक मोमिन लिए अंदर।। २५ ।।

कुरान के जाहिरी अर्थ लेने वाले मुहम्मद की उम्मत को भी दस तरह की आग में जलाया जाएगा। मुहम्मद की जमात के बहत्तर फिरके दस तरह की आग में जलेंगे। एक फिरका नाजी है। वह परमधाम जाएगा।

कौन गिरो जो अंदर लई, और कौन काफर हुए सही।
वाही सूरत में कही पुलसरात, कौन गिरो चली बिजली की न्यात।। २६ ।।

अब श्री प्राणनाथजी महाराज पूछते हैं कि बताओ वह कौन सी जमात है जो परमधाम के अन्दर ली गई? कौन वह बहत्तर फिरके हैं जो दोजख की अग्नि में जलेंगे? इस अमेत सालून सूरत में लिखा है कि पुलसरात का रास्ता तलवार की धार के समान होगा। इस रास्ते को एक झटके से बिजली के समान कौनसी जमात पार करेगी?

को निकसी घोड़े ज्यों पार, और कौन कटी पुलसरात की धार।
खास गिरो साहेबें सराहीं, गिरो दूजी पीछे लगी आई।। २७ ।।

और घोड़े के समान कौन सी जमात कूदकर निराकार के पार जाएगी? तीसरी कौनसी जमात है जो पुलसरात की राह पर चलकर कटकर मरेगी? खासलखास जमात मोमिनों की है। जिसकी सिफत सुभान करते हैं। दूसरी जमात ईश्वरीसृष्टि है जो पुलसरात की राह को घोड़े के समान कूदकर पार कर जाएगी और मोमिनों के पीछे-पीछे चलेगी।

और सैताने पीछी फिराई, सो सब दोजख को चलाई।
ऐसे उलमा सबही कहें, पर माएना बातून कोई न लहे।। २८ ।।

जीवसृष्टि को शैतान अबलीस ने पीछे माया की तरफ घसीट लिया। वह सब दोजख की अग्नि में जलेंगे, अर्थात् चौरासी लाख योनियों के चक्कर में फसेंगे। जाहिरी इलम के पढ़ने वाले उल्मां, आरिफ लोग सब ऐसा बताते हैं, परन्तु इसके गुझ (छिपे) भेदों को कोई नहीं पाते।

अठारहें सिपारे लिख्या हरफ, बिना मगज न पावें आरिफ।
बिना मगज न महंमद पेहेचान, बिना मगज ना पढ्या कुरान।। २९ ।।

कुरान के अठारहवें सिपारे में इस तरह लिखा है कि बिना गुझ (छिपे) रहस्य को जाने पढ़े-लिखे लोग कयामत के दिन की पहचान नहीं कर पाते और न मुहम्मद साहब की रूह की ही पहचान होती है। दूसरे पैगम्बरों से मुहम्मद साहब का कितना फर्क है, यदि इस गुप्त रहस्य को नहीं समझा, तो कुरान और हदीसों का पढ़ना सही नहीं होगा।

Nijanand App

बिना मगज न पाइए फुरकान, किन वास्ते आया फुरमान।
एह वास्ता पाइए तब, मगज माएनें खुलें जब।। ३० ।।

जब तक कुरान के छिपे रहस्य न खुलें, तब तक यह पता नहीं चलता कि यह कुरान किसके वास्ते आया है? जब कुरान के बातूनी अर्थ समझ में आ जाएं तभी कयामत के निशान समझ में आ सकते हैं।

खोल न सकें पढ़ें अल्ला कलाम, सो खोले उमी सब मेहेर इमाम।
अव्वल एही बांधी सरत, खुले माएने जाहेर होसी कयामत।। ३१ ।।

कुरान के पढ़े-लिखे लोग कुरान के छिपे रहस्यों को नहीं बता सके। अब इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी की मेहर से यह मोमिन जिनको उमी करके लिखा है, कुरान के सारे भेद खोल रहे हैं। शुरू में ही रसूल साहब ने यह बात साफ लिख दी थी। कुरान के जब गुझ (छिपे) भेद खुल जाएं, तभी कयामत के निशानों की पहचान सबको होगी।

किन खोले न .माएने कबूं कुरान, पावें न हकीकत करें बयान।
पढ़े आलम आरिफ कई जन, पर एक हरफ न खोल्या किन।। ३२ ।।

कुरान के बातूनी मगज मायने किसी ने नहीं खोले। सभी इस हकीकत को जाहिरी अर्थ करके सुनते हैं। पढ़-पढ़कर कई लोग आलिम और आरिफ बन गए हैं, परन्तु कुरान के गुझ (छिपे) भेदों का एक भी हरफ किसी ने नहीं खोला।

अब देऊं दरवाजे खोल, कहूं हकीकत बातून बोल।
जासों जाहेर होवे मारफत, दिन पाइए रोज कयामत।। ३३ ।।

स्वामीजी कहते हैं कि अब कुरान के छिपे भेदों को मैं खोल देता हूं और हरफ-हरफ के बातूनी भेद सबके सामने जाहिर करता हूं, जिससे सभी को कुलजम सरूप की वाणी का मारफत ज्ञान मिल जाए। और कयामत के निशान सबको पता लग जाएं।

साहेदी देवे अल्ला कलाम, सब दुनियां कबूल करे इसलाम।
खोले माएने बातून हकी, मोमिन जाहेर करों बुजरकी।। ३४ ।।

कुरान इस बात की गवाही देता है कि दुनियां के सभी लोग एक दीन में आ जाएंगे। हकी स्वरूप श्री प्राणनाथजी महाराज ने कुरान के सभी छिपे रहस्य खोल दिए हैं और मोमिनों की बुजरकी जाहिर कर दी है।

लिखे सब माएने बातन, सो हनोज लों ना खोले किन।
सब खूबियां हैं बातन, खुले मगज सबों भई रोसन।। ३५ ।।

कुरान के छिपे रहस्यों को आज दिन तक किसी ने नहीं खोला और सभी खूबी बातूनी अर्थ खुलने में ही है। इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज ने जागृत बुद्धि के ज्ञान से कुरान के छिपे रहस्यों को खोल दिया है और कयामत के निशान सबको जाहिर हो गए हैं।

अव्वल खूबी अल्ला कलाम, दूजी खूबी गिरो इसलाम।
तीसरी खूबी तीन हादी वजूद, आखिर आए बीच जहूद।। ३६ ।।

पहली खूबी कुरान के बातूनी रहस्यों को खोलने की है, जिससे खुदा की पहचान होती है। दूसरी खूबी निजानन्द सम्प्रदाय (दीन-धर्म) की सच्ची राह पर चलने वाले मोमिनों की है, जिन्होंने ईमान और

Nijanand App

इश्क से तन, मन, धन की कुर्बानी दी है। तीसरी खूबी बसरी, मलकी, और हकी सूरतों की है, जिन्होंने पारब्रह्म के स्वरूप की पहचान कराई और अन्त समय में तीनों हिन्दुओं के तन में आए।

रसूल रूहअल्ला और इमाम, ए तीनों एक कहे अल्लाकलाम।
बसरी मलकी और हकी, तीनों तरफ साहेब के साकी।। ३७ ।।

रसूल साहब, रूह अल्लाह और इमाम मेंहेंदी तीनों एक ही हैं, ऐसा कुरान में लिखा है। यह बसरी, मलकी और हकी तीनों का ज्ञान श्री अक्षरातीत पारब्रह्म की पहचान कराकर प्रेम रस (इश्क) का आनन्द दिलाने वाले हैं।

आदम नूह मूसा इभराम, और अली भेला माहें इमाम।
महंमद ईसा पेहेले कहे, ए सातों कलमा आए इत भेले भए।। ३८ ।।

आदम सफी अल्लाह, नूह नबी अल्लाह, मूसा कलीम अल्लाह, इब्राहीम खलील अल्लाह, अली वली अल्लाह, मुहम्मद रसूल अल्लाह, ईसा रूह अल्लाह यह सातों कलमे वाले पैगम्बरों की शक्ति श्री प्राणनाथजी के अन्दर समाई है।

जेता कोई पैगंमर और, सारी सिफतें याही ठौर।
सतरहें सिपारे यों कर कह्या, बिना महंमद कोई आया न गया।। ३९ ।।

और जितने भी पैगम्बर हो गए हैं, उन सबकी शक्तियां इस समय श्री प्राणनाथजी के अन्दर समाई हैं। कुरान के सत्तरहवें सिपारे में इस तरह से लिखा है कि एक मुहम्मद के अतिरिक्त खुदा के पास कोई आया गया नहीं है, इसलिए एक मुहम्मद ही सच्चे पैगम्बर हैं और कोई दूसरा नहीं है।

और लिख्या अठारमें सिपारे, महंमद नाम पैगंमर सारे।
सब पैगंमरों को जो सिफत दई, सो सिफत सब रसूल की कही।। ४० ।।

कुरान के अठारहवें सिपारे में लिखा है कि मुहम्मद के नाम के बहुत सारे पैगम्बर हुए हैं। इन सब पैगम्बरों के नाम पर जो पहचान बताई है, वह सारी महिमा रसूल साहब की ही है।

ए मगज खोल्या कुरान, सुनो हिंदू या मुसलमान।
जो उठ खड़ा होसी सावचेत, साहेब ताए बुजरकी देत।। ४१ ।।

महाराजा छत्रसालजी कहते हैं कि कुरान, हदीस, वेद, कतेब सबके रहस्य कुलजम सरूप की वाणी ने खोल दिए हैं। हिन्दू-मुसलमान सभी मिलकर सुनो, विचार करो और ईमान लाओ। इस वाणी के द्वारा माया-ममता का मोह छोड़कर जो जागृत हो जाएगा, उसको आखिरी जमाने के खाविंद श्री प्राणनाथजी महाराज अखण्ड और अविनाशी महिमा का सुख देते हैं।

कहे छत्ता तिनका अंकूर, नूर तजल्ला माहें जहूर।। ४२ ।।

महाराजा छत्रसालजी कहते हैं कि इस बात को सुनकर ईमान और इश्क पर खड़े होने वाले मोमिनों का मूल अंकूर परमधाम में है और वह अक्षरातीत श्री राजजी महाराज के सामने उठ खड़े होंगे।

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। १४७ ।।

हो सैयां फुरमान ल्याए हम, आए वतन से वास्ते तुम।
इनमें खबर है तुमारी, हकीकत देखो हमारी।। १ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज अपने सुन्दरसाथ से कहते हैं, हे साथजी! मैं तुम्हारे वास्ते कुरान के छिपे रहस्यों को खोलने वाली कुलजम सरूप की वाणी लेकर आया हूं। इस वाणी में परमधाम (मूल-मिलावा)

Nijanand App

इश्क से तन, मन, धन की कुर्बानी दी है। तीसरी खूबी बसरी, मलकी, और हकी सूरतों की है, जिन्होंने पारब्रह्म के स्वरूप की पहचान कराई और अन्त समय में तीनों हिन्दुओं के तन में आए।

रसूल रूहअल्ला और इमाम, ए तीनों एक कहे अल्लाकलाम।
बसरी मलकी और हकी, तीनों तरफ साहेब के साकी।। ३७ ।।

रसूल साहब, रूह अल्लाह और इमाम मेंहेंदी तीनों एक ही हैं, ऐसा कुरान में लिखा है। यह बसरी, मल्की और हकी तीनों का ज्ञान श्री अक्षरातीत पारब्रह्म की पहचान कराकर प्रेम रस (इश्क) का आनन्द दिलाने वाले हैं।

आदम नूह मूसा इभराम, और अली भेला माहें इमाम।
महंमद ईसा पेहेले कहे, ए सातों कलमा आए इत भेले भए।। ३८ ।।

आदम सफी अल्लाह, नूह नबी अल्लाह, मूसा कलीम अल्लाह, इब्राहीम खलील अल्लाह, अली वली अल्लाह, मुहम्मद रसूल अल्लाह, ईसा रूह अल्लाह यह सातों कलमे वाले पैगम्बरों की शक्ति श्री प्राणनाथजी के अन्दर समाई है।

जेता कोई पैगंमर और, सारी सिफतें याही ठौर।
सतरहें सिपारे यों कर कह्या, बिना महंमद कोई आया न गया।। ३९ ।।

और जितने भी पैगम्बर हो गए हैं, उन सबकी शक्तियां इस समय श्री प्राणनाथजी के अन्दर समाई हैं। कुरान के सत्तरहवें सिपारे में इस तरह से लिखा है कि एक मुहम्मद के अतिरिक्त खुदा के पास कोई आया गया नहीं है, इसलिए एक मुहम्मद ही सच्चे पैगम्बर हैं और कोई दूसरा नहीं है।

और लिख्या अठारमें सिपारे, महंमद नाम पैगंमर सारे।
सब पैगंमरों को जो सिफत दई, सो सिफत सब रसूल की कही।। ४० ।।

कुरान के अठारहवें सिपारे में लिखा है कि मुहम्मद के नाम के बहुत सारे पैगम्बर हुए हैं। इन सब पैगम्बरों के नाम पर जो पहचान बताई है, वह सारी महिमा रसूल साहब की ही है।

ए मगज खोल्या कुरान, सुनो हिंदू या मुसलमान।
जो उठ खड़ा होसी सावचेत, साहेब ताए बुजरकी देत।। ४१ ।।

महाराजा छत्रसालजी कहते हैं कि कुरान, हदीस, वेद, कतेब सबके रहस्य कुलजम सरूप की वाणी ने खोल दिए हैं। हिन्दू-मुसलमान सभी मिलकर सुनो, विचार करो और ईमान लाओ। इस वाणी के द्वारा माया-ममता का मोह छोड़कर जो जागृत हो जाएगा, उसको आखिरी जमाने के खाविंद श्री प्राणनाथजी महाराज अखण्ड और अविनाशी महिमा का सुख देते हैं।

कहे छत्ता तिनका अंकूर, नूर तजल्ला माहें जहूर।। ४२ ।।

महाराजा छत्रसालजी कहते हैं कि इस बात को सुनकर ईमान और इश्क पर खड़े होने वाले मोमिनों का मूल अंकूर परमधाम में है और वह अक्षरातीत श्री राजजी महाराज के सामने उठ खड़े होंगे।

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। १४७ ।।

हो सैयां फुरमान ल्याए हम, आए वतन से वास्ते तुम।
इनमें खबर है तुमारी, हकीकत देखो हमारी।। १ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज अपने सुन्दरसाथ से कहते हैं, हे साथजी! मैं तुम्हारे वास्ते कुरान के छिपे रहस्यों को खोलने वाली कुलजम सरूप की वाणी लेकर आया हूं। इस वाणी में परमधाम (मूल-मिलावा)

Nijanand App

में हुए इश्क रब्द से लेकर वापस घर चलने तक और तुम्हारे द्वारा सारे संसार के जीवों को अखण्ड मुक्ति बहिश्तों में देने की और ईश्वरीसृष्टि को उसके धाम पहुंचाने की हकीकत लिखी है। मैं तुम्हारे वास्ते यह वाणी लेकर आया हूं, इसलिए इस वाणी से तुम मेरे स्वरूप को पहचानो। मैं ही तुम्हारा धाम का धनी प्राणनाथ हूं।

सिफत रसूल अल्ला कलाम, रूहअल्ला ईसा पाक इमाम।
कही खास उमत महंमद, जाकी सिफतको न पोहोंचे सब्द।। २ ।।

इसमें रसूल मुहम्मद द्वारा लाए कुरान के छिपे रहस्य खोले गए हैं। श्यामा महारानीजी मल्की सूरत और हकी सूरत इमाम मेंहेंदी इन तीनों सूरतों की पहचान है और श्यामा महारानी के अंग जो ब्रह्मसृष्टियां हैं, उनकी महिमा बताई है, जो कि यहां के शब्दों में कहना सम्भव नहीं है।

सोई कहूंगी जो लिख्या कुरान, सब्द न काढूं बिना फुरमान।
या तो कहूं महंमद हदीस, भला मानो या करो रीस।। ३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि कुरान में जो आगम लिखा है उसका प्रमाण देकर कहूंगी। बिना कुरान की गवाही के एक शब्द भी नहीं बोलूंगी। या तो मुहम्मद साहब की हदीस से गवाही दूंगी। उसमें तुम हिन्दू या मुसलमान को भला लगे तो ईमान लाना, बुरा लगे तो अलग हो जाना। हमको तो प्रमाण देकर सत्य कहना है।

दे साहेदी कहूंगी हक, सो देखो कुरान जाए होवे सक।
अब लों जाहेर थी सरीयत, खोले माएने बातून हकीकत।। ४ ।।

आप महामतिजी कहते हैं कि मैं गवाही देकर सत्य बात कहूंगी जिसे संशय हो, वह कुरान, हदीसों में जाकर देख ले। आज दिन तक कर्मकाण्ड की और रसूल साहब द्वारा चलाई शरीयत की ही जानकारी लोगों में थी। अब मैंने सब धर्मग्रन्थों के बातूनी रहस्य खोलकर हकीकत का ज्ञान (कुलजम सरूप वाणी) दे दी है और कयामत की पहचान करा दी है।

अब सबमें जाहेर हुई कयामत, खुले कलाम जब पोहोंची सरत।
लिख्या सिपारे सोलमें मिने, आगे राह न पाई किने।। ५ ।।

ग्यारहवीं सदी में कयामत होने की बात लिखी थी। श्री प्राणनाथजी महाराज ने सब किताबों के छिपे रहस्य खोल दिए और सब दुनियां को कयामत की जानकारी हो गई। कुरान के सोलहवें सिपारे में लिखा है कि इससे पहले के पैगम्बरों में से किसी ने भी हकीकत और मारफत का ज्ञान नहीं पाया।

ए जो चौदे तबक की जहान, इनकी फिकर लग आसमान।
जब लग आए रसूल महंमद, किने न छोड़ी अक्सा मसजिद।। ६ ।।

यह चौदह लोक की दुनियां के बड़े-बड़े पीर, पैगम्बर, ज्ञानी, अगुओं, की पहुंच निराकार तक ही है। जब तक रसूल साहब संसार में नहीं पधारे, तब तक इब्राहीम की बताई अकसा मस्जिद अर्थात् निराकार की पूजा करते रहे। अब श्री प्राणनाथजी महाराज ने आकर सभी धर्मग्रन्थों के रहस्य खोलकर कुलजम सरूप की वाणी से शरीयत, कर्मकाण्ड, स्वर्ग, बैकुण्ठ, निराकार का रास्ता छुड़ाया और अखण्ड परमधाम में विराजमान श्री राजजी महाराज की पहचान कराकर सिजदा कराया।

Nijanand App

और लिख्या मेयराजनामें माहीं, जब हुआ मेयराज रसूल के तांई।
रसूल चले पांउं सिर दे, संग एक जबराईल ले।। ७ ।।

रसूल साहब को जो मेयराज हुआ (दर्शन हुआ) और श्री राजजी महाराज से जो बातें हुईं, वह सभी बातें मेयराजनामे में लिखी हैं। एक रसूल साहब ही जबराईल फरिश्ते के साथ अकसा मस्जिद (निराकार) मोह तत्व को उलंघकर आगे गए।

चौदे तबक की खबर भई, ला मकान हवा को कही।
निराकार कहिए सुंन, एही बेचून बेचगून।। ८ ।।

मेयराज में जाते समय रसूल साहब को पाताल से बैकुण्ठ की पूरी जानकारी मिली और आगे निराकार मोह तत्व जिसका रूप रंग नहीं है, जिसको वेद में निराकार, निरंजन, शून्य कहा है और कुरान में बेचून, बेचगून कहा है, उसकी पूरी पहचान हो गई।

छोड़ याको आगे को गए, नूर बनमें दाखिल भए।
जबराईल रह्या इन ठौर, ला मकान से ए मकान और।। ९ ।।

निराकार, शून्य को छोड़कर आगे गए और अक्षरधाम के वनों में प्रवेश किया। जबराईल फरिश्ता यहीं रुक गया। निराकार से यह अक्षरधाम अलग ही है, क्योंकि यह अखण्ड अविनाशी है।

आगे चल न सक्या क्योंही कर, नूर तजल्ली जलावे पर।
तहां पोहोंचे रसूल एक, तित अनेक इसारतें कही विवेक।। १० ।।

आगे जबराईल फरिश्ता नहीं जा सका। नूरतजल्ला की तजल्ली से पर जलने लगे। वहां से चलकर रसूल साहब मूल-मिलावा में श्री राजजी महाराज के पास पहुंचे और उनसे कई तरह से बातें इशारतों में हुईं।

लिख्या दरिया मीठा मिश्री से पाक, तित कह्या मुरग चोंचमें खाक।
गिरो फरिस्तों करी इसारत, खाक वजूद नूर खिलकत।। ११ ।।

मेयराजनामा में इशारतों में लिखा है कि खुदा ने मोमिनों को बादशाही (साहेबी) और इश्क की पहचान कराने के वास्ते फरामोशी का खेल दिखाया है। यह बताया कि खेल में मोमिनों को साहेबी और इश्क की पहचान होने से बड़ी लज्जत मिली और इसलिए दरिया इस संसार को मिश्री से मीठा कहा है। मोमिनों के लिए दूध से उज्ज्वल कहा है, क्योंकि उनके दिल में कोई संशय नहीं रहा और खेल को पाक कर जीवों को अखण्ड मुक्ति बहिश्तों में दी है। यही पाक और निर्मल होना है। दरिया के किनारे वृक्ष पर चोंच में खाक लेकर मुर्ग बैठा है, अर्थात् हुकम रूपी वृक्ष है। उसमें श्री श्यामाजी के दिल रूपी चोंच में पांच तत्व का शरीर है। यह खाक है। रूहें मोमिन हैं। नूर खिलकत ईश्वरीसृष्टि है। यदि श्यामाजी हुकम रूपी वृक्ष में बैठे, तो मोमिन और ईश्वरीसृष्टि ने भी मनुष्य तन धारण किया।

और कह्या देख दाहिंनी तरफ, मोतिन के मुंह पर कुलफ।
पूछा रसूलें कुलफ क्यों किया, तेरी उमतें गुनाह कर लिया।। १२ ।।

खुदा ने रसूल से कहा कि तुम अपने दाहिने हाथ की तरफ देखो, श्री श्यामाजी हैं। यह भी फरामोशी में हैं। खुदा ने इशारत करके कहा कि जो मोती बारह हजार रूहें हैं, वह फरामोशी में हैं। रसूल साहब ने कहा कि इनके मुंह पर ताला क्यों है? तो हुकम हुआ कि यह तेरी जमात जो बारह हजार हैं, इन्होंने बार-बार मना करने पर भी खेल देखने की इच्छा की, अतः उन पर इस गुनाह की फरामोशी का ताला है। रसूल साहब ने पूछा कि इनकी फरामोशी कैसे हटेगी?

Nijanand App

इनकी किल्ली तेरा दिल, खुले कुलफ जब आओ मिल।
सब हकीकत बीच किताब, पर पावे सोई जिन पर होए खिताब।। १३ ।।

खुदा ने रसूल साहब से कहा कि इनकी फरामोशी हटाने की चाबी (मारफत की वाणी) तुम्हारे दिल में है। उस ज्ञान से ताला खुलेगा। जब फरामोशी की नींद समाप्त हो जाएगी, तब सब मिलकर मेरे परमधाम में आओगे। मेयराजनामा किताब में यह बातें इशारतों में लिखी हैं। इनको खोलने का खिताब इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी को दिया है। वही खोल सकेंगे और कोई नहीं।

और कई बातें खुदाए से करी, लिए नब्बे हजार हरफ दिल धरी।
तीस हजार का हुआ हुकम, जाहेर करो दुनियां में तुम।। १४ ।।

रसूल साहब ने और कई बातें खुदा से की हैं। नब्बे हजार बातों को सुनकर अपने दिल में रखा। तीस हजार शरीयत के हरफ दुनियां में जाहिर करने का हुकम दिया।

और कहे जो तीस हजार, ए तुम पर रख्या अखत्यार।
बाकी रहे जो तीस हजार, आखिर इन पर है मुद्दार।। १५ ।।

दूसरे तीस हजार हरफ हकीकत के हैं। इनको खोलने का अधिकार तुमको देता हूं जिसे योग्य समझना, उसे देना। बाकी के तीस हजार मारफत के हरफ हैं। इनको दिल में छिपाकर रखना। कयामत का मुद्दा (आधार) मारफत की वाणी है, जिसको मैं वक्त आखिरत में स्वयं आकर खोलूंगा और सबका न्याय चुकाऊंगा।

सो कयामत पर बांधे निसान, एही सरत जब खुल्या कुरान।
अमेत सालूनमें एह बात, बिध बिध कर लिखी विख्यात।। १६ ।।

मारफत के हरफ खोलकर कयामत के जाहिर होने के निशान बांधे हैं। ग्यारहवीं सदी के आखिरं में आप श्री प्राणनाथजी ने कुरान के बातूनी भेद खोलकर जाहिर किए। अमेत सालून में यह बात अलग-अलग तरीके से विस्तार के साथ लिखी है।

रूहें कही बारे हजार, बुजरकी को नहीं सुमार।
जिनकी इच्छासों फरिस्ता होए, बड़ा सबन का कहिए सोए।। १७ ।।

बारह हजार मोमिन जो ब्रह्मसृष्टि हैं उनकी कुरान, हदीस, वेद, शास्त्रों में बड़ी महिमा गाई है। इनकी इच्छा से ही खेल बना है। इनकी पहचान के वास्ते वेद-कतेब के मायने खोलकर जागृत बुद्धि का फरिश्ता असराफील श्री प्राणनाथजी के साथ आया है, इसलिए असराफील फरिश्ते को सबसे बड़ा कहा है।

सो रूहें दरगाह के माहें, ऐसा नजीकी और कोई नाहें।
सो ए रूहें आदमी सकल, ए आदमी इनकी नकल।। १८ ।।

जो बारह हजार रूह मोमिन हैं, वह परमधाम के हैं। इनके समान श्री राजजी महाराज के नजदीक और कोई नहीं है। उन रूहों ने आकर यहां आदमी की जो शक्ल धारण की है, यह शक्ल परमधाम की परआतम की नकल है।

Nijanand App

और लिख्या अठारमें सिपारे, नूर बिलंदसे उतारे।
काम हाल करें नूर भरे, नूर ले दुनियां में विस्तरे।। १९ ।।

कुरान के अठारहवें सिपारे में लिखा है कि मोमिनों को खेल देखने के लिए खेल में उतारा है। मोमिनों की कहनी, करनी और रहनी इश्क रूपी नूर से भरी है और कुलजम सरूप की नूरी वाणी को लेकर दुनियां में जाहिर कर रहे हैं।

और जो अंधेरीसे पैदा भए, काफर नाम तिनोंके कहे।
फिरे मन के फिराए उलटे फेर, काम हाल उनों के अंधेर।। २० ।।

जो निराकार से पैदा हैं, कुरान में उनको काफिर कहा है। यह अपनी गुण, अंग, इन्द्रियों और मन के चक्कर में रात-दिन झूठी माया के लिए ही चक्कर काटते रहते हैं, इसलिए उनकी कहनी, करनी और रहनी सब अज्ञानता और अन्धकार की होती है।

और लिख्या वाही सिपारे, ए कुरान से न होए न्यारे।
फरिस्ते उतरे वास्ते कुरान, फरिस्तों पर आया फुरमान।। २१ ।।

कुरान के अठारहवें सिपारे में लिखा है कि ब्रह्मसृष्टि परमधाम की हैं। दूसरी ईश्वरीसृष्टि अक्षरधाम की हैं जो मोमिनों के पड़ोसी हैं और इनके साथ लगी रहती हैं, कुरान में चार तरह से ज्ञान के दर्जे शरीयत, तरीकत, हकीकत और मारफत लिखे हैं। शरीयत और तरीकत से जीवसृष्टि अलग नहीं होती। हकीकत से ईश्वरीसृष्टि अलग नहीं होती। ब्रह्मसृष्टि मारफत के ज्ञान को नहीं छोड़ती, इसलिए कुरान में, हकीकत का ज्ञान ईश्वरीसृष्टि पर आया है और मारफत के दर्जे से रूहें चलती हैं, लिखा है।

फौज फरिस्तों की भरी नूर, असराफील बजावे सूर।
और तीसमें सिपारे एह बयान, इन्ना इन्जुलना सूरत परवान।। २२ ।।

असराफील फरिश्ते ने कुरान, हदीस, शास्त्रों के गुझ (गुप्त) भेद तारतम वाणी से खोले हैं जिससे ईश्वरीसृष्टि तथा ब्रह्मसृष्टि इश्क और ईमान से भर गए। यह इन्ना इन्जुलना सूरत आम सिपारे में लिखा है।

फरिस्ते नजीकी जो बुजरक, साथें हुकम धनीका हक।
उतरे लैलत कदर के माहें, तीन तकरार रातके जाहें।। २३ ।।

अक्षर की आत्मा (ईश्वरीसृष्टि) को भी बुजरक कहा है, क्योंकि यह मोमिनों के नजदीकी हैं। यह भी लैल तुल कदर में मोमिनों के साथ उतरे हैं। जिस रात के तीन भाग बृज, रास और जागनी हैं। इन तीनों में ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि साथ रही हैं।

रूहों फरिस्तों वजूद धरे, जोस धनीका ले उतरे।
रात नूर भरी कही ए, जित रूहअल्ला के तन जो कहे।। २४ ।।

ब्रह्मसृष्टि परमधाम से और ईश्वरीसृष्टि अक्षरधाम से धनी के जोश की ताकत लेकर खेल में उतरे हैं इसलिए लैल तुल कदर रात को नूर से भरी रात कहा है। रात के तीसरे ब्रह्माण्ड में जो मोमिन आए हैं उनको रूह अल्लाह के नूर के अंगों की शोभा प्राप्त हुई, क्योंकि इनमें ही कुलजम सरूप की वाणी का पूरा ज्ञान है।

Nijanand App

एक तकरार हूद के घर, दूजे तकरार नूह किस्ती पर।
तीसरा तकरार ए जो फजर, जित रूहें फरिस्ते पैगंमर।। २५ ।।

पहले तकरार में बृज में नन्द बाबा के घर में आए। दूसरी बार श्री राजजी ने श्री कृष्णजी के नाम से अखण्ड वृन्दावन में योगमाया को प्रगट कर अखण्ड रास रचाया, जिसे कुरान में तूफान-ए-नूह करके लिखा है। तीसरे भाग में ज्ञान का सवेरा हुआ, जिसमें श्री श्यामा महारानी तारतम ज्ञान की कुंजी लाए। सम्वत् १७४८ तक श्री प्राणनाथजी महाराज ने मोमिनों की जागनी की और कुलजम सरूप की वाणी दी। जिसके प्रसार के लिए ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि पैगम्बर बनकर संसार को ज्ञान देने लगीं।

खैर उतरी महीने हजार, गिरो दोए भई सिरदार।
हुकम दिया सब इनके हाथ, भई सलामती इनके साथ।। २६ ।।

सम्वत् १६६४ से लेकर १७४८ तक श्री राजजी महाराज की मेहर और सम्वत् १६७८ से कुलजम सरूप की वाणी मिली। श्री राजजी महाराज ने रूह मोमिनों के हाथों से दुनियां के जीवों को अखण्ड मुक्ति प्रदान कर अखण्ड बहिश्तों के देने का काम मोमिनों के हाथ दिया। इन मोमिनों ने श्री राजजी महाराज की पहचान कराकर दुनियां वालों से आग, पानी, पत्थर की पूजा छुड़वाई। कर्मकाण्ड और शरीयत के बन्धन छुड़ाए, इसलिए अब सारी दुनियां इनके चरणों में झुकती है, क्योंकि इनके द्वारा उनको अखण्ड मुक्ति मिली।

आखिर मिलावा साहेब इत, रूहें फरिस्ते पैगंमर जित।
याही सिपारे छत्तीसमी सूरत, नीके कर तुम देखो तित।। २७ ।।

कुरान के तीसवें सिपारे की छत्तीसवीं सूरत को अच्छी तरह देखो। जहां पद्मावतीपुरी में इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज साक्षात् विराजमान हैं। वहीं पर बारह हजार मोमिन और चौबीस हजार ईश्वरीसृष्टि का मिलावा होना है और यहीं छत्तीस हजार सुन्दरसाथ दुनियां को पैगाम देंगे।

तीन सरूप खुदाएके कहे, तीनों तकरार रूहों बीच रहे।
एक बृज बाल दूजा रास किसोर, तीसरे बुढ़ापनमें भोर।। २८ ।।

आम सिपारे की इन्ना इन्जुलना की सूरत में खुदा के तीन स्वरूपों का वर्णन है और तीनों तकरार में वह ब्रह्मसृष्टि के साथ रहे। पहले बृज भूमि में बाल स्वरूप बनकर, दूसरी बार रास में किशोर स्वरूप और तीसरी बार बुढ़ापे की लीला की और सवेरे का ज्ञान किया।

दोए सरूप कहे मिने और, किल्ली कुरान ल्याए इन ठौर।
पांच सरूप मिले इत नूर, असलू बीज माहें अंकूर।। २९ ।।

जागनी के ब्रह्माण्ड में दो स्वरूपों में अलग-अलग आए। एक स्वरूप से रसूल साहब कुरान का ज्ञान लेकर आए। दूसरे स्वरूप से श्री श्यामा महारानी तारतम ज्ञान की कुंजी लेकर आए। अब पांचों स्वरूप बृज, रास, रसूल साहब, श्री श्यामा महारानी और श्री प्राणनाथजी महामति के तन में बैठे, जिनसे कुलजम सरूप की वाणी जाहिर हुई।

वजूद आदम का जैसा खाक, पांच पचीसों इनके पाक।
आठमें सिपारे एह बयान, लिख्या जाहेर बीच कुरान।। ३० ।।

आखिरी जमाने के खाविंद श्री प्राणनाथजी का स्वरूप मनुष्य जैसा है। इनका पांच तत्व का तन पच्चीस प्रकृतियां, सब गुण, अंग इन्द्रियां पाक-साफ हैं। कुरान के आठवें सिपारे में यह हकीकत लिखी है।

Nijanand App

एह दज्जाल जो अजाजील, सबमें दम इनका कमसील।
न करे सिजदा ऊपर आखिरी आदम, फेरया जाहेर कलाम अल्ला का हुकम।। ३१ ।।

अजाजील शैतान सबके अन्दर बैठकर खुदा के रास्ते से भटकाने का नीच काम करता है। आखिरी स्वरूप इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के ऊपरी वजूद को देखकर सिजदा नहीं बजाने देता। श्री प्राणनाथजी ने कयामत के समय खुदा के आने का पैगाम दिया। मक्का मदीने से चार वसीयतनामे भी लिखवाए। फिर भी काजियों ने वजूद को देखकर अल्लाह के हुकम वसीयतनामे को नहीं माना। पैगाम ठुकरा दिया।

माहें गया सबनको खाए, पढ़े ढूंढ़त जुदा ताए।
जाहेरियों न देवे देखाए, ऊपर माएने दिए भुलाए।। ३२ ।।

इसी तरह शैतान अबलीस सबके अन्दर बैठा ईमान छुड़वाता है और वश में करता है। पढ़े-लिखे लोग अपने अन्दर न देखकर बन्दगी के समय शैतान बाहर से आएगा, ऐसा समझते हैं। जाहिरी देखने वाले को अपने अन्दर का दज्जाल नजर नहीं आता और बाहरी मायनों से भूल में पड़ जाते हैं।

दाभ तूल-अर्ज माएने बातन, मुख आदम का गधी तन।
बातून माएने कही कयामत, देखसी खुले हकीकत।। ३३ ।।

कुरान में लिखा है कि आखिरी जमाने में दाभ तुल-अर्ज जानवर जमीन पर पैदा होगा। इसका अर्थ जाहिरी नहीं लेना। बातूनी अर्थ लेना है, क्योंकि उसका मुंह तो आदमी का होगा और शरीर में गधों के गुण अर्थात् न समाप्त होने वाला विकार भरा होगा। ऐसे जानवर को कुलजम सरूप की हकीकत की वाणी से ही समझा जा सकता है और तभी पता लगेगा कि कयामत के समय का यह निशान है।

दज्जाल एक आंख जाहेरी, कई विध तिनकों लानत करी।
नाहीं दज्जाल आंख बातूनी, जासों मारफत पाइए धनी।। ३४ ।।

दज्जाल अबलीस की एक आंख कही है, जिसे कई तरह से लानत लगी है। यह पांच तत्व के शरीर को सच्चा देखता है। आतम को नहीं देखने देता, इसलिए इसको गुनहगार लिखा है। इसने खुदा के स्वरूप श्री प्राणनाथजी की पहचान आत्मदृष्टि से नहीं की, इसलिए कुलजम सरूप की वाणी से वंचित रह गया।

खोलने न दे आंख अंदर, दिल पर दुस्मन जोरावर।
पातसाही करे सबोंके दिल पर, ए जो बैठा ले कुफर।। ३५ ।।

सब आदमियों के दिल को और गुण, अंग, इन्द्रियों को शैतान ने अन्दर बैठकर अपने वश में कर रखा है, इसलिए आत्मा की नजर को नहीं खुलने देता। यह शैतान झूठ, अज्ञान, काम, क्रोध, अहंकार, लोभ, मोह, मत्सर, सभी कुफ्रों की फौजों को लेकर दुनियां के लोगों के दिलों में बैठकर हुकूमत कर रहा है, जिससे जाहिरी मायने लेने वालों की आंखें नहीं खुलतीं।

दुस्मन राह मारे इन हाल, भूले देखें बाहेर दज्जाल।
छठे सिपारे लिख्या इन पर, ईसा मारसी इन काफर।। ३६ ।।

कुरान के छठे सिपारे में लिखा है कि ईसा रूह अल्लाह तारतम की वाणी से दज्जाल को मारेगा, क्योंकि यह दज्जाल सभी प्राणियों के अन्दर बैठकर ऐसी बुरी तरह से भटका देता है कि ईमान, प्रेम-भाव, भक्ति, शील, सन्तोष, गरीबी और नम्रता आने ही नहीं देता। इस तरह परमात्मा के रास्ते को रोककर बैठा है। भूले लोग दज्जाल की राह बाहर से देख रहे हैं।

Nijanand App

करसी राज चालीस बरस, सब जहान होसी एक रस।
साहेबी उमत की साल दस, पीछे चौदे तबकों बाढ़्यो जस।।३७।।

कुरान में लिखा है कि ईसा रूह अल्लाह दुनियां में आकर चालीस वर्ष तक बादशाही करेंगे। उनके दीन (धर्म) में निजानन्द सम्प्रदाय में सभी जाति वर्ण के लोग इमाम मेहेंदी श्री प्राणनाथजी के ऊपर ईमान लाकर एक रस हो जाएंगे। ग्यारहवीं सदी के आखिरी दस वर्षों में ब्रह्मसृष्टियों की साहेबी जाहिर होगी। उसके बाद बारहवीं सदी के तीस वर्ष सम्वत् १७४५ से १७७५ तक चौदह लोक के जीवों को कुलजम सरूप की वाणी पहुंचने से मोमिनों का यश बढ़ेगा। इस तरह से श्री श्यामा महारानी की चालीस वर्ष की बादशाही कही है।

अखंड भिस्त इत जाहेरी, होए रोसन सबमें विस्तरी।
दुनियां दौड़ मिली सब धाए, छूट गए वरन भेख ताए।।३८।।

अखण्ड परमधाम जो आज दिन तक किसी को पता नहीं था, की हकीकत कुलजम सरूप की वाणी से संसार में जाहिर हो गई। दुनियां के उत्तम जीव इस वाणी को सुनकर अखण्ड सुख की चाहना से दौड़-दौड़कर श्री पद्मावतीपुरी धाम में श्री प्राणनाथजी के दर्शन करते हैं और कुलजम सरूप की वाणी का ज्ञान प्राप्त करते हैं। तब उनका जाति, भेष, ऊंच-नीच की खींचतान की सब जाली छूट जाती है।

कह्यो न जाए धनीको विलास, पूरी साथ सकल की आस।
लीला विनोद करसी हांस, ए सुख उमत लेसी खास।।३९।।

परमधाम में श्री राजजी महाराज के सुख-विलास बेशुमार हैं जो कहने में नहीं आते। कुलजम सरूप की वाणी से यह सुख दिखाए और मोमिनों के खेल देखने की इच्छा को पूरा किया। कुरान और पुराण में जो भविष्यवाणी की थी कि आखिर के जमाने में बुध निष्कलंकजी आकर ब्रह्मानन्द लीला के हास्य और विनोद की बातें करेंगे जिससे खासल खास ब्रह्मसृष्टि आनन्द लेंगी।

ले दौड़े रोसनी दासानुदास, ले जाए पवन ज्यों उत्तम बास।
इस्क न खाने देवे स्वांस, ज्यों अगनी न छोड़े दाना घास।।४०।।

परमधाम के ज्ञान की रोशनी कुलजम सरूप की वाणी को जाहिर करने के लिए श्री प्राणनाथजी की अंगनाएं दौड़-दौड़कर देश-परदेश में पहुंचाएंगी। जिस तरह से सुगन्धि हवा के द्वारा फैलती है, इसी तरह से मोमिन सब जगह वाणी को फैलाएंगे और तब दुनियां में प्रेम और इश्क की लज्जत के सिवाय और कुछ नहीं दिखेगा। जिस तरह से अग्नि दाना और घास को जलाकर भस्म कर देती है, उसी तरह से कुलजम सरूप की वाणी से माया मोह भस्म हो जाएंगे।

जाए पड़े प्रेम के फांस, ज्यों सूके लोहू गल जाए मांस।
पीछे तीसों नूर बरसात, तिन आगूं आवसी पुल-सरात।।४१।।

जिस तरह से अग्नि में जलने के बाद शरीर सिकुड़ जाता है, चल-फिर नहीं सकता है, उसी तरह से जिसकी आतम प्रेम की अग्नि में जलती है, वह माया के सुख-स्वाद लेने कहीं जाती नहीं है। एक धाम धनी के प्रेम में ही मग्न रहती है। सम्वत् १७४५ में ग्यारहवीं सदी पूरी हुई। उसके तीस वर्षों तक कुलजम सरूप की वाणी गांव-गांव में जाहिर हुई। इसके बाद सत्तर वर्ष शरीयत के रास्ते पर चलने वालों के लिखे हैं जो १७७५ से १८४५ तक हुए।

Nijanand App

सत्तर बरस लों आग जलाए, तब फरिस्ते दिए चलाए।
अजाजील विरहा आग जल, पीछे असराफीलें किए निरमल।। ४२ ।।

श्रीजी के अदृश्य होने पर सच्चे ज्ञान के आशिक रूहें विरह की अग्नि में पश्चाताप करते हुए जले। धिक्कार है, हमारे जीवन पर कि धाम धनी आए और हमने पहचान नहीं की। इसके बाद अजाजील ने भी विरह की अग्नि में जलकर पश्चाताप किया और फिर असराफील की जागृत बुद्धि की वाणी कुलजम सरूप ने निर्मल कर दिया।

आगे असराफीलें कायम किए, तेरही में नूर नजर तले लिए।
नूर नजर तले हुए सुध, आए माहें जाग्रत बुध।। ४३ ।।

इसके बाद असराफील (जागृत बुद्धि के फरिश्ते) ने तेरहवीं सदी में अक्षर की नजर योगमाया में सभी को कुलजम सरूप की वाणी से पाक करके बहिश्तों को कायम किया।

नतीजा पावे सब कोए, सो हुकम हाथ छत्रसाल के होए।। ४४ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज के हुकम से महाराजा छत्रसालजी सभी को उनके कर्मों के अनुसार बहिश्तें कायम कर अखण्ड मुक्ति प्रदान करेंगे।

|| प्रकरण || ६ || चौपाई || १९१ ||

हुइयां सोभा तेरी सोहागनियां, इन जुबां न जाए बरनियां।
ए जो मिलावा माननियां, ताए बड़ाइयां दैयां धनियां।। १ ।।

स्वामी श्री प्राणनाथजी महाराज कहते हैं, हे शाकुंडल सखी! (महाराजा छत्रसाल) खेल से परमधाम तक तेरी शोभा होनी है जो इस जबान से वर्णन नहीं हो सकती। यह बारह हजार मोमिनों के अन्दर तुम्हें श्री राजजी महाराज ने बड़ी साहेबी दी है।

कदम हादी मेरे सिर पर, जो सब दीनों का पैगंमर।
हजरत ईसा रूहअल्ला नाम, कहूंगी जो कह्या अल्ला कलाम।। २ ।।

महाराजा श्री छत्रसालजी कहते हैं कि मेरे सिर पर हादी श्री प्राणनाथजी के चरण कमलों की मेहर साक्षात् है जो सभी धर्मों के धर्मग्रन्थों से प्रमाण देकर पैगाम देते हैं। रूह अल्लाह श्री श्यामा महारानी जी (श्री देवचन्दजी) के तारतम ज्ञान से और रसूल साहब के कुरान से गवाही देकर कहता हूं।

रसूल रूहअल्ला और इमाम, इन तीनों मिल मोको दई ताम।
मैं सिर पर ए लिए कलाम, आए कुंजी बका की करी इनाम।। ३ ।।

रसूल साहब, रूह अल्लाह श्यामा महारानी और इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज तीनों ने मिलकर कुलजम सरूप की अखण्ड वाणी (आत्मा का आहार) को दिया। इन तीनों स्वरूपों के वचनों को मैंने सिर पर धारण किया, जिन्होंने खेल में आकर मुझे तारतम ज्ञान की कुंजी बख्शीश की।

ए साहेदी सिपारे सूरत, जो उतरियां अल्ला आयत।
या तो हदीसें कहूं महंमद, या बिन और न कहूं सब्द।। ४ ।।

यह गवाही कुरान के सिपारों और सूरतों में लिखी है। खुदा की तरफ से जो आयतें आई हैं या मुहम्मद साहब ने जो हदीस में कहा है इनके प्रमाण के बिना और कोई शब्द नहीं कहूंगी।

Nijanand App

सत्तर बरस लों आग जलाए, तब फरिस्ते दिए चलाए।
अजाजील विरहा आग जल, पीछे असराफीलें किए निरमल।।४२ ।।

श्रीजी के अदृश्य होने पर सच्चे ज्ञान के आशिक रूहें विरह की अग्नि में पश्चाताप करते हुए जले। धिक्कार है, हमारे जीवन पर कि धाम धनी आए और हमने पहचान नहीं की। इसके बाद अजाजील ने भी विरह की अग्नि में जलकर पश्चाताप किया और फिर असराफील की जागृत बुद्धि की वाणी कुल्जम सरूप ने निर्मल कर दिया।

आगे असराफीलें कायम किए, तेरही में नूर नजर तले लिए।
नूर नजर तले हुए सुध, आए माहें जाग्रत बुध।।४३ ।।

इसके बाद असराफील (जागृत बुद्धि के फरिश्ते) ने तेरहवीं सदी में अक्षर की नजर योगमाया में सभी को कुल्जम सरूप की वाणी से पाक करके बहिश्तों को कायम किया।

नतीजा पावे सब कोए, सो हुकम हाथ छत्रसाल के होए।।४४ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज के हुकम से महाराजा छत्रसालजी सभी को उनके कर्मों के अनुसार बहिश्तें कायम कर अखण्ड मुक्ति प्रदान करेंगे।

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। १९१ ।।

हुइयां सोभा तेरी सोहागनियां, इन जुबां न जाए बरनियां।
ए जो मिलावा माननियां, ताए बड़ाइयां दैयां धनियां।। १ ।।

स्वामी श्री प्राणनाथजी महाराज कहते हैं, हे शाकुंडल सखी! (महाराजा छत्रसाल) खेल से परमधाम तक तेरी शोभा होनी है जो इस जबान से वर्णन नहीं हो सकती। यह बारह हजार मोमिनों के अन्दर तुम्हें श्री राजजी महाराज ने बड़ी साहेबी दी है।

कदम हादी मेरे सिर पर, जो सब दीनों का पैगंमर।
हजरत ईसा रूहअल्ला नाम, कहूंगी जो कह्या अल्ला कलाम।। २ ।।

महाराजा श्री छत्रसालजी कहते हैं कि मेरे सिर पर हादी श्री प्राणनाथजी के चरण कमलों की मेहर साक्षात् है जो सभी धर्मों के धर्मग्रन्थों से प्रमाण देकर पैगाम देते हैं। रूह अल्लाह श्री श्यामा महारानी जी (श्री देवचन्दजी) के तारतम ज्ञान से और रसूल साहब के कुरान से गवाही देकर कहता हूं।

रसूल रूहअल्ला और इमाम, इन तीनों मिल मोको दई ताम।
मैं सिर पर ए लिए कलाम, आए कुंजी बका की करी इनाम।। ३ ।।

रसूल साहब, रूह अल्लाह श्यामा महारानी और इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज तीनों ने मिलकर कुलजम सरूप की अखण्ड वाणी (आत्मा का आहार) को दिया। इन तीनों स्वरूपों के वचनों को मैंने सिर पर धारण किया, जिन्होंने खेल में आकर मुझे तारतम ज्ञान की कुंजी बख्शीश की।

ए साहेदी सिपारे सूरत, जो उतरियां अल्ला आयत।
या तो हदीसें कहूं महंमद, या बिन और न कहूं सब्द।। ४ ।।

यह गवाही कुरान के सिपारों और सूरतों में लिखी है। खुदा की तरफ से जो आयतें आई हैं या मुहम्मद साहब ने जो हदीस में कहा है इनके प्रमाण के बिना और कोई शब्द नहीं कहूंगी।

Nijanand App

बावन मसले जो कहे अरकान, जो बजाए ल्यावे मुसलमान।
तिनका कौल था एते दिन, सांचे पाक दिल किए जिन।। ५ ।।

जो सच्चे दिल वाले मुसलमान बावन अंग धोकर शरीयत की नमाज पढ़ते हैं। कयामत के जाहिर होने पर शरीयत की नमाज बन्द करने का हुकम है।

ए बंदगी कही सरीयत, याको फल पावें खुले हकीकत।
जब खोले दरवाजे मारफत, पोहोंची सरत आई कयामत।। ६ ।।

यही शरीयत की बन्दगी कही है, जिसका फल उनको हकीकत के ज्ञान से मिलेगा। रसूल साहब ने जो कयामत का दिन बताया है, वह समय आ गया है और कुलजम सरूप की वाणी ने मारफत के सभी भेद खोल दिए हैं।

और लिख्या सिपारे पांचमें, सो नीके कर देखो तुमें।
कृपा भई हिंदुओं पर घनी, जित आखिर को आए धनी।। ७ ।।

कुरान के पांचवें सिपारे में यह बातें इशारतों में लिखी हैं, इसलिए आत्मदृष्टि से देखो। तब तुम्हें यह जानकारी होगी कि श्री राजजी महाराज की विशेष कृपा हिन्दुओं पर हुई है कि आखिर को धनी ने आकर हिन्दू तन धारण किया है।

सब पैगंमर आए इत, कह्या सब मुलक नबुवत।
जो कोई आया पैगंमर, सो सारे जहूदों के घर।। ८ ।।

खुदा का पैगाम देने वाले सभी पैगम्बर हिन्दुओं में आए। उन सबकी शक्तियां श्री प्राणनाथजी के तन में आईं, तो सारा मुल्क पैगम्बरों का हो गया।

ज्यों अव्वल त्योंहीं आखिर, सोभा सारी महंमद पर।
ए तुम देखो नीके कर, सारे कुरान में एही खबर।। ९ ।।

जैसे सभी पैगम्बर हिन्दुओं में ही आए थे, वैसे ही आखिर में भी सभी पैगम्बर हिन्दुओं में आए हैं। पूरे कुरान में सब जगह यही खबर है कि इन सब पैगम्बरों की शोभा, बरकत, सिफत, शक्ति, इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी में आ गई है।

लोक ढूंढ़ें माहें मुसलमान, सूझत नाहीं जो लिख्या कुरान।
अव्वल सिपारे एह सुध दई, सो मैं जाहेर करहों सही।। १० ।।

यह बात कुरान के पहले सिपारे में लिखी है जो मैं आपको जानकारी दे रही हूं। जाहिरी मुसल्मानों को यह बात समझ में नहीं आ रही है। वह अभी भी अपनी कौम में आने की इन्तजार कर रहे हैं।

हरफ अलफ लाम और मीम, ए तीनों एक कहे अजीम।
जिन न जान्या एह जहूर, सो काट कुरानसे किए दूर।। ११ ।।

कुरान के पहले शुरू में अलफ, लाम और मीम तीन अक्षर लिखे हैं। यह तीनों एक ही हैं और अखण्ड हैं और बड़े रहस्य का अर्थ रखते हैं जिसे कोई नहीं जानता। जाहिरी मुसलमानों ने इसकी पहचान न होने के कारण कुरान से हटा ही दिया है।

याको जाने खुदा एक, ऐसो बांध्यो बंध विवेक।
कलाम अल्लाएं ऐसी कही, आलम आरिफकी हुज्जत ना रही।। १२ ।।

कुरान (हदीस) में कहा है कि इन तीन अक्षरों का भेद एक खुदा ही जानता है, इसलिए पढ़े-लिखे लोगों का इस पर दावा नहीं है।

Nijanand App

और लिख्या है बीच कुरान, दूसरे सिपारेमें एह बयान।
इनका जित खुल्या है द्वार, तिनका दिल दे करो विचार।। १३ ।।

कुरान के दूसरे सिपारे में लिखा है कि इन तीनों हरफों का भेद काजी खोलेगा। वह खुद खुदा होगा। इसका दिल से अच्छी तरह से विचार करो।

ए महंमद पर दिया खिताब, माएने खोले सब किताब।
सो माएने रुजू उमतसें होए, खासी उमत कहिए सोए।। १४ ।।

इन तीनों हरफों का भेद श्री राजजी महाराज ने इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी को दिया है, इसलिए अब श्री प्राणनाथजी महाराज कुरान, हदीस, वेद, शास्त्र सब किताबों के गुझ (गुह्य) भेद खोलकर जाहिर करते हैं। इससे मोमिनों को पहचान होती है, इसलिए कि खासल खास ब्रह्मसृष्टियां आई हैं। वह अपने धनी के स्वरूप को पहचान रही हैं।

महंमदकी इनपे पेहेचान, भली भांत समझें कुरान।
जैसे पेहेचानने का हक, इन उमतको नहीं कोई सक।। १५ ।।

कुरान, हदीस और सब किताबों के छिपे रहस्य समझकर ही श्री प्राणनाथजी की पहचान मोमिन करते हैं। परमधाम में विराजमान श्री राजजी महाराज के स्वरूप को मोमिन जानते हैं। उसी रूप में मोमिन श्री प्राणनाथजी को मानते हैं और इस बात में उनको कोई संशय नहीं है।

जिनको किताब दई तौरेत, सब दुनियां को एही सुख देत।
माहें लिख्या सिपारे उन्तीस, जाए देवें खुदा तासों कैसी रीस।। १६ ।।

श्री राजजी महाराज ने हकी स्वरूप स्वामी श्री प्राणनाथजी के कलस की वाणी को मोमिन पढ़कर निःसन्देह होकर पहचान करें कि यही दुनियां को अखण्ड सुख देने वाले हैं। कुरान के उन्तीसवें सिपारे में लिखा है कि खुदा जिस पर मेहरबानी करे, उसकी कौन रीस करे (मुकाबला करे)?

आए ईसा रूहअल्ला पैगंमर, गिरो जहूदों बनी असराईल पर।
जो गिरो बनी असराईलकी भई, सो औलाद याकूबकी कही।। १७ ।।

ईसा रूह अल्लाह (देवचन्द्र जी महाराज) के दो बेटे एक बनी इस्माईल (बिहारीजी) और दूसरे बनी असराईल (मेहराज ठाकुर) हिन्दुओं में आए। कुरान में इनको इस्माईल और इसहाक करके लिखा है। इसहाक की औलाद याकूब का खिताब मेहराज ठाकुर को मिला, इसलिए मोमिन को कुरान में याकूब की औलाद लिखा है।

हुए सामिल रसूल महंमद, रूहअल्ला इस्म हुआ अहमद।
संग रोसन तौरेत कुरान, सो राम्या जाए न हुई पेहेचान।। १८ ।।

रसूल साहब ईसा रूह अल्लाह (श्यामा महारानी) के अन्दर आकर मिले, तो ईसा रूह अल्लाह श्यामा महारानी अहमद हुए। इनके ही दूसरे जामे का नाम प्राणनाथजी है जिनके द्वारा कलस (तौरेत) और सनंध (कुरान) की नई किताबें जाहिर हुई हैं। इनके स्वरूप को जिसने नहीं पहचाना, वही रद्द हो गया।

भए जहूदों के बड़े बखत, पाई बुजरकी आए आखिरत।
इत जाहेर हुए इमाम हक, सोई काफर जो ल्यावे सक।। १९ ।।

हिन्दू बड़े भाग्यशाली हुए कि आखिरी जमाने के खाविंद श्री प्राणनाथजी महाराज हिन्दुओं में आए और यही इमाम मेंहेंदी के रूप में जाहिर हुए। इनके ऊपर जो संशय लाता है, वह काफिर है, बेईमान है।

Nijanand App

उल्लू न चाहे ऊग्या सूर, जिन अंधों का दुस्मन नूर।
ए सुन वाका जो न ल्यावे ईमान, सोई चमगीदड़ उल्लू जान।। २० ।।

उल्लू (घुवड) पक्षी को रात में दिखाई देता है। वह नहीं चाहता कि सूर्य निकले, क्योंकि सूर्य के प्रकाश से यह अन्धा हो जाता है। श्री प्राणनाथजी की कुलजम सरूप की वाणी पर जो ईमान नहीं लाते हैं, उनको ही उल्लू (घुवड) और चमगादड़ समझना, क्योंकि यह वाणी सूर्य के समान अज्ञानता का अन्धकार मिटाकर उजाला करने वाली है।

महंमद के कहावें मुसलमान, ए जो जाहेरी लिए ईमान।
जो तौहीदका कलमा कहे, उमत सरीकी लिए रहे।। २१ ।।

रसूल साहब के मजहब को जाहेरी मायनों से मानने वाले लोग अपने को ईमानदार कहते हैं। यदि यह सच्चे होकर एक पारब्रह्म के वचनों को कहें, तो यह मोमिनों का दावा कर सकते हैं।

जो होए इस्क आकीन साबित, तो भी झूठी ए सरीकत।
सिरे न पोहोंच्या इनका काम, ऐसा लिख्या माहें अल्ला कलाम।। २२ ।।

यदि इन मुसलमानों में इश्क और ईमान सच्चा भी साबित हो जाए तो भी यह मोमिनों की बराबरी नहीं कर सकते। मोमिनों ने दुनियां में श्री राजजी के स्वरूप को पहचान कर कुर्बानी दी है। वैसी शरीयत वाले कुरबानी नहीं दे सकते। ऐसा कुरान में लिखा है।

सिपारे तीसरेमें कही, पांच वज्हे की पैदास भई।
दुनियां हुई केहेते कलमें कुंन, एक एक हाथ एक दो हाथन।। २३ ।।

कुरान के तीसरे सिपारे में पांच तरह की पैदाइश का वर्णन है। दुनियां कुंन शब्द कहने से पैदा हुई। खुदा ने रसूल साहब को एक हाथ से कहा है और उनकी दो सूरतें मलकी और हकी को दो हाथ से कहा है।

एक सरूप कह्या एक हाथ, दो हाथ सरूप मिले दो साथ।
रसूल रूहअल्ला और इमाम, एक सरूप तीनों बिध नाम।। २४ ।।

एक स्वरूप रसूल साहब को एक हाथ कहा है। यह दो स्वरूप मलकी और हकी ने एक तन में बैठकर काम किया। यह दो हाथ कहलाए। रसूल साहब एक हाथ (अकेले) ने काम किया। रूह अल्लाह और इमाम मेंहेंदी दोनों ने एक तन मेहराज ठाकुर के अन्दर काम किया। इन्हें दो हाथ से पैदा हुए कहा है। खुदा के हुकम को बजाने वाले एक स्वरूप के तीन नाम हैं।

एक गिरो आई मूलथें कही, सो मौजूद रूहें दरगाह की सही।
दूजी गिरो कही खिलकत और, सो मलायक मुतकी नूर ठौर।। २५ ।।

एक परमधाम से आई मोमिनों की जमात है। दूसरी जमात फरिश्तों की ईश्वरीसृष्टि बताई हैं जो अक्षरधाम की बन्दगी करने वाले हैं और अक्षरधाम के रहने वाले हैं।

तीसमें सिपारे लिखी ए बिध, सो क्यों पावे बिना हिरदे सुध।
नूह नबी के बेटे तीन, तिनमें स्याम सलाम अमीन।। २६ ।।

कुरान के तीसवें सिपारे में यह बात लिखी है, परन्तु बिना जागृत बुद्धि के इसके छिपे रहस्यों की जानकारी नहीं होती। यहां नूह नबी के तीन लड़कों का बयान लिखा है। उनमें स्याम हिन्दू मुसलमानों को खुदा के सही स्वरूप की पहचान कराकर अखण्ड मुक्ति देने वाले हैं।

Nijanand App

मुस्लिम किस्ती पार पोहोंचाए, काफर तोफानें दिए डुबाए।
ए तीनों मिल दुनी रची और, सो तीनों आए जुदे जुदे ठौर।। २७ ।।

श्री कृष्ण "स्याम" ने मोमिनों को योगमाया के ब्रह्माण्ड नित्य वृन्दावन में पहुंचाकर सारे ब्रह्माण्ड का प्रलय कर दिया। इसके बाद कुरान में लिखा है कि नूह नबी के तीन बेटे स्याम, हाम और याफिस ने नई दुनियां बनाई और तीनों अलग-अलग ठिकाने आए।

चांद कह्या आरब फारस, रोसन स्याम लियो बड़ो जस।
चांद आरब दूजा कौन होए, इत महंमद बिना न पाइए कोए।। २८ ।।

अरब और ईरान में चन्द्रमा के समान रोशनी करने वाले स्याम श्री कृष्णजी को कहा है, जिसने मुहम्मद के तन में बैठकर कुरान का ज्ञान दिया और बुतपरस्ती छुड़ाकर एक दीन कायम किया। जिसमें उनको बड़ा यश मिला। मुहम्मद (श्री कृष्णजी) के बिना अरब देश का चन्द्रमा और कौन हो सकता है?

पेहेले किस्ती दई पोहोंचाए, इत फुरमान ल्याए रसूल केहेलाए।
हिसाम चांद कह्या हिंदुस्तान, ए जो पूज्या हिंदुओं साहेब जान।। २९ ।।

पहले श्री कृष्णजी ने मोमिनों को योगमाया की नाव से पार कराके योगमाया के ब्रह्माण्ड में ले जाकर संसार से पार किया और दूसरी बार वही कुरान का ज्ञान लाकर रसूल कहलाए। हिसाम को हिन्दुस्तान में प्रकाश करने वाला चन्द्रमा कहा है। हिन्दू लोगों ने इसे व्यास के अवतार को परमात्मा समझकर पूजा की, क्योंकि इन्होंने हिन्दुस्तान में कर्मकाण्ड से धर्म चलाए।

याफिस आया तुरकस्थान, तो न सक्या कोई पेहेचान।
आजूज माजूज औलाद इन, तीन फौजां होए खासी सबन।। ३० ।।

नूह का तीसरा बेटा याफिस, (कल्याणजी) तुर्किस्तान में आया जिसको कोई पहचान नहीं सका। आजूज-माजूज (दिन, रात) याफिस की औलाद हैं। यह तूला, ताबा और साबा अर्थात् प्रातः, दोपहर और सायं की फौजों से सारी दुनियां को खा जाएंगे, ऐसा लिखा है।

तीसरे सिपारे लिखे ए बोल, पढ़े न देखें दिल आंखें खोल।
नूह का बेटा बुजरक स्याम, जाको दोनों जहान में रोसन नाम।। ३१ ।।

कुरान के तीसरे सिपारे में यह हकीकत लिखी है जिसको पढ़े-लिखे लोग आत्म-दृष्टि से नहीं समझते। वासुदेव के लड़के श्री कृष्णजी की बड़ी महिमा है, जिसको हिन्दू लोग श्री कृष्णजी के नाम से और मुसलमान रसूल साहब के नाम से पूजते हैं।

स्याम ल्याए चीजें दोए, चौदे तबकों न पाइए सोए।
एक देवे अल्ला की ग्वाही, दूजी करे बयान हुकम चलाई।। ३२ ।।

(श्री कृष्णजी) मुहम्मद साहब जो दो चीजें लाए हैं वह चौदह तबक में नहीं हैं। उन्होंने रसूल साहब के तन में आकर खुदा एक है, की गवाही दी और यह कहा कि आखिर समय में खुदा आने वाला है। दूसरे खुदा के हुकम से शरीयत का झण्डा खड़ा किया।

Nijanand App

पूछे रसूल सों दोए सुकन, सो साहेब ने किए रोसन।
ए दोनों बात खुदाए से होए, इनको पूजेंगे सब कोए।। ३३ ।।

रसूल साहब के यारों ने यह दो बातें पूछीं कि कयामत कब होगी और बहिश्तें कैसे मिलेंगी? रसूल साहब ने उत्तर दिया कि खुदा खुद इमाम मेंहेंदी बनकर आएंगे। तभी कयामत होगी और दुनियां को बहिश्तें मिलेंगी, इसलिए यह दोनों खुदा से होने वाली हैं। यह होने पर दुनियां उन्हें पूजेगी।

तोफतल कलाम जो है किताब, ए लिख्या तिस बीच आठमें बाब।
उमतें सब पैगंमरों की मिली, सब दिलों आग दोजख की जली।। ३४ ।।

तोफतल कलाम नाम की जो किताब है, उसके आठवें प्रकरण में लिखा है कि जब इमाम प्रगट होंगे, उस समय सभी पैगम्बर, गुरु, धर्माचार्य तथा उनके चेले चिन्ता करने लगेंगे और उनके दिलों में दोजख की आग जलेगी।

जलती सब पैंगंमरोंपे गई, पर ठंढ़क दारू काहू थें न भई।
हाथ झटक के कह्या यों कर, हम सब सरमिंदे पैगंमर।। ३५ ।।

पश्चाताप की अग्नि में जलती हुई दुनियां अपने गुरुओं के पास जाएगी और कहेगी कि आपने हमको स्वर्ग (बैकुण्ठ) और निराकार तक का ही ज्ञान दिया जो अब नष्ट होने वाला है। आप लोगों ने हमें ब्रह्मज्ञान नहीं दिया जिससे हमें शान्ति मिलती। तब सभी धर्माचार्य झटककर कहेंगे कि हम क्या करें? हम आज शर्मसार हैं।

सब दुनियां को एही दिया जवाब, महंमद इनको लेसी सवाब।
सब दुनियां जलती महंमद पे आई, दोजख आग रसूलें छुड़ाई।। ३६ ।।

सब दुनियां वालों को उनके गुरुओं ने यही जवाब दिया और कहा कि इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ही कुलजम सरूप की वाणी देकर सबको भव से पार करेंगे, इसलिए तुम उन्हीं के पास जाओ। पश्चाताप की अग्नि से जलती हुई दुनियां श्री प्राणनाथजी के चरणों में आई। तब रसूल साहब की आखिरी हकी सूरत श्री प्राणनाथजी ने उनको दोजख की अग्नि में जलने से बचाया।

सबोंको सुख महंमदें दिए, भिस्तमें नूर नजर तले लिए।
कहे छत्ता अपनायत कर, जिन कोई भूलो ए अवसर।। ३७ ।।

श्री प्राणनाथजी ने कुलजम सरूप की वाणी से निर्मल कर अखण्ड सुख दिए। बाद में अक्षरब्रह्म की नजर योगमाया में बहिश्तों में अखण्ड करेंगे। महाराजा छत्रसाल सबको अपना समझकर कहते हैं कि भाइयो! सुन्दर अवसर आया है। हाथ से मत जाने दो।

हुई फजर मिट गई वाद, भूले बड़ो करसी पछताप।। ३८ ।।

अब अज्ञान का अन्धकार मिट गया है और कुलजम सरूप की वाणी के ज्ञान का सवेरा हो गया है। अब जो भूलेगा, उसको बड़ा पश्चाताप करना पड़ेगा।

।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। २२९ ।।

लिख्या सिपारे आखिरे सात दसमी सूरत, रोसन कुरान लिखी हकीकत।
मोमिनों का लिख्या मजकूर, सो ए कहूं सब देखो जहूर।। १ ।।

कुरान के आखिरी तीसवें सिपारे की सत्रहवीं सूरत में मोमिनों की बात स्पष्ट लिखी है, जो मैं कहती हूं, दिल की आंखों से देखो।

Nijanand App

पूछे रसूल सों दोए सुकन, सो साहेब ने किए रोसन।
ए दोनों बात खुदाए से होए, इनको पूजेंगे सब कोए।। ३३ ।।

रसूल साहब के यारों ने यह दो बातें पूछीं कि कयामत कब होगी और बहिश्तें कैसे मिलेंगी? रसूल साहब ने उत्तर दिया कि खुदा खुद इमाम मेंहेंदी बनकर आएंगे। तभी कयामत होगी और दुनियां को बहिश्तें मिलेंगी, इसलिए यह दोनों खुदा से होने वाली हैं। यह होने पर दुनियां उन्हें पूजेगी।

तोफतल कलाम जो है किताब, ए लिख्या तिस बीच आठमें बाब।
उमतें सब पैगंमरों की मिली, सब दिलों आग दोजख की जली।। ३४ ।।

तोफतल कलाम नाम की जो किताब है, उसके आठवें प्रकरण में लिखा है कि जब इमाम प्रगट होंगे, उस समय सभी पैगम्बर, गुरु, धर्माचार्य तथा उनके चेले चिन्ता करने लगेंगे और उनके दिलों में दोजख की आग जलेगी।

जलती सब पैगंमरोंपे गई, पर ठंढ़क दारू काहू थें न भई।
हाथ झटक के कह्या यों कर, हम सब सरमिंदे पैगंमर।। ३५ ।।

पश्चाताप की अग्नि में जलती हुई दुनियां अपने गुरुओं के पास जाएगी और कहेगी कि आपने हमको स्वर्ग (बैकुण्ठ) और निराकार तक का ही ज्ञान दिया जो अब नष्ट होने वाला है। आप लोगों ने हमें ब्रह्मज्ञान नहीं दिया जिससे हमें शान्ति मिलती। तब सभी धर्माचार्य झटककर कहेंगे कि हम क्या करें? हम आज शर्मसार हैं।

सब दुनियां को एही दिया जवाब, महंमद इनको लेसी सवाब।
सब दुनियां जलती महंमद पे आई, दोजख आग रसूलें छुड़ाई।। ३६ ।।

सब दुनियां वालों को उनके गुरुओं ने यही जवाब दिया और कहा कि इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ही कुलजम सरूप की वाणी देकर सबको भव से पार करेंगे, इसलिए तुम उन्हीं के पास जाओ। पश्चाताप की अग्नि से जलती हुई दुनियां श्री प्राणनाथजी के चरणों में आई। तब रसूल साहब की आखिरी हकी सूरत श्री प्राणनाथजी ने उनको दोजख की अग्नि में जलने से बचाया।

सबोंको सुख महंमदें दिए, भिस्तमें नूर नजर तले लिए।
कहे छत्ता अपनायत कर, जिन कोई भूलो ए अवसर।। ३७ ।।

श्री प्राणनाथजी ने कुलजम सरूप की वाणी से निर्मल कर अखण्ड सुख दिए। बाद में अक्षरब्रह्म की नजर योगमाया में बहिश्तों में अखण्ड करेंगे। महाराजा छत्रसाल सबको अपना समझकर कहते हैं कि भाइयो! सुन्दर अवसर आया है। हाथ से मत जाने दो।

हुई फजर मिट गई वाद, भूले बड़ो करसी पछताप।। ३८ ।।

अब अज्ञान का अन्धकार मिट गया है और कुलजम सरूप की वाणी के ज्ञान का सवेरा हो गया है। अब जो भूलेगा, उसको बड़ा पश्चाताप करना पड़ेगा।

।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। २२९ ।।

लिख्या सिपारे आखिरे सात दसमी सूरत, रोसन कुरान लिखी हकीकत।
मोमिनों का लिख्या मजकूर, सो ए कहूं सब देखो जहूर।। १ ।।

कुरान के आखिरी तीसवें सिपारे की सत्रहवीं सूरत में मोमिनों की बात स्पष्ट लिखी है, जो मैं कहती हूं, दिल की आंखों से देखो।

Nijanand App

पाई खलासी मोमिन, हुआ मकसूद सबन।
ऐसे होवे जो कोई, सांची बंदगीमें सोई।। २ ।।

कुलजम सरूप की वाणी से मोमिनों को माया के बन्धनों से छुटकारा मिला और उनकी समस्त मनोकामनाएं पूरी हुईं। इस तरह का जो अमल करे वही सच्ची बन्दगी करने वाला मोमिन है।

रखो खुदाए का डर, बंदे सिजदे पर नजर।
किया कबूल एह जहूर, दरगाह साहेब के हजूर।। ३ ।।

कुरान में लिखा है कि सिजदा करने पर खुदा से डरते रहो। इस तरह से श्री राजजी से डरकर जो बन्दगी करेगा, वह परमधाम पहुंचकर श्री राजजी के सामने जाएगा।

पैगंमर हजरत, निमाज अदा इन सरत।
ऊपर से आयत आई, तब नजर आसमान से फिराई।। ४ ।।

रसूल साहब नमाज पढ़कर एकान्त में बैठकर आसमान की तरफ देखकर दुआ मांगते थे। तुरन्त ही खुदा की तरफ से आयत आई। हे मुहम्मद! ऊपर क्या देखता है? अपने दिल में देखो और रूह से सिजदा बजाओ। ऐसी आयत आने पर आसमान से रसूल ने नजर उठाकर रूह से सिजदा बजाना शुरू किया।

किया सिजदा मूल वतन, जो दरगाह बड़ी है रोसन।
यों कह्या बीच लवाब, ए हमेसां मूल सवाब।। ५ ।।

अब वह परमधाम (मूल-मिलावा) का चितवन करके अपनी रूह से सिजदा करने लगे, जिससे उन्हें परमधाम के मूल सुखों का लाभ मिला। यह बात लवाब नाम की किताब में लिखी है।

जो बका साहेब का घर, रखो दीदे धनी नजर।
ए सिजदा तब पाइए, खूबी घर की देखी चाहिए।। ६ ।।

अखण्ड परमधाम श्री राजजी महाराज का घर है, इसलिए श्री राजजी के चरणों में सदा अपनी सुरता लगाकर रखो (वाणी में भी कहा है सुरता एक ही राखिए, मूल मिलावा माहें)। जब तुम्हें घर परमधाम देखने की चाहना पैदा होगी, तभी तुम इस तरह से सिजदा करके सुख प्राप्त करोगे।

जब ए हुई खुसाली, तब भूले सिजदे खाली।
निमाज के बखत दिल धर, छूटी दाएं बाएं नजर।। ७ ।।

जब इस तरह से सिजदा करके चितवन करके अखण्ड सुख मिलेगा, तब पानी, पत्थर, आग को पूजने के जब सिजदे समाप्त कर दोगे। मुसलमानों से भी कहा है कि नमाज के वक्त अपनी सुरता को दिल में दृढ़ करके रखो। शैतान कहीं बाहर से आने वाला नहीं है। तुम्हारे अन्दर बैठा है। जो ध्यान नहीं लगने देता, इसलिए शैतान दाएं-बाएं से आने वाला नहीं है। इस तरह से मुसलमानों को भी शरीयत की बन्दगी से छुड़ाया।

हुआ साहेब का करम, पाया भेद बीच हरम।
हुई कबूल निमाज इन हाल, हुए साहेब सों खुसहाल।। ८ ।।

श्री राजजी महाराज की जब नजरे करम हो गई, तो मूल-मिलावा के सभी रहस्यों का पता चल गया। इस तरह से मूल-मिलावे की हकीकत का जब पता चल जाए तो समझना हमारी नमाज कबूल हो गई। तब धाम धनी श्री राजजी महाराज से मिलकर अखण्ड सुख प्राप्त किए।

Nijanand App

सिर से छूट गया करज, हुए मोमिन बेगरज।
छूटा मूल जो हुकम, हुआ सिजदा हजूर कदम।। ९ ।।

इस तरह का सुख मिलने से मोमिनों से कर्मकाण्ड और शरीयत छूट गई और मोमिन दुनियां से बेगर्ज हो गए। श्री राजजी महाराज ने खेल में उतरने से पहले कहा था कि खेल में जाकर मुझे भूल नहीं जाना। मैं ही तुम्हारा खाविंद हूं। इन वचनों को याद करके मोमिन श्री प्राणनाथजी के स्वरूप को श्री राजजी महाराज मानकर उनके चरणों में सिजदा बजा रहे हैं।

सो ए करता हों मैं तफसीर, जुदे कर देऊं खीर और नीर।
पेहेले था बेहेरुल्हैवान, तब तो तिनमें था फुरमान।। १० ।।

आप श्री प्राणनाथजी महाराज सत और झूठ, माया और ब्रह्म को अलग-अलग कर पहचान करा रहे हैं कि रसूल साहब के आने से पहले सब संसार में हैवानियत (पशु वृत्ति) का ही मनुष्य था। तब उनके बीच कुरान का ज्ञान लाकर सबको शरीयत की राह पर चलाया, परन्तु सभी मुसलमान आपस में लड़ झगड़कर फिरकों में बंट गए और ईमान पर खड़े नहीं रहे।

अब दरिया हुआ हक, इनमें न रहे किसी की सक।
दरिया हक बीच मजकूर, कह्या जाहेर खुसाली नूर।। ११ ।।

अब श्री कुलजम सरूप (जागृत बुद्धि) की वाणी आ जाने से सारे ब्रह्माण्ड के संशय मिट जाने से सब पाक (साफ) निर्मल हो गया है। अब इस संसार सागर में कुलजम सरूप की वाणी से सच्चिदानन्द धाम धनी की पहचान हो गई है। मोमिनों को श्री प्राणनाथजी के मुखारबिन्द की परमधाम की वाणी सुनकर अपार खुशी हो रही है।

सुरत दाएं बाएं भान, सिर आगूं धरिया आन।
खड़ा रहे दोऊ हाथ पकर, सो सके हजूर बातां कर।। १२ ।।

अब अपनी सुरता को अपने घर, कुटुम्ब, परिवार, माया से हटाकर श्री प्राणनाथजी के चरणों में सिर झुकाओ। इस तरह से जो गरीबी, अधीनी लेकर उनके सामने खड़े होंगे, वही परमधाम में श्री राजजी महाराज के आमने-सामने बात कर सकते हैं।

हुआ साहेबसों परस, दिलसे छूटी हवा हिरस।
भेद पाया सिरर हक, मासूकी दरिया बीच हुआ गरक।। १३ ।।

श्री प्राणनाथजी के चरणों की कृपा से यदि कुलजम सरूप की वाणी का ज्ञान मिल गया, तो उसके दिल से माया की सब चाहना मिट जाएगी और जब श्री राजजी महाराज के दिल, अर्थात् मारफत सागर के ज्ञान को जान लिया तो माशूक श्री राजजी महाराज के इश्क रूपी सागर में मोमिन मग्न हो गए।

सो ए रोसन जहूर निसान, खूबी नूर बिलंद गलतान।
एह बात जिनोंने पाई, बीच तेहेकीक के फुरमाई।। १४ ।।

कुलजम सरूप की वाणी से अब पच्चीस पक्ष की पहचान हुई और उसमें गर्क हो गए। इस सुख को जिन्होंने निश्चय करके पाया, निश्चित ही मोमिन हैं। यह कुरान में लिखा है।

Nijanand App

अव्वल एही है निमाज, जो गुजरे साहेब सिरताज।
मिले वाहीके तालिब, हुआ चाहिए दोस्त साहेब॥ १५ ॥

सबसे अव्वल दर्जे की नमाज यही है कि श्री प्राणनाथजी महाराज की सेवा-बन्दगी में सारा समय व्यतीत हो। जो इस तरह से प्रेम से सेवा की चाहना करते हैं, वही खुदा के सच्चे दोस्त मोमिन होते हैं।

जब तें एह आसा मेटी, तब तो तूं साहेबसों भेंटी।
जो लों कछू देखे आप, तो लों साहेब सो नहीं मिलाप॥ १६ ॥

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरी आतम! जब तेरे से यह माया मोह छूट जाएगा, तब तेरा श्री राजजी महाराज से मिलन होगा। जब तक तेरे अन्दर अहंकार है कि मैं कुछ हूं, तब तक धाम धनी से मिलन नहीं होगा।

जो लों कछुए आपा रखे, तो लों सुख अखण्ड न चखे।
तसबी गोदड़ी करवा, छोड़ो जनेऊ हिरस हवा॥ १७ ॥

जब तक तुम अपनापन (अहंकार) न छोड़ोगे तब तक अखण्ड सुख की प्राप्ति न होगी, इसलिए अपनी जाति वाली अलग पहचान कराने वाले आडम्बर माला, गुदड़ी, चिप्पी और जनेऊ इत्यादि माया की सभी चाहना छोड़ दो।

दोऊ जहान को करो तरक, एक पकड़ो जो साहेब हक।
या हंस कर छोड़ो या रोए, जिन करो अंदेसा कोए॥ १८ ॥

हिन्दू-मुसलमानपना दोनों को छोड़कर निजानन्द सम्प्रदाय के रास्ते पर चलो जो सत्य का मार्ग बताता है। हंसकर अपना हिन्दू मुसलमान पंथ झूठ का रास्ता छोड़ो, तो अच्छा रहेगा। नहीं तो रो-रोकर छोड़ना पड़ेगा। इसमें किसी तरह का संशय नहीं है।

जो ए काम तुमसे होए, तब आई वतन खुसबोए।
और फैल झूठे जो कोई, काफर गुस्से सों कहे सोई॥ १९ ॥

यह काम यदि तुम कर सकोगे, तो तुम्हें परमधाम के आनन्द मिलने लगेंगे। जो झूठे लोग हैं, वह दिखावे के लिए पाठ, पूजा, मेला, भंडारा करते हैं। वह अपने मान और शान की चाहना से करते हैं। उन लोगों को काफिर और बेईमान कहा है।

केहेत इमाम केसरी, खुदा इन वास्ते नई आयत करी।
खासा सोई है बुजरक, ए साहेब कहे बेसक॥ २० ॥

केसरी नाम के इमाम ने अपनी किताब में लिखा है कि खुदा ने मोमिनों के वास्ते कुल्जम सरूप की नई अखण्ड वाणी दी है, इसलिए यह मोमिन सबसे बड़ी बुजरकी वाले हैं और सबसे अच्छे हैं।

और जो कोई साहेब सों फिरे, काम दुनी का दिल में धरे।
याही में पावे आराम, सोए रहे छल बाजी काम॥ २१ ॥

यदि कोई श्री प्राणनाथजी की वाणी को न मानकर दुनियां के काम में चित्त रखता है, वह उसी को सुख जानकर संसार के छल-कपट में लगा रहता है।

Nijanand App

साफ कौल इनोंके फैल, यामें नाहीं जरा मैल।
ऐसी जो कोई धनी मिलक, तिनों जगात देनी हक।। २२ ।।

मोमिनों की कहनी, करनी और रहनी, इश्क, ईमान, सेवा, बन्दगी, कुर्बानी सभी निर्मल हैं। इनमें दुनियां की मैल (काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार, बदफैली) जरा भी नहीं है। इस तरह की जो निर्मल परमधाम की आत्माएं हैं, उन्हें भी श्री राजजी महाराज के चरणों में तन, मन, धन से कुर्बानी करनी है। यही उनकी जकात (दान) है।

देना है ठौर बुजरक, आप सदका देना बलक।
छोटा बड़ा जो नर नार, ए सबन पर है करार।। २३ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण कमल सबसे महान् हैं, जिन पर अपनी खास कुर्बानी करनी है। छोटे हों या बड़े, स्त्री हों या पुरुष, सभी को इस तरह दृढ़ निश्चय से कुर्बान होना है।

ऐसी गिरो जो दरगाही, ताए रखना आप दृढ़ाई।
जेती बातें हैं हराम, ए नजीक नाहीं तिन काम।। २४ ।।

अखण्ड परमधाम के मोमिनों की जो ऐसी जमात है, उन्हें अपना दृढ़ विश्वास श्री प्राणनाथजी के चरणों में रखना है, दुनियां की जितनी भी झूठी और बुरी बातें हैं मोमिन उनके नजदीक ही नहीं जाते।

या अपना या बिराना, सब परहेज किया दिल माना।
तिस वास्ते ऐसी जानी, हाथ साहेब के बिकानी।। २५ ।।

यह मेरा है या तेरा है, इसको मोमिन दिल से ही हटा देते हैं। ऐसी ब्रह्मआत्माएं श्री राजजी के चरणों में बिक गईं (फिदा हो गईं), अर्थात् इनकी बन्दगी कबूल हो गई, ऐसा समझना।

दाहिनी तरफ जो है हक, ए लड़कियां तिनकी मिलक।
निगाह रखे जानें सुपना, इंद्रियों से आप अपना।। २६ ।।

मेयराजनामा में रसूल साहब ने मेयराज के समय श्यामा महारानी को अर्श में अपनी दाहिनी तरफ देखा। यह बारह हजार लड़कियां मोमिनों को कहा है। यह खेल में श्यामा महारानी के साथ आई हैं। वह इस खेल को झूठे सपने के समान जानते हैं और अपने गुण, अंग, इन्द्रियों को काबू में रखते हैं।

इन भांत किया दिल धीर, उपजे नहीं कोई तकसीर।
इन भांतकी जो है औरत, तिन पाया रोज सरत।। २७ ।।

इस तरह से माया-मोह के अवगुणों से हटकर जो श्री प्राणनाथजी की सेवा-बन्दगी में लगे रहते हैं, उनके ऊपर कोई भूल नहीं होती और कोई गुनाह नहीं लगता। इस तरह की जो अंगना हैं, वह मोमिन हैं। उन्होंने ही खेल में श्री राजजी महाराज का दर्शन प्राप्त किया और कयामत की जानकारी पाई।

और सुख ना नफसों आराम, और रह्या न चाहें बेकाम।
और जेता कोई बद काम, सो नफसानी हिरस हराम।। २८ ।।

यह मोमिन इन्द्रियों का सुख नहीं चाहते और बेकार भी नहीं रहना चाहते। पल-पल धनी के चरणों में मग्न रहना चाहते हैं। जितने भी दुनियां में बदफैली के काम हैं, वह झूठी इन्द्रियों की चाहना जानकर मोमिन छोड़ देते हैं।

Nijanand App

जो ए काम ढूंढ़े बदफैल, काफर चाहे उलटी गैल।
ऐसे जो हैं सितमगार, पाया न समया हुए खुआर।। २९ ।।

रात-दिन काफिर लोग बदफैली, खराबी, नीच चालचलन, मारना, पीटना, लूटने, ठगने का काम पेट भरने के लिए ढूंढते फिरते हैं और ऐसे उलटे रास्ते पर चल रहे हैं। ऐसे जुल्म करने वाले जो लोग हैं, उनको श्री प्राणनाथजी महाराज के आने का कुछ भी लाभ नहीं मिला। चौरासी लाख योनियों में भटकने के लिए अपने को बरबाद कर लिया।

और जो कोई पाक गिरो आकीन, किया अमानत बीच अमीन।
इत कही जो इसारत, ए जो पाक कही उमत।। ३० ।।

इश्क और ईमान से भरे हुए जो पाक (साफ) मोमिन हैं, उनके दिलों में खुदा की बैठक है। यह मोमिन खुदा की अमानत हैं। ऐसे मोमिनों के सिरदार श्यामा महारानी हैं। यह बात जो कुरान में इशारतों में लिखी है, वह मोमिनों के वास्ते ही कही है।

ए पैदास अमानत हक, इत रोजा रबानी बेसक।
याही बीच निमाज असल, रखे आपा कर गुसल।। ३१ ।।

श्री राजजी महाराज की अमानत यह मोमिन संसार में आए हैं। इस खेल में वह श्री राजजी महाराज के स्वरूप की पहचान कर अपनी आत्मा से रोजा रखेंगे, अर्थात् अपने को धनी के चरणों में समर्पित करेंगे। इन्हीं की नमाज रूह की होगी। यह अपने गुण, अंग, इन्द्रियों की चाहनाओं को श्री कुलजम सरूप की वाणी से धोकर साफ कर लेंगे।

इनके साथ बीच हक, कोई बांधे कौल खलक।
निगाह रखे खड़ा रहे आप, सूरत आयत करे मिलाप।। ३२ ।।

इन मोमिनों के दिल में श्री राजजी महाराज अर्श कर बैठे हैं। दुनियां के अगुओं ने अपने-अपने ग्रन्थों में अपने-अपने तरीके से लिखा है। यह मोमिन अपने गुण, अंग, इन्द्रियों पर सदा निगाह रखते हैं और ईमान पर खड़े रहते हैं। आपस में बैठकर चौपाइयों पर शहूर करते हैं।

कोई निगाह रखे निमाज करे, हमेसां कबहूं ना फिरे।
रखे अदब बंदगी सरत, फुरमाया अदा सोई करत।। ३३ ।।

जो मोमिन हैं वह अपने गुण, अंग, इन्द्रियों को वश में करके बन्दगी, चितवन करते हैं। कितने भी कष्ट आएं, वह ईमान से नहीं गिरते। सदा कुलजम सरूप की वाणी के अनुसार चलते रहते हैं और श्री प्राणनाथजी की अदब के साथ सेवा में हाजिर रहते हैं।

मूलथें बंदगी करे जिकर, करे सिफत निकोई आखिर।
ए जो मुतकी मुसलमान, करी इसारत ऊपर ईमान।। ३४ ।।

मोमिन श्री प्राणनाथजी महाराज को परमधाम के साक्षात् श्री राजजी महाराज समझकर सेवा करते हैं। वह मोमिन हैं। जो ईश्वरीसृष्टि हैं, वह कर्मकाण्ड को छोड़कर ईमान से बन्दगी करते हैं।

बंदगी एही है बुजरक, दूजी पाक गिरो बीच हक।
गिरो मोमिन जमे करें, छे सिफतें वारसी धरें।। ३५ ।।

सबसे बड़ी बन्दगी मोमिनों के बीच है। दूसरी ईश्वरीसृष्टि के बीच। मोमिनों की जमात छः सिफतों (मेहर, इलम, इश्क, ईमान, जोश, हुकम) को दिल में संभाल कर रखते हैं।

Nijanand App

और जेती कोई वारसी नाम, सो ना पकड़ें हाथ हराम।
जिनों किया साहेब तेहेकीक, लई मिरास अल्ला नजीक।। ३६ ।।

जो संसार की सम्पत्ति दुनियां वाले अपने नाम कराए बैठे हैं, इनको मोमिनों ने नाचीज, मुरदार समझकर छोड़ दिया। जिन्होंने श्री प्राणनाथजी को साक्षात् समझकर बन्दगी की है, उन्हें धाम धनी श्री राजजी महाराज के नजदीक होने का लाभ मिला।

जिनों भिस्त बिलंदी पाई, गिरो बड़े मरातबे पोहोंचाई।
लई औरों भिस्त मीरास, जो रहे मोमिन बीच विलास।। ३७ ।।

आप श्री प्राणनाथजी महाराज ने अखण्ड परमधाम की जानकारी देकर अपनी जमात मोमिनों को भी परमधाम के सुख की पहचान कराई। दूसरी जमात ईश्वरीसृष्टि की है। उन्होंने मोमिनों की सेवा करके अखण्ड सुख प्राप्त किया। यह वही ईश्वरीसृष्टि है जिन्होंने रासलीला में मोमिन के एक-एक तन में दो-दो बैठकर धनी के विलास का आनन्द लिया।

बिना मोमिन ए जो और, ताको दोजख भिस्त बीच ठौर।
और काफर दोजखमें जल, देखें भिस्ती मरें जल।। ३८ ।।

इन मोमिनों और ईश्वरीसृष्टि के अतिरिक्त वह अपने अभिमान (बड़ाई) के कारण दोजख की अग्नि में जलकर अखण्ड बहिश्त में कायमी पाएंगे। यह काफिर लोग दोजख में जलते हुए मोमिन की शान को देखकर और भी ईर्ष्या की अग्नि में जल मरेंगे।

भिस्ती देखें दोजखियों दुख, देखें मोमिन होवे सुख।
यों कह्या बीच मिसल जादिल, पावे ईमान बीच मिसल।। ३९ ।।

मिसल जादिल किताब में लिखा है कि मोमिन दोजखियों को दुःखी होते देखेंगे, तो उनकी नजर से ही उनको दुःख से छुटकारा होकर प्रेम, इश्क, भक्ति मिल जाएंगे।

जो सके ना सांच कर, सो जले दोजख माहें काफर।
भिस्त दोजखी दूरथें देखें, त्यों त्यों जलें आप विसेखें।। ४० ।।

जिस किसी ने श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप को नहीं पहचाना, वह काफिर लोग दोजख की अग्नि में जलते हैं। मोमिनों के वह अखण्ड सुख, चर्चा, चितवन, प्रेम-भाव और सेवा को दूर से देखते हैं। वैसे-वैसे ही उनको और अधिक दुःख होता है।

ए जो कहे भिस्त वारस, रेहेने वाले भिस्त हमेस।
इन आदम की पैदास, किया बीच खलक के खास।। ४१ ।।

परमधाम के वारिस मोमिन हैं। वह सदा परमधाम में रहने वाले हैं। आदम श्री देवचन्द्रजी के नजरी सुपुत्र मेहराज ठाकुर (श्रीजी) को खुदा ने दुनियां के बीच अखण्ड सुख देने वाला सिरदार बनाया है।

खैंच किया सबों के आगे, मोमिन इनपे पेसवा लागे।
बीज मिट्टी दुनियां की न्यात, पर ए पाक साफ कही जात।। ४२ ।।

दुनियां में जितने भी पंथ, धर्म, स्वर्ग, निराकार को मानने वाले हैं, उन सबमें से निकालकर मोमिनों को परमधाम की कुलजम सरूप की वाणी दे दी, इसलिए मोमिन इनको अपना धाम का धनी पहचान कर समर्पित हो गए। श्री प्राणनाथजी का शरीर दुनियां वालों की तरह पंच तत्व का है, परन्तु यह समस्त दुनियां की चाहनाओं से दूर है, इसलिए पाक-साफ कहा है।

Nijanand App

एक किया इसकी नकल, दूजा पाक कह्या असल।
आया इन तरफ बहार, जिनों पकड़्या पाक करार।।४३ ।।

श्री देवचन्द्रजी के दो पुत्र हैं। एक बिहारीजी तथा दूसरे मेहराज ठाकुर। बिहारीजी नकली हैं और दूसरे स्वरूप श्रीजी को असली कहा जाता है। इनके द्वारा ही कुल्जम सरूप की वाणी मोमिनों के वास्ते आई है। स्पष्ट है कि इन्होंने ही श्री देवचन्द्रजी के चलाए निजानन्द सम्प्रदाय को आगे बढ़ाया।

नुस्खे रेहेमत मदतगार, इन ठौर भया उस्तुवार।
तीन सरूप की एह बयान, सो ए कहे एक के दरम्यान।।४४ ।।

श्री राजजी महाराज की मेहर से इनके पास तारतम ज्ञान आया। इसकी शक्ति से इन्होंने कुल्जम सरूप की वाणी को जाहिर किया। बसरी, मलकी और हकी जो तीन सूरतें बताई हैं, वह तीनों श्री (मेहराज ठाकुर) प्राणनाथजी के तन में आ गईं।

सिफत तीनोंकी जुदी कही, सो सब बुजरकी एक पर दई।
ज्यों बसरी मलकी हकी, त्यों रसूल रूहअल्ला इमाम पाकी।।४५ ।।

बसरी, मलकी हकी तीनों स्वरूपों की सिफत अलग-अलग बताई। अब इन तीनों स्वरूपों की साहेबी हकीकत और मारफत के ज्ञान से तथा परमधाम की जितनी बड़ी साहेबी है, वह सभी श्री राजजी महाराज ने इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी को दी है। बसरी सूरत रसूल साहब ने शरीयत का धर्म चलाया और कुरान लाए। रूह अल्लाह ने जागृत बुद्धि का ज्ञान तारतम दिया और इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने कुल्जम सरूप की वाणी से सबको पाक-साफ किया।

न पावें ऊपर माएने जाहेरी, ए मगजों सों इसारत करी।
एक सरूप अवस्था तीन, ज्यों लड़का ज्वान बुढ़ापन कीन।।४६ ।।

यह रहस्य ऊपर के मायने लेने से समझ में नहीं आते। यह बातें कुरान में इशारतों में कही हैं और एक स्वरूप की तीन अवस्थाएं हैं। बसरी स्वरूप बचपने का ज्ञान है। मलकी स्वरूप श्री श्यामा महारानी (देवचन्द्रजी) ने किशोर अवस्था का शास्त्र, पुराण का सार तारतम ज्ञान दिया। हकी सूरत इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने कुरान, हदीस, वेद, शास्त्र सभी धर्मग्रन्थों से पूरी पहचान कराई। बुढ़ापे में ज्ञान ही अधिक होता है, इसलिए हकी सूरत को वृद्धावस्था वाला कहा है।

तीन सरूप चढ़ती उतपनी, चढ़ती चढ़ती कही रोसनी।
खोली राह आखिर बागकी, तंग सेती पोहोंचे बुजरकी।।४७ ।।

इन तीनों स्वरूपों बसरी, मलकी, हकी के ज्ञान की रोशनी को चढ़ता-चढ़ता बताया है। श्री प्राणनाथजी महाराज ने अखण्ड परमधाम के बगीचों की सैर करा दी। नौतनपुरी में श्री मेहराज ठाकुर के रूप से इन्द्रावती को पाया और फिर पन्नाजी में आकर कुल्जम सरूप की वाणी आने से पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द अक्षरातीत धाम के धनी अल्लाह ताला बन गए।

बिध बिधकी न्यामत पोहोंचाई, और कई तरबियत फुरमाई।
लड़के सेती पोहोंचे ज्वान, रख्या कदम हक बयान।।४८ ।।

श्री राजजी महाराज ने कुल्जम सरूप की वाणी (परमधाम की सब न्यामतों का खजाना) बख्शा। कुरान पुराण की गवाहियां देकर अब सारी दुनियां को पारब्रह्म की पहचान करा रहे हैं। नौतनपुरी में बालक स्वरूप थे। श्यामा महारानी देवचन्द्रजी ने तारतम ज्ञान से जवान बना दिया। उसके बाद कुल्जम सरूप की वाणी पन्नाजी में आने से बुजुर्ग बन गए।

Nijanand App

पाई सेखी हुए बुजरक, नेक न सक करते हक।
लायक खुदाएके करी सिफत, पैदा किया अर्स दोस्त।।४९ ।।

श्री राजजी महाराज की कृपा से जब कुल्जम सरूप की वाणी मिली, तो बुजरक कहलाए। अब यह संसार के झूठे जीवों को कुल्जम सरूप की वाणी का ज्ञान देकर अखण्ड मुक्ति प्रदान करेंगे। इसके अन्दर कोई संशय नहीं है। यह श्री प्राणनाथजी महाराज साक्षात् पारब्रह्म हैं, ऐसी इनकी पहचान लिखी है। लिखा है कि खुदा ने अपना सच्चा दोस्त खेल में (फानी दुनियां में) भेजा है।

कुरसी फिरस्ते लोहकलमी, कायम सितारों आसमान जिमी।
पीछे आदमके पैदा भया, जात पाक से दोस्त कह्या।।५० ।।

खुदा ने विष्णु भगवान को आसमान-जमीन के बीच बैकुण्ठ का राज्य देकर खेल बनाया है। दुनियां के जीव उस विष्णु भगवान और उनके देवी-देवताओं को ही अपना परमात्मा मानते हैं। ऐसे संसार में श्यामा महारानी देवचन्द्रजी के बाद इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी को प्रगट किया, जिन्हें दुनियां की जाति-पाति और सब ख्वाहिशों से मुक्त खुदा का दोस्त कहा है।

बुजरकी दलील फुरमाई, आदम पर बकसीस बड़ाई।
मेहेर करी ऊपर सूरत, इन मेहेर की करी न जाए सिफत।।५१ ।।

खुदा ताला के हुकम से कुरान-पुराण में श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी महाराज की बड़ी महिमा गाई है। इन देवचन्द्रजी (श्यामा महारानी) को श्यामजी के मन्दिर में तारतम ज्ञान (पराशक्ति जागृत बुद्धि के ज्ञान) की बख्शीश हुई। श्री राजजी महाराज की जो यह मेहर श्यामा महारानी (देवचन्द्रजी) पर हुई। उसकी सिफत वर्णन से बाहर है।

जो कह्या इन सेती नूर, सच्चे सूर कहावें जहूर।
इनका रंग है तकव्वल, सिर बिलंदी ताज सकल।।५२ ।।

श्री श्यामा महारानी (देवचन्द्रजी महाराज) के तारतम ज्ञान के तेज से श्री प्राणनाथजी महाराज ने कुल्जम सरूप की वाणी को जाहिर किया। इनके प्रेम का रंग पक्का है, छूटने वाला नहीं है। दुनियां में जितने भी धर्म (सम्प्रदाय) हैं, उनके ऊपर इनका ज्ञान कलश के समान चमक रहा है।

और मिले गिरदवाए लोक, हुआ बुजरकी का गले में तोक।
ए बकसीस और से रोसन, उन सुने गैब के सुकन।।५३ ।।

श्री प्राणनाथजी के चरणों में बारह हजार ब्रह्मसृष्टि और चौबीस हजार ईश्वरीसृष्टि का मेला होगा। इनके बीच श्री प्राणनाथजी को परमधाम ले जाने के दायित्व की शोभा मिली है। यह बख्शीश इन्हें श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी से मिली, जिन्हें श्यामजी के मन्दिर में परमधाम का ज्ञान मिला।

एह बात ए पैदास कही, सो सिफत सब महंमद पर भई।
ए तीनों सिफतों भया रसूल, ए सजीवन मोती कह्या अमोल।।५४ ।।

बसरी, मलकी और हकी इन तीनों के ज्ञान की पहचान कराई गई। इन सबकी सिफत इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी की है। मुहम्मद के तीनों स्वरूप की साहेबी एक श्री प्राणनाथजी में आई, इसलिए इनको अनमोल मोती कहा।

Nijanand App

इन मोती को मोल कह्यो न जाए, ना किनहूं कानों सुनाए।
सोई जले जो मोल करे, और सुनने वाला भी जल मरे।।५५।।

श्री प्राणनाथजी को अनमोल मोती कहा है। इस मोती का मोल न जबान से किया जा सकता है और न कानों से सुना जा सकता है। जो इनका मोल करे वह जल मरेगा। सुनने वाला भी जल मरेगा, अर्थात् संसार की किसी वस्तु से उनकी उपमा नहीं दे सकते।

बाजे कहे साहेब इस्क, सबसे जुदा ए आदम हक।
जैसे जात पाक सुभान, एह मरातबा किया बयान।।५६।।

कोई-कोई उनको इश्क का बादशाह मानते हैं और कोई इन्हें दुनियां के सभी धर्म सम्प्रदाय से अलग अखण्ड परमधाम का ज्ञान का देने वाला पारब्रह्म का स्वरूप मानते हैं। जिस तरह से पारब्रह्म परमात्मा की कोई जाति नहीं होती, निर्मल होते हैं, वही दर्जा श्री प्राणनाथजी को प्राप्त है।

हद सबों की करी जुबांन, क्या कोई कहे ए सिफत जहान।
अब कहूं मैं इनकी बात, जो कह्या आदम पाक जात।।५७।।

कुल्जम सरूप की वाणी से मोमिनों को परमधाम, ईश्वरीसृष्टि को अक्षरधाम और जीवसृष्टि को अखण्ड मुक्ति देकर बहिश्तों में कायम करेंगे। अब छत्रसालजी कहते हैं कि कुरान, हदीसों के वर्णन में जिस आदम (देवचन्द्रजी) को पाक कहा है, उनकी हकीकत बताती हूं।

सो अफताली महंमदका भया, जो आदम ऐसा बुजरक कह्या।
ए पैदा हुआ कारन महंमद, एह रसूलकी कही हद।।५८।।

ईसा रूह अल्लाह, श्यामा महारानीजी का दूसरा जामा श्री प्राणनाथजी महाराज आखिरी जमाने के खाविंद हैं। वह संसार के सब जीवों को अखण्ड मुक्ति प्रदान कर बहिश्तों में कायम करेंगे। रसूल साहब ने जो कुरान, हदीसों में कहा था कि खुदा आएगा, उसी के कहे अनुसार मोमिनों के बीच कुरान, हदीसों के छिपे रहस्य खोलकर इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी जाहिर हुए। मुहम्मद साहब की तीन सूरतें हैं। श्री प्राणनाथजी के अन्दर ही यह तीनों हैं।

जो सिफत आदम की कही न जाए, तो महंमद की क्यों कहूं जुबांए।
ए दोऊ सिफत सरूप जो एक, तीसरा साकी इनमें देख।।५९।।

सतगुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज श्यामा महारानी की सिफत महान है, जो वर्णन करने में नहीं आती। रसूल साहब जो कुरान लाए हैं, उनकी सिफत कैसे कही जाए? यह दोनों स्वरूप एक ही हैं और कुल्जम सरूप की वाणी से इश्क रस पिलाने वाले श्री राजश्यामाजी प्राणनाथजी के तन में बैठे हैं।

ईसा आदम महंमद नाम, ए तीनों एक मिल भए इमाम।
और जो कहे मुरदों की भांत, साकी प्याले होसी कल्पांत।।६०।।

रसूल साहब, श्यामा महारानी और हकी सूरत तीनों मिलकर इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी कहलाए। बाकी दुनियां मुर्दों की तरह है, जो कुल्जम सरूप की वाणी का रस पान करके कयामत के समय बहिश्तों में अखण्ड मुक्ति पाएगी।

Nijanand App

सो सारे फना आखिर, जेती वस्त कही जाहेर।
जिन माएने लिए ऊपर, सो ए वजूद को रहे पकर।।६१।।

यह संसाार जो दिखाई दे रहा है, वह अन्त में सब नष्ट हो जाने वाला है। जिन जीवों ने कुरान को ऊपर की नजर से देखा, वह अपने शरीर की ही ठाट-बाट में लगे हैं।

जाहेर जिनकी भई नजर, कयामत बदला कह्या तिन पर।
करे जिमीन सात आसमान, वास्ते उमत महंमद दरम्यान।।६२।।

जिनको संसार की चाहना है, आखिर के समय में उनको कर्मों के अनुसार ही दोजख की अग्नि में जलकर मुक्ति प्राप्त होगी। खुदा ने मृत्युलोक और सात आसमान बैकुण्ठ तक बनाए हैं। वह श्यामा महारानी के मोमिनों को खेल देखने के वास्ते ही बनाए हैं।

सात हजार राह फरिस्ते, करी इसारत दुनी कयामते।
अब खुदाए ने यों कर कह्या, मैं आसमान जिमी से जुदा रह्या।।६३।।

फरिश्तों का रास्ता सात हजार वर्ष का होगा। यह कयामत का निशान इशारों में कहा है—(रसूल साहब के आने तक ५८४७ वर्ष ६३ वर्ष उमर के ९९० देवचन्द्रजी के आने तक और सौ वर्ष लैल के सम्वत् १७३५ में सात हजार पूरे हुए)। कुरान में साफ लिखा है कि मैं संसार, इस आसमान, जिमी से अलग हूं।

जेती कोई पैदाइस कुंन, मोको तिन थें जानो भिंन।
मैं ना इनमें ना इनके संग, बेसुध कहे सब इनके अंग।।६४।।

कुंन शब्द कहने से जो सृष्टि पैदा हुई है, मुझे उससे अलग समझो। मैं इनके बीच नहीं रह सकता। इनके अंग-अंग में माया की ही चाहना भरी है।

मेरे इनसों नहीं मिलाप, मैं बेखबरों में नाहीं आप।
मैं इनों सों नहीं गाफिल, ए दुख सुख में रहे मिल।।६५।।

यह दुनियां वाले सभी जीवों को मेरी सुध नहीं है। मैं इनके साथ नहीं रह सकता। मैं इनकी हरकतों को अच्छी तरह जानता हूं। यह झूठे संसार में ही अपने को सुखी मानते हैं।

सिरक इनों की मैं जानों सही, बिना खबर याकी जरा नहीं।
ऊपर से उतर्‌या पानी, तिन से नेकी बंदों की जानी।।६६।।

यह मेरे मोमिन देवी-देवताओं, आग, पानी, पत्थर और झूठी गद्दियों की पूजा कर रहे हैं। यहां इनकी हकीकत मैं अच्छी तरह जानता हूं। परमधाम से कुलजम सरूप की वाणी आने पर ही मैंने अपने मोमिनों की असल पहचान की।

मरतबा इनों देऊं उस्तुवार, इन पानी से होए करार।
इबन अबास करे बयान, आया पानी इन दरम्यान।।६७।।

मैं अपने मोमिनों को बड़ा मान देता हूं, क्योंकि उनको मेरी वाणी से आराम मिलता है। इबन अबास अपनी किताब में लिखते हैं कि यह अखण्ड ज्ञान मोमिनों के वास्ते आया।

Nijanand App

पांच नेहेरें जबराईल पर, आइयां भिस्त से उतर।
पांचों कही जुदे जुदे ठौर, बिना इमाम न पावे और।।६८ ।।

अखण्ड परमधाम से जबराईल के द्वारा पांच बड़ी नहरें आई हैं। और अलग-अलग ठिकाने पर आईं। बातूनी में बृज के स्वरूप, रास के स्वरूप, रसूल साहब, श्यामा महारानी (देवचन्द्रजी) और प्राणनाथजी महाराज हैं। इस रहस्य को इमाम मेंहेंदी के बिना कोई नहीं बता सकता।

उतरियां सरूप पांच चसमें, रहियां एक झिरने सच में।
हिंद बलख और कही मिसर, कौल पाया करार पत्थर।।६९ ।।

यह पांच नहरें ही पांच स्वरूप हैं जो एक महामति के दिल में सब इकट्ठे हुए हैं। हिन्द-पन्नाजी, बलख, नौतनपुरी मिसर, अरब में जो वाणी आई है, उससे पत्थर दिल जीवसृष्टि को भी आराम मिला।

ए मेला हुआ आखिर दिन, तब नफा मसलहत पाया सबन।
दजला फिरात जुदी कही, जाहेरी माएने भेली न भई।।७० ।।

कयामत के समय यह सब इकट्ठे होंगे। तब वाणी की चर्चा से सबको लाभ मिलेगा। दजला-फिरात दो नदियां इकट्ठी नहीं हुईं। यह दजला और फिरात बृज-रास की लीला है जो इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के अन्दर आकर इकट्ठी हुई हैं।

चसमें पहाड़ जारी करे, चसमें कायम पानी भरे।
कह्या जिमी ए बादल पानी, जिनसे साबित भई जिंदगानी।।७१ ।।

परमधाम से श्री राजजी महाराज कुलजम सरूप की वाणी भेज रहे हैं। वाणी चश्मा है। पहाड़ परमधाम है। इस कुलजम सरूप की वाणी से मोमिन अपने अर्श दिल को सींच रहे हैं। श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी को बादल कहा है जो तारतम की वाणी संसार में लाए। जिस वाणी के प्रताप से संसार के झूठे जीवों को अखण्ड मुक्ति बहिश्तों में मिलेगी।

उतरया पानी ऊपर ले जाए, सब कर सके जो कछू ए चाहे।
इन बीरजमें होवे आप, और दूर दुनी संग नहीं मिलाप।।७२ ।।

परमधाम की यह आई हुई अखण्ड वाणी मोमिनों को परमधाम, ईश्वरीसृष्टि को अक्षरधाम तथा जीवसृष्टि को अखण्ड मुक्ति प्रदान करेगी। यह वाणी इतनी बलशाली है कि जो चाहे कर सकती है। श्री राजजी महाराज कहते हैं कि मैं इन्द्रावती के दिल में स्वयं बैठा हूं और दुनियां वालों से बहुत दूर हूं।

इन समें उतरया आजूज, और संग इनके माजूज।
पीछे उतरया जबराईल, लेवे सबको न करे ढील।।७३ ।।

वक्त-ए-आखिरत को आजूज-माजूज जाहिर हो गए। जो दुनियां की अष्टधातु की दीवार, अर्थात् पांच तत्व, तीन गुण के संसार की उम्र को रात-दिन खाकर समाप्त कर देंगे। प्रलय के ठीक बाद बिना कुछ देरी किए जबराईल फरिश्ता तीनों सृष्टियों को परमधाम, अक्षरधाम और बहिश्तों में पहुंचा देगा।

एक मक्के का काला पत्थर, कुरान और खुदाए का घर।
और ठौर कह्या इभराम, और यार महंमद आराम।।७४ ।।

श्री देवचन्द्रजी महाराज के नसली और नजरी दो पुत्र हैं। जिनमें गादीपति बिहारीजी महाराज कठोर पत्थर के समान दिल वाले हैं और कर्मकाण्ड पर चलने वाले हैं। नजरी पुत्र मेहराज ठाकुरजी के बीच हवसा जिसे खुदा का घर कहा है, कुलजम सरूप की वाणी उतरनी शुरू हुई। इनके दिल में ही इब्राहीम

Nijanand App

श्री श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी महाराज) विराजमान हैं, जिनकी वाणी से रूह मोमिनों को आराम मिलता है।

पीछले जेते गए दिन, बाकी कोई न रेहेवे किन।
एक बेर फना सब किए, फेर कायम उठाए के लिए।।७५ ।।

समय बीत जाने पर पीछे कोई नहीं रह जाएगा। एक बार संसार का महाप्रलय करके फिर सबको अखण्ड बहिश्तों में पहुंचा देंगे।

ए पांचों नेहेरें कही जो पानी, जिनसे दुनियां भई जिंदगानी।
बागोंने ताजगियां पाई, सो भी पानी हादी ने पिलाई।।७६ ।।

पांच स्वरूपों के द्वारा जो परमधाम से कुलजम सरूप की वाणी आई है, सब नष्ट होने वाली दुनियां को जिन्दगी मिल गई। इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज ने कुलजम सरूप की वाणी मोमिनों को पिलाकर बगीचे जो मोमिन हैं, जागकर सावचेत हो गए। ताजगी आ गई।

सो भी कहे भिस्त के बाग, जिनसे खेती पायो सोहाग।
इनकी मैं करों तफसीर, जुदे कर देऊं खीर और नीर।।७७ ।।

यह मोमिन ही अखण्ड परमधाम के बगीचे के समान कहे गए हैं। इनके द्वारा ही संसार के सब जीव जो खेती के समान हैं, अखण्ड मुक्ति प्राप्त हुई। श्री महामतिजी कहते हैं कि अब मैं झूठ और सच का विवरण, माया और ब्रह्म के भेद बताती हूं।

उमत लाहूती कही अंगूर, दूजी जबरूती कही खजूर।
मलकूती को खेती कही, इनको बड़ाई उनथें भई।।७८ ।।

परमधाम की ब्रह्मसृष्टियों को मीठे अंगूर की उपमा दी है। जो ईश्वरीसृष्टि है उसे खजूर की उपमा दी है। बैकुण्ठ के पूजक को खेती कहा है। इस जीवसृष्टि को भी मोमिनों के कारण अखण्ड मुक्ति मिली।

दोऊ कायम भई उमत, उठे बीच हादी कयामत।
तीसरी कायम भई दुनियां और, तिन सबों की हज इन ठौर।।७९ ।।

कयामत के समय ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि दो जमातें अपने घर जाएंगी। तीसरी सृष्टि जो दुनियां है, जिसे अखण्ड मुक्ति प्राप्त हुई, वह सब आखिरत में आकर श्री प्राणनाथजी के चरणों में सिजदा बजाएंगे।

और दुनियां ने सब फसल पाई, उमत बाग हासिल आई।
एह खुदाए का बरस्या नूर, देखो छत्ते का जहूर।।८० ।।

महाराजा छत्रसालजी कहते हैं कि सारी दुनियां को अखण्ड मुक्ति कायम होने का सुख मिला। मोमिन और ईश्वरीसृष्टि अखण्ड बगीचों में पहुंचीं। इस तरह से श्री प्राणनाथजी ने कुलजम सरूप की वाणी की वर्षा की।

हुआ खुदाए के हजूर, बात याही की हुई मंजूर।।८१ ।।

जो उनकी वाणी के अनुसार चला उनकी सभी बातें खुदा श्री राजजी महाराज ने स्वीकार कीं।

|| प्रकरण || ८ || चौपाई || ३१० ||

Nijanand App

लिख्या सिपारे सूरतों, और आयतें देखो जाए।
कयामत कलाम अल्लाह में, ठौर ठौर दई बताए।। १ ।।

कुरान की आयतों और सूरतों में जगह-जगह पर कयामत की बातें लिखी हैं।

अब लों तारीख आखिर की, न पाई कुरान थें किन।
सो रूहअल्ला के इलमसे, जाहेर हुई सबन।। २ ।।

अब तक किसी को भी कुरान से कयामत की तारीख का पता नहीं लगा था। अब श्यामाजी महारानी के दूसरे जामा श्री प्राणनाथजी के तन से कुलजम सरूप की वाणी आई। उससे कयामत के सभी भेद खुल गए।

सबों सिपारों कयामत, एही लिख्या है मजकूर।
पर क्यों पाइए हादी बिना, कलाम अल्ला का नूर।। ३ ।।

कयामत के सभी सिपारों में ही कयामत के किस्से लिखे हैं, परन्तु उन खुदाई वचन के छिपे रहस्य श्री प्राणनाथजी के बिना कोई नहीं बता सकता।

आगूं नव सदीय के, कह्या होसी रूहों मिलाप।
बुजरक मिलावा होएसी, देवें दीदार खुदा आप।। ४ ।।

कुरान में लिखा है कि नौवीं सदी के बाद रूहों का मिलाप होगा और इस बड़े मेले में स्वयं खुदा पारब्रह्म आकर दर्शन देंगे।

बाकी दसमी सदीय के, सवा नव साल रहे।
गाजी मिसल मोमिन की, रूहअल्ला उतरे कहे।। ५ ।।

दसवीं सदी के जब सवा नौ साल बाकी रहे, अर्थात् सम्वत् १६३८ में श्री श्यामाजी महारानी आत्माओं को लेकर आईं और श्री देवचन्द्रजी के तन में प्रगट हुईं।

रूहअल्ला रोसन ज्यादा कह्या, दूजा अपना नाम।
एक बदले बंदगी हजार, ए करसी कबूल इमाम।। ६ ।।

श्री श्यामा महारानी को दूसरे जामे श्री प्राणनाथजी के तन में ज्यादा शोभा मिली। इन्होंने इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के रूप में एक बन्दगी का हजार फल दिया।

बीच अग्यारहीं सब रोसनी, ज्यों ज्यों मजलें भई जित।
हक न्यामत लई हादियों, त्यों लिखी कुरानमें तित।। ७ ।।

कुरान में लिखा है कि ग्यारहवीं सदी के बीच श्री प्राणनाथजी को जगह-जगह पर कुलजम सरूप की वाणी उतरी। श्री राजजी महाराज की अखण्ड न्यामत को श्री श्यामा महारानी और श्री प्राणनाथजी महाराज ने ग्रहण किया जैसा कुरान में लिखा है।

एक जामा हजरत ईसे का, मिल दोए भए तिन।
मुद्दतें एक जुदा हुआ, साल सतानवें पोहोंचे इन।। ८ ।।

श्री देवचन्द्रजी के तन से दो पुत्र नसली और नजरी हुए। उनमें से एक बचपन से ही अलग हो गया। दूसरे को सत्तानवें वर्ष के बाद अनूपशहर में कुरान का ज्ञान सनन्ध मिला।

Nijanand App

किताब इलाही उतरी, गैब से आई इत।
महीने आठ लों उत जुध हुआ, चले मदीने से इन सरत।। ९ ।।

अनूपशहर में श्री राजजी महाराज की तरफ से सनंध की किताब की वाणी उतरी। दिल्ली में आठ महीने तक औरंगजेब बादशाह से कुरान की वाणी से युद्ध हुआ। इसी काम के लिए सूरत से चले थे।

पांच किताबें पेहेचान से, हुकमें हाथ दई।
ए साल निन्यानवें लिख्या, गंज छिपे जाहेर भई।। १० ।।

श्री राजजी महाराज ने दिल्ली की मंजिल तक पांच किताबें (रास, प्रकास, खटरुती, कलस, सनंध) कुरान के छिपे रहस्य निन्यानवे वर्ष सम्वत् १६३८ से १७३७ तक, अर्थात् रामनगर में जाकर जाहिर हुए। भिखारी दास के द्वारा शेख खिदर को पता चला जिसने औरंगजेब को लिखा।

लकब इद्रीस जान्या गया, सौ साल की मजल।
जित तीस वरक खुदाए के, हुए थे नाजल।। ११ ।।

रामनगर में ही सम्वत् १७३८ में सौ साल पूरे हुए तो इद्रीस पैगम्बर का खिताब मिला जिसने टुकड़े-टुकड़े जोड़कर चादर बनाई थी। इस तरह श्री प्राणनाथजी महाराज ने कुरान और पुराण से सब प्रमाण इकट्ठे करके एक सीधा रास्ता निजानन्द सम्प्रदाय जाहिर किया और अनूपशहर में जो तीस सनंधें उतरीं वह शेख खिदर के सामने सनंध वाणी जाहिर हुई।

टोना कह्या महंमद पर, अग्यारे गांठ लगाए।
वह गांठें छूटे बिना, काहू ना सकें जगाए।। १२ ।।

कुरान में किस्सा लिखा है कि एक यहूदी की लड़की ने मुहम्मद साहब पर टोना किया और ग्यारह गांठ बालों से लगाईं। जब तक वह ग्यारह गांठें खुल नहीं जातीं तब तक टोना टल नहीं सकता।

दस पर एक सदी भई, छूट गई गांठें सब।
आमर महंमद आखिर हुई, ठौर पोहोंचे मोमिन सब।। १३ ।।

ग्यारहवीं सदी में सब गांठें खुल गईं। आंखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी की वाणी जाहिर हुई और ठिकाने-ठिकाने मोमिनों ने उसे पहुंचाया।

दस और दोए बुरज कहे, वह बारहीं सदी कयामत।
क्यों पावे बंधे जाहेरी, बुजरक इन सरत।। १४ ।।

कुरान में दस और दो बुर्जों का जो बयान कहा है, वह कयामत के बारहवीं सदी में जाहिर होने के निशान हैं, अर्थात् बारहवीं सदी में इस कयामत के वायदे को जाहिरी अर्थ लेने वाले नहीं समझ सकते।

दसमी से दोए भए, सो हादी दोए बुजरक।
आखिर जमाना करके, पोहोंचाए सबों हक।। १५ ।।

दसवीं सदी के बाद दो बुर्जों का अर्थ है कि दो स्वरूपों का आना, तो मलकी स्वरूप श्यामा महारानी और हकी स्वरूप श्री प्राणनाथजी महाराज आए। श्री प्राणनाथजी महाराज सबका हिसाब करके सबको अखण्ड ठिकानों पर पहुंचाएंगे।

Nijanand App

इन बीच जो गुजरे, तिन बरसों की तफसीर।
दस अग्यारहीं तीस बारहीं, और सत्तर की जंजीर।। १६ ।।

इस लीला के बीच में जो होना है उन वर्षों की हकीकत बताती हूं। ग्यारहवीं सदी के दस वर्ष, अर्थात् सम्वत् १७३५ से १७४५ तक तथा बारहवीं सदी के तीस वर्ष, अर्थात सम्वत् १७४५ से १७७५ तक ईसा रूह अल्ला की पातसाही कही है, इसमें प्रथम दस वर्षों में मोमिनों को आत्मिक खुराक तथा पीछे तीस वर्षों में ईश्वरीसृष्टि सहित जागनी होगी। उपरान्त सत्तर वर्ष १७७५ से १८४५ तक पुलसरात यानि शरीयत से जीवसृष्टि की जागनी होगी।

इन दसों उमत खासी चली, दुनी चली तीस भए जब।
पुल-सरात सत्तर कहे, पोहोंची आखिर फरिस्तों तब।। १७ ।।

ग्यारहवीं सदी के इन दस वर्षों में ब्रह्मसृष्टियों को वाणी के उतरने से बहुत आनन्द मिला। बारहवीं सदी के जब तीस वर्ष हुए तो मोमिनों ने वाणी को संसार में फैलाया। इसके बाद सत्तर वर्ष पुलसरात के कहे हैं जो सम्वत् १८४५ तक पूरे होते हैं—इस समय अजाजील फरिश्ता पश्चाताप कर वाणी को ग्रहण करेगा।

पीछे तेरहीं में उठ खड़े, सुख कायम पोहोंचे सब।
आठों भिस्त विवेक सों, हुए नजरों न छूटे अब।। १८ ।।

उसके बाद तेरहवीं सदी में असराफील फरिश्ता कुलजम सरूप की वाणी को जाहिर करके मोमिनों की जागनी करेंगे और फिर सब बहिश्तों के अखण्ड सुख लेंगे। इस तरह से सब दुनियां अपने कर्मों के अनुसार अक्षर की नजर योगमाया में कायम हो जाएगी।

|| प्रकरण || ९ || चौपाई || ३२८ ||

चौथे सिपारे में लिखी, सो रोसनी मैं दिल में रखी।
जाहेर करों वास्ते उमत, खोलों बातून आई सरत।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि कुरान के चौथे सिपारे में जो लिखा है उसे मैंने अपने दिल में संजोकर रखा है। अब उसके बातूनी रहस्य खोलने का समय आ गया है, इसलिए ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते जाहिर करती हूं।

केतों के मुंह उजले भए, केतों के मुंह काले कहे।
कैयों आकीन कई मुनकर, यों लिख्या होसी आखिर।। २ ।।

चौथे सिपारे में लिखा है कि कयामत के समय में कई के मुख उज्ज्वल होंगे और कई के मुख काले होंगे। कई ईमानदार होंगे, कई बेईमान होंगे।

हक ताला ने किया फुरमान, डांटत हैं कीने कुफरान।
अंजील तौरेत से जो फिरे, सोई काफर हुए खरे।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज ने रास, प्रकास, खटरुती की वाणी भेजी, परन्तु कपट के कारण गादीपति बिहारीजी महाराज ने वाणी जाहिर नहीं होने दी। इस तरह से रास और कलस की वाणी को जिन्होंने नहीं माना, वह पक्के काफिर हैं। बिहारीजी कलस को क्लेश कहते थे।

Nijanand App

इन बीच जो गुजरे, तिन बरसों की तफसीर।
दस अग्यारहीं तीस बारहीं, और सत्तर की जंजीर।। १६ ।।

इस लीला के बीच में जो होना है उन वर्षों की हकीकत बताती हूं। ग्यारहवीं सदी के दस वर्ष, अर्थात् सम्वत् १७३५ से १७४५ तक तथा बारहवीं सदी के तीस वर्ष, अर्थात सम्वत् १७४५ से १७७५ तक ईसा रूह अल्ला की पातसाही कही है, इसमें प्रथम दस वर्षों में मोमिनों को आत्मिक खुराक तथा पीछे तीस वर्षों में ईश्वरीसृष्टि सहित जागनी होगी। उपरान्त सत्तर वर्ष १७७५ से १८४५ तक पुलसरात यानि शरीयत से जीवसृष्टि की जागनी होगी।

इन दसों उमत खासी चली, दुनी चली तीस भए जब।
पुल-सरात सत्तर कहे, पोहोंची आखिर फरिस्तों तब।। १७ ।।

ग्यारहवीं सदी के इन दस वर्षों में ब्रह्मसृष्टियों को वाणी के उतरने से बहुत आनन्द मिला। बारहवीं सदी के जब तीस वर्ष हुए तो मोमिनों ने वाणी को संसार में फैलाया। इसके बाद सत्तर वर्ष पुलसरात के कहे हैं जो सम्वत् १८४५ तक पूरे होते हैं—इस समय अजाजील फरिश्ता पश्चाताप कर वाणी को ग्रहण करेगा।

पीछे तेरहीं में उठ खड़े, सुख कायम पोहोंचे सब।
आठों भिस्त विवेक सों, हुए नजरों न छूटे अब।। १८ ।।

उसके बाद तेरहवीं सदी में असराफील फरिश्ता कुलजम सरूप की वाणी को जाहिर करके मोमिनों की जागनी करेंगे और फिर सब बहिश्तों के अखण्ड सुख लेंगे। इस तरह से सब दुनियां अपने कर्मों के अनुसार अक्षर की नजर योगमाया में कायम हो जाएगी।

।। प्रकरण ।। ९ ।। चौपाई ।। ३२८ ।।

चौथे सिपारे में लिखी, सो रोसनी मैं दिल में रखी।
जाहेर करों वास्ते उमत, खोलों बातून आई सरत।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि कुरान के चौथे सिपारे में जो लिखा है उसे मैंने अपने दिल में संजोकर रखा है। अब उसके बातूनी रहस्य खोलने का समय आ गया है, इसलिए ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते जाहिर करती हूं।

केतों के मुंह उजले भए, केतों के मुंह काले कहे।
कैयों आकीन कई मुनकर, यों लिख्या होसी आखिर।। २ ।।

चौथे सिपारे में लिखा है कि कयामत के समय में कई के मुख उज्ज्वल होंगे और कई के मुख काले होंगे। कई ईमानदार होंगे, कई बेईमान होंगे।

हक ताला ने किया फुरमान, डांटत हैं कीने कुफरान।
अंजील तौरेत से जो फिरे, सोई काफर हुए खरे।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज ने रास, प्रकास, खटरुती की वाणी भेजी, परन्तु कपट के कारण गादीपति बिहारीजी महाराज ने वाणी जाहिर नहीं होने दी। इस तरह से रास और कलस की वाणी को जिन्होंने नहीं माना, वह पक्के काफिर हैं। बिहारीजी कलस को क्लेश कहते थे।

Nijanand App

काफर दिलमें कीना आनें, अंजील तौरेत पर मारे ताने।
जो खुदाएका पैगंमर, तिनसे फिरे सो हुए काफर।।४।।

रास और कलस की वाणी पर दिल में कपट रखकर व्यंग्य करते थे, ताने मारते थे। श्री राजजी महाराज की कुल्जम सरूप की वाणी लाने वाले स्वयं पारब्रह्म हैं। इनकी वाणी को जिन्होंने नहीं माना, वह काफिर हैं।

जुबां आकीन कयामत न मानें, ऊपर इसलाम के कीना आनें।
उनसे जो हुए मुनकर, सोई गिरो कही काफर।।५।।

जो अपनी जबान से कयामत को नहीं मानते और निजानन्द सम्प्रदाय से कपट रखते हैं तथा श्री श्यामा महारानी (देवचन्द्रजी) के चलाए रास्ते पर नहीं चलते, वही पक्के काफिर हैं।

मुनकर हुकम और कयामत, हुए नाहीं नेक बखत।
फंद माहें हुए गिरफ्तार, भमर हलाकी पड़े कुफार।।६।।

जो कयामत को श्री राजजी का हुकम नहीं मानते, उनको आखिरत के समय अच्छा फल नहीं मिलेगा। वह माया के चक्कर में फंस गए हैं और इसी तरह से चौरासी लाख योनियों में भटकने का रास्ता उनके लिए खुला है।

उस्तुवार न पाई सुंनत, ए जो हुए बदबखत।
सुपेत मुंह कहे मोमिन, पाई राह जमात से तिन।।७।।

ऐसे कठिन समय पर जो श्री प्राणनाथजी के समय पर ईमान लाए और दृढ़ता से खड़े रहे, कयामत के समय उनके मुख उज्ज्वल होंगे और यही मोमिन हैं, जिन्होंने श्री प्राणनाथजी की कुलजम सरूप की वाणी से रास्ता पाया।

नव सदी के आगे रोसन, कह्या होसी भिस्तका दिन।
अरफा आगे रोज भिस्त, जाहेर होसी सबों सरत।।८।।

चौथे सिपारे में लिखा है कि नौवीं सदी के बाद दुनियां को अखण्ड करने का काम शुरू हो जाएगा। अर्फा ईद अर्थात् दसवीं सदी के आगे रसूल साहब ने जो वायदा किया था कि कयामत होगी, उसकी बात सबको जाहिर हो जाएगी।

रूहोंका होसी मिलाप, जो बीच दरगाह के आप।
होसी अल्ला का दीदार, मिलसी तीनों इत सिरदार।।९।।

ग्यारहवीं सदी में परमधाम के रहने वाली रूहों का श्री प्राणनाथजी महाराज से मिलन होगा और मोमिनों को श्री राजजी की पहचान श्री प्राणनाथजी के तन में होगी, जिनके तन में बसरी, मल्की और हकी तीनों सूरत इकट्ठी होंगी।

ए हमेसां हैं भिस्तके, नहीं बराबर कोई इनके।
सुपेत मुंह रहें मस्त, खुदाए की राह पर करी है कस्त।।१०।।

यह मोमिन सदा अखण्ड परमधाम के रहने वाले हैं। इनके बराबर और कोई नहीं है। इनके मुख कयामत के समय उज्ज्वल होंगे। स्वामी श्री प्राणनाथजी के साथ खुदाई रास्ते पर निजानन्द सम्प्रदाय में चलते हुए बड़े कष्ट उठाए हैं।

Nijanand App

जो गुजरया बीच इन सूरत, खबर हुकम हकीकत।
ए जो कही आयत साहेब, सो पढ़ी मैं कहे महंमद।। ११ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज और मोमिनों के बीच जो कुछ बीता है, वह सब इशारों से कुरान में लिखा है। आयतों को श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि मैंने पढ़ा है।

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। ३३९ ।।

ए रोज नाहीं खिलाफ, होसी नव सदी आगूं मिलाप।
कलाम अल्ला का जाहेर नूर, अग्यारे सिपारे का जहूर।। १ ।।

कुरान के ग्यारहवें सिपारे में स्पष्ट लिखा है कि नौवीं सदी के आगे रूहों का मिलन शुरू होगा। इस बात को कोई बदल नहीं सकता।

ए लिख्या वास्ते सबब इन, बदले नेक खूब कारन।
बीच राह हकके एक, तिन नेकोंका बदला नेक।। २ ।।

यह इस कारण से लिखा है कि नेकी का बदला अच्छी तरह से मिलेगा। इस समय श्री राजजी महाराज के स्वरूप श्री प्राणनाथजी महाराज नेक-चलन वालों को अच्छा फल देंगे।

उनसों ज्यादा मिल्या है जित, बोहोतक सवाब लेना है तित।
बोहोतायत बीच यों नबिएं, सो मिसल गाजियों बीच जाहेर किए।। ३ ।।

श्री देवचन्द्रजी श्यामा महारानी से अधिक वाणी श्री प्राणनाथजी को मिली। इसका सबसे अधिक लाभ लेना है। बोहोतायत किताब के अन्दर रसूल साहब ने लिखा है कि उस कुलजम सरूप की वाणी को अर्श की रूहों में श्री प्राणनाथजी जाहिर करेंगे।

तिन पर बंदगी एक करे कोए, सो हजार बंदगियों से नेक होए।
तिनको सवाब बड़ा बुजरक, देवे एही साहेब हक।। ४ ।।

श्री प्राणनाथजी के ऊपर जो एक सिजदा बजाएगा उसको हजार सिजदों का फल मिलेगा। ऐसा बड़ा लाभ देने वाले श्री राजजी के स्वरूप श्री प्राणनाथजी महाराज हैं।

नव सै नब्बे हुए बरस, और नव मास उतरे सरस।
तिनसे दूसरा होए मकबूल, सो ए बंदगियां करे कबूल।। ५ ।।

जब नौ सौ नब्बे वर्ष और नौ महीने मुहम्मद साहब के बाद हुए तब मलकी सूरत श्री श्यामा महारानी देवचन्द्रजी के तन में प्रगट हुए। यही अपने दूसरे तन श्री प्राणनाथजी के अन्दर बैठकर सबकी बन्दगी स्वीकार करेंगे।

सो बकसीस करे सब ए, बदले एक के हजार दे।
इनके बराबर ऐसे कर, कोसिस करे खुदाकी राह पर।। ६ ।।

सभी को उनकी बन्दगी के अनुसार एक के बदले हजार गुना फल देंगे और कोशिश करके सबको खुदा के सच्चे रास्ते निजानन्द सम्प्रदाय पर चलाएंगे। इनके जैसा करने वाला दूसरा कोई नहीं होगा।

Nijanand App

जो गुजरत्या बीच इन सूरत, खबर हुकम हकीकत।
ए जो कही आयत साहेब, सो पढ़ी मैं कहे महंमद।। ११ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज और मोमिनों के बीच जो कुछ बीता है, वह सब इशारों से कुरान में लिखा है। आयतों को श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि मैंने पढ़ा है।

॥ प्रकरण ॥ १० ॥ चौपाई ॥ ३३९ ॥

ए रोज नाहीं खिलाफ, होसी नव सदी आगूं मिलाप।
कलाम अल्ला का जाहेर नूर, अग्यारे सिपारे का जहूर।। १ ।।

कुरान के ग्यारहवें सिपारे में स्पष्ट लिखा है कि नौवीं सदी के आगे रूहों का मिलन शुरू होगा। इस बात को कोई बदल नहीं सकता।

ए लिख्या वास्ते सबब इन, बदले नेक खूब कारन।
बीच राह हकके एक, तिन नेकोंका बदला नेक।। २ ।।

यह इस कारण से लिखा है कि नेकी का बदला अच्छी तरह से मिलेगा। इस समय श्री राजजी महाराज के स्वरूप श्री प्राणनाथजी महाराज नेक-चलन वालों को अच्छा फल देंगे।

उनसों ज्यादा मिल्या है जित, बोहोतक सवाब लेना है तित।
बोहोतायत बीच यों नबिएं, सो मिसल गाजियों बीच जाहेर किए।। ३ ।।

श्री देवचन्द्रजी श्यामा महारानी से अधिक वाणी श्री प्राणनाथजी को मिली। इसका सबसे अधिक लाभ लेना है। बोहोतायत किताब के अन्दर रसूल साहब ने लिखा है कि उस कुलजम सरूप की वाणी को अर्श की रूहों में श्री प्राणनाथजी जाहिर करेंगे।

तिन पर बंदगी एक करे कोए, सो हजार बंदगियों से नेक होए।
तिनको सवाब बड़ा बुजरक, देवे एही साहेब हक।। ४ ।।

श्री प्राणनाथजी के ऊपर जो एक सिजदा बजाएगा उसको हजार सिजदों का फल मिलेगा। ऐसा बड़ा लाभ देने वाले श्री राजजी के स्वरूप श्री प्राणनाथजी महाराज हैं।

नव सै नब्बे हुए बरस, और नव मास उतरे सरस।
तिनसे दूसरा होए मकबूल, सो ए बंदगियां करे कबूल।। ५ ।।

जब नौ सौ नब्बे वर्ष और नौ महीने मुहम्मद साहब के बाद हुए तब मल्की सूरत श्री श्यामा महारानी देवचन्द्रजी के तन में प्रगट हुए। यही अपने दूसरे तन श्री प्राणनाथजी के अन्दर बैठकर सबकी बन्दगी स्वीकार करेंगे।

सो बकसीस करे सब ए, बदले एक के हजार दे।
इनके बराबर ऐसे कर, कोसिस करे खुदाकी राह पर।। ६ ।।

सभी को उनकी बन्दगी के अनुसार एक के बदले हजार गुना फल देंगे और कोशिश करके सबको खुदा के सच्चे रास्ते निजानन्द सम्प्रदाय पर चलाएंगे। इनके जैसा करने वाला दूसरा कोई नहीं होगा।

Nijanand App

खिलाफ राह चलें काफर, दुनियां को देखावें डर।
ए जो सरत कही इस दिन, उस बखत उतरे मोमिन।।७।।

इनके बताए रास्ते से जो उल्टे चलते हैं, वह दुनियां को डर दिखाते हैं (यह इशारा बिहारीजी महाराज पर है)। यह वही समय है जब मोमिनों को पहचान होगी।

होए आवाज लड़ाई बखत, तिस पर मोमिन करें कस्त।
कस्त करें सब आरब, ए आयत उतरी हैं तब।।८।।

कुरान में लिखा है कि रूह अल्लाह जब दज्जाल को मारेंगे तो संसार में बड़ा शोर-शराबा होगा। इसका बातूनी अर्थ है कि जब श्यामा महारानी अपने दूसरे तन श्री मेहराज ठाकुर के अन्दर बैठकर कुलजम सरूप की वाणी जाहिर करेंगी तो वाणी गूंज उठेगी और मोमिन कुर्बानी देंगे तब अति अधिक कष्ट उठाएंगे और उसी समय ईश्वरीसृष्टि भी इनके साथ कष्ट उठाएंगी। ऐसा ही फुरमान खुदा की तरफ से आया, जो लिखा है।

ना रवा मोमिन ना चाहें, घर छोड़ बाहेर लड़ने को जाएं।
होए सेहेर उजाड़ बखत सोए, खाने पीने की ढील होए।।९।।

मोमिन कभी भी लड़ें-झगड़ेंगे नहीं। उनको बाहर की लड़ाई लड़ने का हुकम नहीं है। वह अपने शरीर के अन्दर गुण, अंग इन्द्रियों से लड़ते हैं। कुरान में लिखा है कि जब रूह अल्लाह शैतान को मारेंगे तो शहर उजाड़ हो जाएंगे और खाने-पीने तक को नहीं मिलेगा, अर्थात् सब दुनियां वाले धर्म का रास्ता छोड़कर शहर के बाजारों में नाच, गाना, नाटक, तमाशा, हंसी, ठिठोली, निंदा, चुगली, दंगा, फसाद, मार-पीट में रुचि लेंगे और दुनियां वाले शरीर का आहार मेवा, मिष्ठान में ही रुचि रखेंगे, मन्दिर उजड़ जाएंगे, अर्थात् आत्मा का आहार कहीं नहीं मिलेगा। जहां वाणी की चर्चा होगी वहां नहीं जाएंगे। जहां मन्दिर में खाने को मिलेगा, वहां पहुंच जाएंगे।

जब पोहोंचे एह सरत, बाहेर न जाना तिन बखत।
हर एक जमात बोहोत मेला, हर इन की सों मुराद किबला।।१०।।

खुदा ने मोमिनों को आदेश दिया है कि जब सारे संसार में इसका वातावरण धर्म के विपरीत बन जाए उस समय दूसरे को समझाने बाहर नहीं जाना, क्योंकि सब धर्म सम्प्रदाय वालों की भीड़ इकट्ठी होगी और सभी कह रहे होंगे कि हम ही सबकी इच्छा पूरी करेंगे और हम ही परमात्मा के पास पहुंचाने वाले हैं।

जिन सिर कह्या वह गाम, तिन छोड़ न जाए लड़ाई काम।
बाकी लोक पीछे जो रहे, जब वह तलब दानाई चहे।।११।।

जो परमधाम के रहने वाले मोमिन हैं, वह अपने धर्म का रास्ता छोड़कर दुनियां वालों से लड़ने नहीं जाएंगे। बाकी संसार के लोग जो पीछे रहेंगे, वह केवल अपनी चतुराई की चिन्ता करेंगे। अपनी चतुराई से लड़ना चाहेंगे।

जो कोई गामके हैं, तिनको इलम दीनका कहे।
सवा नव बरस दसमी के बाकी, इत थें मजकूर भई है ताकी।।१२।।

जो कोई परमधाम के रहने वाले हैं, उनके वास्ते कुलजम सरूप की वाणी कही है। जिस की शुरूआत दसवीं सदी में जब सवा नौ वर्ष बाकी थे, सम्वत् १६३८ से (लीला) हुई।

।। प्रकरण ।। ११ ।। चौपाई ।। ३५१ ।।

Nijanand App

कुरान तफसीर जो हुसेनी, बुजरक एह पेड़से केहेनी।
मरद तीनों पर है मुद्दार, जो कलाम अल्ला कहे सिरदार।। १ ।।

हुसेन साहब ने जो कुरान का टीका किया है, उसे सबसे श्रेष्ठ कहा गया है। उसके अनुसार कुरान में लिखा है कि कयामत का मुद्दा (आधार) बसरी, मलकी और हकी तीन स्वरूपों के ऊपर है।

ए तीनों सूरत हैं एक, सो रसूल तीनों सरूप विसेक।
सब नामों बुजरकी लिखी जित, मगज खुलें सब देखोगे तित।। २ ।।

यह बसरी, मलकी और हकी तीनों एक ही स्वरूप हैं। तीनों की काम से अलग-अलग महिमा कही है। जब इसके बातूनी भेद खुलें, तो जानकारी मिली।

ल्याए फुरमान केहेलाए रसूल, पर ताए खुले जाए खिताब मूल।
ए इलम ले रूह अल्ला आया, खोल माएने इमाम केहेलाया।। ३ ।।

कुरान लाने के कारण (मुस्तफा बेग सपुत्र श्री अब्दुल्ला पाण्डे) रसूल की उपाधि मिली। कुरान के रहस्यों को खोलने की पदवी इमाम मेंहेंदी का खिताब श्री इन्द्रावतीजी श्री मेहराज ठाकुर के तन को मिला। तारतम ज्ञान की कुंजी लाने से श्यामा महारानी को मलकी स्वरूप कहा है।

दसमी के सवा नव बरस, ता दिन पैदा सरूप सरस।
पीछे जो तीसरा हुआ तमाम, वह चांद ए सूरज आखिरी इमाम।। ४ ।।

दसवीं सदी में जब सवा नौ वर्ष बाकी थे, अर्थात् सम्वत् १६३८ में श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी के तन में प्रगटे। उनके बाद तीसरे हकी स्वरूप इमाम मेंहेंदी के नाम से जाहिर हुए। कुरान में मलकी स्वरूप को चन्द्रमा कहा और हकी स्वरूप को सूर्य करके कहा है।

कहों कुरान देखियो अंदर, पट उड़ाऊं आड़ा अंतर।
उस ईसे पीछे जो उस्तुवारी, सो तो कायदे खुदा के सिफत सारी।। ५ ।।

कुरान के इन रहस्यों को आत्मदृष्टि से देखना। जाहिरी नजर का ही तुम्हारे ऊपर परदा है। जिसे मैं समाप्त कर देती हूं। रूह अल्लाह श्री देवचन्द्रजी के बाद दीन के रास्ते पर दृढ़ता के साथ चलने वाले श्री प्राणनाथजी महाराज हैं, जिनकी सिफत खुदा के समान कही है, अर्थात् वह खुद खुदा हैं।

बुनियाद रसूल सोई आखिरी, ए सिफत सारी इनकी करी।
इन इमाम औलाद जो यार, पाक दरुद करे हुसियार।। ६ ।।

दीन की शुरूआत में कुरान लेकर आए, तो रसूल मुहम्मद कहलाए। आखिर में जो उसी के ही छिपे रहस्यों को जाहिर किया तो हकी स्वरूप इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी कहलाए। इसी तरह से सभी जगह श्री प्राणनाथजी की ही महिमा है। इस इमाम मेंहेंदी की औलाद या यार को ही मोमिन कहा है। जो अपने पाक-साफ दिल से सिजदा बजाते हैं।

एक से इसारत दूसरे, बिलंद अस्थाने खुसखबरे।
इन देहरी की सब चूमसी खाक, सिरदार मेहेरबान दिल पाक।। ७ ।।

एक स्वरूप श्री श्यामा महारानी (देवचन्द्रजी) से दूसरे स्वरूप श्री प्राणनाथजी की महिमा अधिक है। श्री प्राणनाथजी महाराज ने महान स्थान अखण्ड परमधाम के पच्चीस पक्ष की खुशखबरी मोमिनों को दी। यह सारी दुनियां के मालिक हैं और सब पर मेहरबान हैं। उनका स्थान श्री पद्मावतीपुरी धाम श्री गुम्मटजी मन्दिर है। जहां उनकी देहरी पर सब दुनियां आकर सिजदा करेगी।

Nijanand App

आगे चलने की निसानी, पातसाह नजीक दरगाह पेहेचानी।
मिल्या कह्या मुलक पातसाही, सो खासी गिरो रूहें दरगाही।। ८ ।।

यह सारी दुनियां के मालिक (बादशाह) हैं और परमधाम चलने का सबसे नजदीक रास्ता बताते हैं जो परमधाम की खासलखास रूह मोमिन हैं उनके मेले में इनकी ही साहेबी है।

उतपन अपनी बड़ी दौलत, औलाद यार दोऊ बाजू उमत।
बड़े साहेब की ए पातसाही, जाहेर हुआ खंभ खुदाई।। ९ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज अपने अखण्ड परमधाम का खजाना कुलजम सरूप की वाणी साथ लाकर जाहिर हुए। इनके एक तरफ ब्रह्मसृष्टि, दूसरी तरफ ईश्वरीसृष्टि की जमात है। इस जमात के अन्दर श्री प्राणनाथजी श्रीजी साहब और बादशाह कहलाते हैं। जैसे शरीर में रीढ़ की हड्डी खम्भा होता है, इसी तरह से यह निजानन्द सम्प्रदाय के खुदाई थंभ हैं। यह खुदाई थंभ के रूप में जाहिर हुए।

जिनमें हुकम किया इसलाम दीन, दौलत दई सबों आकीन।
मोती कह्या डब्बे बुजरक, उतहीं का सितारा हक।। १० ।।

श्री राजजी महाराज ने अपने हुकम से दीन की दौलत कुलजम सरूप की वाणी दी, जिससे सभी के यकीन पक्के होते हैं। परमधाम में रंग महल को डिब्बा कहा है और उसके अन्दर मूल-मिलावा में बैठे मोमिनों को कुरान में मोती कहा है। इन मोतियों में श्री प्राणनाथजी चमकते सितारे हैं।

दबदबे का रोसन सूर, मेहेरबानगी साया खुदाए का नूर।
ए सारे जो कहे निसान, सो पावे हादी से होए पेहेचान।। ११ ।।

श्री प्राणनाथजी की कुलजम सरूप की वाणी सूर्य के समान सब धर्मों के ऊपर सच्चाई का दबदबा है और सदा श्री राजजी महाराजजी की श्री प्राणनाथजी के ऊपर छत्र-छाया और पूरी मेहरबानी है। जब इनके स्वरूप की पहचान हो जाएगी तो सबको सब ग्रन्थों के छिपे रहस्य खुल जाएंगे।

सिरदार अस्वार इज्जत मैदान, आली सेर इन दरगाह का जान।
इन पातसाह ऐसा जमाना, बकसीस चाहे बखत की पना।। १२ ।।

सम्वत् १७३५ में हरिद्वार में सभी धर्माचार्यों के बीच आप सबके सिरदार माने गए। अखण्ड परमधाम के ज्ञान के लिए यह शेर के समान हैं। सारी दुनियां के इतने बड़े बादशाह हैं कि कयामत के समय सबको अपने चरणों में लेकर अखण्ड मुक्ति प्रदान कर बहिश्तें देंगे।

इन गुलजारी की खुसबोए, रोसन होवे दिल रूह दोए।
सब दुनियां में अकल इन, करे पसारा एक रोसन।। १३ ।।

इस कुलजम सरूप की वाणी की पहचान से दिल और आत्मा दोनों को चैन और करार मिलता है। सारी दुनियां के धर्मग्रन्थों में इनकी कुलजम सरूप की वाणी ही सच्चे ज्ञान की रोशनी दे रही है।

चांद सूरज दोऊ कही दौलत, मिने चार बिलंदी और मिलत।
जबराईल रोसन वकील, बुध नूर की असराफील।। १४ ।।

चांद के स्वरूप श्यामा महारानी मलकी स्वरूप श्री देवचन्द्रजी, सूर्य स्वरूप हकी सूरत इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी तन के अन्दर बैठी हैं। चार महान शक्तियां इनके साथ हैं। एक जबराईल फरिश्ता जो वकील का काम करता है। इसी के साथ अक्षर की बुद्धि असराफील है।

Nijanand App

रूहअल्ला ईसे का नूर, महंमद हुकम सदा हजूर।
ए इमाम की सब कही सिफत, मोमिन मुतकी दोऊ साथें उमत।। १५ ।।

तीसरा रूह अल्लाह का नूरी ज्ञान तारतम है। चौथे श्री राजजी महाराज के हुकम के स्वरूप रसूल साहब अन्दर बैठे हैं, अर्थात् जबराईल, असराफील, रूह अल्लाह और हुकम रसूल मुहम्मद चारों की शक्तियां अन्दर बैठी हैं। ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरी की दोनों जमातें इनके साथ हैं।

ढूंढेंगे हरघड़ी मरतबा, दुनियां सिर रसूल दबदबा।
बिलंद दुनियां का हुआ आसमान, होए चाह्या मरतबा पावे पेहेचान।। १६ ।।

हर धर्मग्रन्थों में श्री प्राणनाथजी की सिफत कहां की है उसको ढूंढते हैं। यही आखिरी स्वरूप श्री प्राणनाथजी महाराज की दुनियां के ऊपर सत्ता होगी। जो दुनियां वाले अखण्ड मुक्ति चाहते हैं, उनको इस स्वरूप की पहचान होने पर ही बहिश्तें (अखण्ड मुक्ति) मिलेंगी।

इन सरूप पर खुदाए का प्यार, दोनों जहान का खबरदार।
पाया साहेब थें नेक बखत, दोऊ जहान बुजरकी पावे इत।। १७ ।।

श्री प्राणनाथजी के ऊपर श्री राजजी महाराज का पूर्ण प्यार है और हिन्दू-मुसलमान दोनों को उनके ग्रन्थों से समझाकर सच्चा रास्ता परमधाम का दिखाते हैं। कयामत में सबका हिसाब कर अखण्ड मुक्ति देने का अधिकार श्री राजजी महाराज ने इनको दिया है। यह दोनों हिन्दू-मुसलमान इनके द्वारा ही अखण्ड मुक्ति (बहिश्तों की कायमी) इनके हस्त कमलों से प्राप्त करेंगे।

सब रोसनाई तमामियत, पाई बुजरकी कर कर कस्त।
ल्याया मुंह सब किताब, नजर चारों पर खुली सिताब।। १८ ।।

सारे संसार को अखण्ड करने की साहेबी इन्होंने बड़ी कुर्बानी देकर विरह के अन्दर गुण, अंग, इन्द्रियों को बड़े कष्ट के साथ वश में करने से प्राप्त की। इनके द्वारा रास, प्रकास, खटरुती और कलस चार किताबों का ज्ञान आया।

जवेर बयान तोहफे हुकम, चार जिलदों पर दई खसम।
तलब पाकी की पकड़ी, तरतीब तमामियत पाई बड़ी।। १९ ।।

इन चारों किताबों के ऊपर श्री राजजी महाराज ने अपने हुकम से तोहफा (उपहार) के रूप में सनंध की किताब की बख्शीश की, जिसके ज्ञान को बड़ी मजबूती के साथ कायम किया (पकड़ रखा) और तब जागनी का काम करने की दृढ़ता मन में ली।

पेहेली जिलद तमामियत, ले हाथ बिलंद पनाह पोहोंचत।
कबूलियत पाई है जित, बोहोत साथ मिलावत।। २० ।।

कुरान की पहली किताब सनंध मिलने से कुरान के सारे रहस्य खुल गए, जिससे प्रारम्भ से लेकर ब्रह्माण्ड कायम (अखण्ड) करने तक की पूरी जानकारी मिल गई। इससे सारी दुनियां को अखण्ड मुक्ति प्रदान करने का अधिकार मिल गया, जिससे सारे सुन्दरसाथ को अब बुला रहे हैं।

Nijanand App

लिखना बाकी जिलदका है, सो तले तरजुमें लिखना कहे।
जुदियां कर मिलाइयां जंजीर, सो कौन पावे बिना महंमद फकीर।। २१ ।।

किरंतन की बाकी वाणी सनंध के बाद लिखने का काम बाकी है। इसे किरंतन किताब में प्रसंग से प्रसंग मिलाकर किताब लिखी। इतना बड़ा काम इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के बिना कौन कर सकता है?

पेहेली तारीख पाई बुजरक, मेहेरम थे तिन पाया हक।
इत थें बरस सत्तानवें, तित दूजे जामें जाहेर भए।। २२ ।।

पहले देवचन्द्रजी के तन में आए। तब श्यामा महारानी कहलाए। उनके सत्तानवे साल बाद (सम्वत् १७३५ में) दूसरे जामा में श्री प्राणनाथजी जाहिर हुए (१६३८ से १७३५ तक सत्तानवे वर्ष पूरे होते हैं)।

गैब आवाज हुई इसारत, उतरी इलाही इन सरत।
आठ महीने हुए तिन पर, तब पेहेली किताब भई मयसर।। २३ ।।

मेरता में कलमे से इशारत मिली और फिर अनूपशहर जाते समय सनंध उतरी। आठ महीने तक दिल्ली में औरंगजेब को सन्देश देने के लिए मोमिनों ने युद्ध किया।

ए जो आलम जात खुदाई, गरीबी परेसानी बंदों पर आई।
आगे हुसेन किया बयान, वास्ते रसूल हाथ फुरमान।। २४ ।।

यह जो हक जात मोमिन हैं, औरंगजेब को इमाम मेंहेंदी के आने का सन्देश देने में मोमिनों को बड़े कष्ट उठाने पड़े। हुसैन साहब ने आगे तफसीर हुसैनी में लिखा है कि इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज के पास ही कुरान का पूरा ज्ञान है, जिससे सारे छिपे रहस्य आप खुद खोलेंगे।

ए दूजे जामे की कही, तहां पांच बुजरकी भेली भई।
आगे दिन केहेने कयामत, सोई खोलों मैं हकीकत।। २५ ।।

रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी के दूसरे जामें में इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के तन में पांच बड़ी शक्तियां इकट्ठी हुईं। श्री धनीजी का जोश, श्यामा महारानी, अक्षर की आत्म, जागृत बुद्धि तथा हुकम इकट्ठे हुए आगे कयामत की बातें कहनी हैं, जिसकी हकीकत मैं आगे कहती हूं।

॥ प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ ३७६ ॥

ए सिपारे पेहेले की कही, जंजीर सोलमें की मिलाऊं सही।
तहां लिख्या है इन अदाए, बिना देखाए समझी न जाए।। १ ।।

कुरान के पहले सिपारे में लिखे बयान को सोलहवें सिपारे की चौपाइयां मिलाकर कहती हूं। उसमें इस तरह से लिखा है। जिसे देखे बिना बात समझ में नहीं आती। इन सिपारों में जिकरिया पैगम्बर का किस्सा लिखा है, जो बातूनी में श्री देवचन्द्रजी के ऊपर घटता है।

न था मैं परवरदिगार मेरे, बीच साहेब याद तेरे।
कायदा उमेद गया सब भूल, मुझ ऐसे की दुआ करी कबूल।। २ ।।

श्री देवचन्द्रजी महाराज (श्यामा महारानी) श्री राजजी से कह रहे हैं, हे धाम धनी! मैं संसार में आकर आपको याद करते-करते सभी उम्मीदें भूल गई थी। फिर भी आपने मेरी विनती को स्वीकार किया और मुझे नजरी बेटा मेहराज ठाकुर दिया।

Nijanand App

लिखना बाकी जिलदका है, सो तले तरजुमें लिखना कहे।
जुदियां कर मिलाइयां जंजीर, सो कौन पावे बिना महंमद फकीर।। २१ ।।

किरंतन की बाकी वाणी सनंध के बाद लिखने का काम बाकी है। इसे किरंतन किताब में प्रसंग से प्रसंग मिलाकर किताब लिखी। इतना बड़ा काम इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के बिना कौन कर सकता है?

पेहेली तारीख पाई बुजरक, मेहेरम थे तिन पाया हक।
इत थें बरस सत्तानवें, तित दूजे जामें जाहेर भए।। २२ ।।

पहले देवचन्द्रजी के तन में आए। तब श्यामा महारानी कहलाए। उनके सत्तानवे साल बाद (सम्वत् १७३५ में) दूसरे जामा में श्री प्राणनाथजी जाहिर हुए (१६३८ से १७३५ तक सत्तानवे वर्ष पूरे होते हैं)।

गैब आवाज हुई इसारत, उतरी इलाही इन सरत।
आठ महीने हुए तिन पर, तब पेहेली किताब भई मयसर।। २३ ।।

मेरता में कलमे से इशारत मिली और फिर अनूपशहर जाते समय सनंध उतरी। आठ महीने तक दिल्ली में औरंगजेब को सन्देश देने के लिए मोमिनों ने युद्ध किया।

ए जो आलम जात खुदाई, गरीबी परेसानी बंदों पर आई।
आगे हुसेन किया बयान, वास्ते रसूल हाथ फुरमान।। २४ ।।

यह जो हक जात मोमिन हैं, औरंगजेब को इमाम मेंहेंदी के आने का सन्देश देने में मोमिनों को बड़े कष्ट उठाने पड़े। हुसैन साहब ने आगे तफसीर हुसैनी में लिखा है कि इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज के पास ही कुरान का पूरा ज्ञान है, जिससे सारे छिपे रहस्य आप खुद खोलेंगे।

ए दूजे जामे की कही, तहां पांच बुजरकी भेली भई।
आगे दिन केहेने कयामत, सोई खोलों मैं हकीकत।। २५ ।।

रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी के दूसरे जामें में इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के तन में पांच बड़ी शक्तियां इकट्ठी हुईं। श्री धनीजी का जोश, श्यामा महारानी, अक्षर की आत्म, जागृत बुद्धि तथा हुकम इकट्ठे हुए आगे कयामत की बातें कहनी हैं, जिसकी हकीकत मैं आगे कहती हूं।

।। प्रकरण ।। १२ ।। चौपाई ।। ३७६ ।।

ए सिपारे पेहेले की कही, जंजीर सोलमें की मिलाऊं सही।
तहां लिख्या है इन अदाए, बिना देखाए समझी न जाए।। १ ।।

कुरान के पहले सिपारे में लिखे बयान को सोलहवें सिपारे की चौपाइयां मिलाकर कहती हूं। उसमें इस तरह से लिखा है। जिसे देखे बिना बात समझ में नहीं आती। इन सिपारों में जिकरिया पैगम्बर का किस्सा लिखा है, जो बातूनी में श्री देवचन्द्रजी के ऊपर घटता है।

न था मैं परवरदिगार मेरे, बीच साहेब याद तेरे।
कायदा उमेद गया सब भूल, मुझ ऐसे की दुआ करी कबूल।। २ ।।

श्री देवचन्द्रजी महाराज (श्यामा महारानी) श्री राजजी से कह रहे हैं, हे धाम धनी! मैं संसार में आकर आपको याद करते-करते सभी उम्मीदें भूल गई थी। फिर भी आपने मेरी विनती को स्वीकार किया और मुझे नजरी बेटा मेहराज ठाकुर दिया।

Nijanand App

तुम कबूल मैं तरबियत पाई, खसलत तुमारी इनमें आई।
भी देखो तुम एह वचन, हजरत ईसे जो कहे रोसन।।३।।

श्री श्यामा महारानी (देवचन्द्रजी) कह रही हैं, हे राजजी महाराज! आपने मेरी विनती स्वीकार कर ली, इसलिए मुझे खुशी हुई। आपके सारे गुण मेरे बेटे मेहराज ठाकुर में आ गए हैं (प्राणनाथजी में)। हे सुन्दरसाथजी! हजरत ईसा (श्यामा महारानी) श्री देवचन्द्रजी कहते हैं, इन पर विचार करो।

तेहेकीक मुझको है ए डर, खलक अपनी जो है हाजर।
पीछे मेरे मोहीम खैरात, जो वर पाए करे दीन की बात।।४।।

श्री श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) श्री राजजी से विनती करते हैं, मुझे इनसे डर लगता है कि मेरी जाहिरी औलाद जो बिहारीजी हैं, मेरे मरने के बाद दीन धर्म (निजानन्द सम्प्रदाय) का प्रचार-प्रसार नहीं कर सकेंगे।

पातसाही मेरी बीच उमत, कबूल करने को बजाए ल्यावत।
पीछे मेरे मौत के कहे हजरत, चाहिए खलीफा इस बखत।।५।।

श्री श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) श्री राजजी से कह रहे हैं, मुझे एक ऐसा खलीफा दो जो मरने के बाद दीन की बागडोर सम्भाल सके और मेरे मोमिनों के वास्ते जो आपने हुकम कर रखा है, उसे पूरा करे।

ना जननेवाली मेरी औरत, अठानवे बरसकी मजल है इत।
और बस बकस ना कर, नजीक तेरे तेहेकीक मुकरर।।६।।

श्री श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) श्री राजजी से कह रहे हैं कि उम्र ढलकर अट्ठानवे वर्ष की हो गई है और ऐसा खलीफा पैदा करने की ताकत अब मेरे में नहीं रह गई है। (यह अट्ठानवे वर्ष सम्वत् १६३८ से मन्दसौर में पूरे होते हैं) मुझे कुछ मत दो, केवल एक लड़का दो। यह अब तुम्हारे वश की बात है।

फरजंद मेरे ऐसा होए, साहेब दीन हुकम का सोए।
लेवे मीरास इमामत, लेवे मुझ से हकीकत।।७।।

जिकरिया (श्री श्यामा महारानी देवचन्द्रजी) कह रहे हैं कि लड़का ऐसा देना जो दीन धर्म का काम करे और मेरे हुकम से चले और मेरे से आपकी न्यामत लेकर मेरे अधिकार भी ले ले।

एह मीरास कही मिलकत, इलम की लेवे हिकमत।।८।।

बारह हजार मोमिन ही खुदाई मिल्कियत है और इनको ही दीन का वारिस कहा है। इन भूले मोमिनों को जागृत करने के लिए तारतम का ज्ञान मेरे से ले ले।

।। प्रकरण ।। १३ ।। चौपाई ।। ३८४ ।।

औलाद याकूब कह्या इस्हाक, इनों का कबीला है पाक।
पेहेले कही एही मजकूर, और बिध लिखी कर रोसन नूर।।१।।

कुरान के अन्दर इसहाक का लड़का याकूब कहा है। बातूनी में देवचन्द्रजी महाराज इसहाक हैं। मेहराज ठाकुर याकूब हैं। इनका कबीला बारह हजार मोमिन हैं जो पाक-साफ हैं। पहले प्रकरण में यह बात कही है। अब दूसरे तरीके से इसे जाहिर करती हूं।

Nijanand App

तुम कबूल मैं तरबियत पाई, खसलत तुमारी इनमें आई।
भी देखो तुम एह वचन, हजरत ईसे जो कहे रोसन।। ३ ।।

श्री श्यामा महारानी (देवचन्द्रजी) कह रही हैं, हे राजजी महाराज! आपने मेरी विनती स्वीकार कर ली, इसलिए मुझे खुशी हुई। आपके सारे गुण मेरे बेटे मेहराज ठाकुर में आ गए हैं (प्राणनाथजी में)। हे सुन्दरसाथजी! हजरत ईसा (श्यामा महारानी) श्री देवचन्द्रजी कहते हैं, इन पर विचार करो।

तेहेकीक मुझको है ए डर, खलक अपनी जो है हाजर।
पीछे मेरे मोहीम खैरात, जो वर पाए करे दीन की बात।। ४ ।।

श्री श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) श्री राजजी से विनती करते हैं, मुझे इनसे डर लगता है कि मेरी जाहिरी औलाद जो बिहारीजी हैं, मेरे मरने के बाद दीन धर्म (निजानन्द सम्प्रदाय) का प्रचार-प्रसार नहीं कर सकेंगे।

पातसाही मेरी बीच उमत, कबूल करने को बजाए ल्यावत।
पीछे मेरे मौत के कहे हजरत, चाहिए खलीफा इस बखत।। ५ ।।

श्री श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) श्री राजजी से कह रहे हैं, मुझे एक ऐसा खलीफा दो जो मरने के बाद दीन की बागडोर सम्भाल सके और मेरे मोमिनों के वास्ते जो आपने हुकम कर रखा है, उसे पूरा करे।

ना जननेवाली मेरी औरत, अठानवे बरसकी मजल है इत।
और बस बकस ना कर, नजीक तेरे तेहेकीक मुकरर।। ६ ।।

श्री श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) श्री राजजी से कह रहे हैं कि उम्र ढलकर अट्ठानवे वर्ष की हो गई है और ऐसा खलीफा पैदा करने की ताकत अब मेरे में नहीं रह गई है। (यह अट्ठानवे वर्ष सम्वत् १६३८ से मन्दसौर में पूरे होते हैं) मुझे कुछ मत दो, केवल एक लड़का दो। यह अब तुम्हारे वश की बात है।

फरजंद मेरे ऐसा होए, साहेब दीन हुकम का सोए।
लेवे मीरास इमामत, लेवे मुझ से हकीकत।। ७ ।।

जिकरिया (श्री श्यामा महारानी देवचन्द्रजी) कह रहे हैं कि लड़का ऐसा देना जो दीन धर्म का काम करे और मेरे हुकम से चले और मेरे से आपकी न्यामत लेकर मेरे अधिकार भी ले ले।

एह मीरास कही मिलकत, इलम की लेवे हिकमत।। ८ ।।

बारह हजार मोमिन ही खुदाई मिल्कियत है और इनको ही दीन का वारिस कहा है। इन भूले मोमिनों को जागृत करने के लिए तारतम का ज्ञान मेरे से ले ले।

।। प्रकरण ।। १३ ।। चौपाई ।। ३८४ ।।

औलाद याकूब कह्या इस्हाक, इनों का कबीला है पाक।
पेहेले कही एही मजकूर, और बिध लिखी कर रोसन नूर।। १ ।।

कुरान के अन्दर इसहाक का लड़का याकूब कहा है। बातूनी में देवचन्द्रजी महाराज इसहाक हैं। मेहराज ठाकुर याकूब हैं। इनका कबीला बारह हजार मोमिन हैं जो पाक-साफ हैं। पहले प्रकरण में यह बात कही है। अब दूसरे तरीके से इसे जाहिर करती हूं।

Nijanand App

ए जो मिलाइयां हैं जंजीर, सो जुदे कर देऊं खीर और नीर।
एही अगली फेर और बिध लिखी, सोई समझी चाहिए दिल में रखी।। २ ।।

कुरान की जंजीरें मिलाकर माया और ब्रह्म, झूठ और सत्य को अलग-अलग करके बताती हूं। यह हकीकत पहले भी लिखी है। अब दूसरे तरीके से बताती हूं। इसे भी दिल में रखना।

भेद न पाइए बिना तफसीर, ए दई सिच्छा महंमद फकीर।
खासा मुरीद ए जब भया, बेटा नजरी एहिया को कह्या।। ३ ।।

इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने कहा है कि कुरान के रहस्य तफसीरे हुसैनी के बिना समझ में आते नहीं हैं। इसहाक पैगम्बर का जब एहिया चेला बना तो उसे ही इसहाक का नजरी बेटा कहा है।

ईसा को कर गाया खसम, कलाम अल्ला ताए कही हुरम।
कुरान किताबें जिकर किया, नाम लिख्या ताको जिकरिया।। ४ ।।

एहिया ने रूह अल्लाह को खुदा के समान मान लिया, जबकि कुरान में उनको खुदा की अंगना श्री श्यामाजी कहा है। कुरान में लिखा है कि जिकरिया पैगम्बर ने बेटे के वास्ते बार-बार प्रार्थना की। इस वास्ते उसका नाम जिकरिया हुआ।

जो बेटा नसली ईसे का था, सो कलाम अल्ला कहे जुदा रह्या।
इन बिध केती कहूं जंजीर, कुरान कई भांतों तफसीर।। ५ ।।

ईसा रूह अल्लाह श्री श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी के नसली बेटा बिहारीजी हैं और नजरी बेटा श्री मेहराज ठाकुर हैं। नसली बेटा बिहारीजी दीन-धर्म से अलग रहा। इस तरह से कुरान में कई तरह से बयान लिखा है।

हादिएं इनको ऐसा किया, फरजंद मेरे मुद्दा लिया।
हे परवरदिगार मेरे, कबूल हुआ रजामंदी तेरे।। ६ ।।

जिकरिया खुदा से कह रहे हैं, आपने मेरी दुआ मंजूर की और मेरे जैसे मेरे बेटे एहिया ने धर्म का काम अपने सिर ले लिया, इसलिए कहते हैं कि आपने मेरी अर्ज स्वीकार की, इसलिए मैं आपका ऐहसान-मंद हूं।

अव्वल कौल इनके बेसक, जिनमें राजी होवे हक।
पीछे इसके सिजदे सिर, द्वा करे जारी कर कर।। ७ ।।

जिकरिया कहते हैं कि आपने जो मुझे बेटा दिया है, उसकी वाणी सत्य है। यह ऐसे हैं जिससे आप भी खुश हो जाएंगे। यह मेरा बेटा मेरे मरने के बाद आपके चरणों में ही सिजदा बजाए, ऐसी प्रार्थना रो-रोकर कर रहे हैं।

करम खुदाए का साहेब सिजदे, पोहोंच्या कौल मोंह वायदे।
इन समें सब कबूल करे, एह द्वा दिल सारी धरे।। ८ ।।

जब जबराईल फरिश्ते ने आकर जिकरिया से कहा कि खुदा ने तुम्हारी विनती पर कृपा की है और तुम्हारी मांग के अनुसार ही खुदा ने बेटा देना मंजूर कर लिया है। खुदा तुम्हारी सब विनती को स्वीकार कर गुणवान बेटा देंगे।

Nijanand App

खुसखबरी तोहे जिकरिया, देता हों मैं यों कर कह्या।
ए बेटा तुझे बकसिया, कह्या नाम उसका एहिया।। ९ ।।

फरिश्ते ने जिकरिया से कहा कि तुझे मैं यह खुशखबरी दे रहा हूं। यह बेटा जो तुम्हें खुदा ने दिया है, एहिया होगा।

पैदा किया एहिया को देख, आगूं वह मैं नाम एक।
बीच ल्याए जादलमिसल, भांत बुजरकी नाम नकल।। १० ।।

खुदा ने कहा है कि इस एहिया बेटे को देखो जो तुम्हारे आगे है और वह मेरा ही स्वरूप है। मेरा नाम ही इसका नाम है। यह किस्सा जादल मिसल किताब में लिखा है कि एहिया पैगम्बर को खुदा के समान ही बताया। खुदा ने कहा कि मेरा नाम (प्राणनाथ) ही इसका नाम होगा। मेरी शक्ति और गुण इसके अन्दर होंगे।

आगूं इस के ऐसा नहीं नाम, ना माफक इस के कोई काम।
बोहोत हुए कह्या इन रसम, कोई हुआ न आदमी इन इस्म।। ११ ।।

इस एहिया पैगम्बर के समान पहले कोई पैगम्बर नहीं हुआ और न इसकी तरह किसी ने कोई काम किए जो यह करेगा। पैगम्बर तो बहुत हुए हैं, परन्तु इनके समान कोई भी ऐसा नहीं हुआ।

बल्कि एही है बुजरक, किया खुदाए पैगंमर हक।
ना कछू मेहेतारीने पाले, बापके ना हुए हवाले।। १२ ।।

सबसे बड़ी बात यह है कि इसको पैगम्बर खुदा ने बताया है। संसार में जैसे मां-बाप बच्चों को पालते हैं, वैसे नहीं पाले गए। यह मेहराज ठाकुर बचपन से ही अपने सतगुरु श्री देवचन्द्रजी के चरणों में आ गए।

इमाम सालवी से नकल आई, आगूं इस थें नकल फुरमाई।
पीछे उसके ऐसा चहावे, बुजरकी बीच जहूरके ल्यावे।। १३ ।।

इमाम सालघी ने अपनी किताब में कहा कि जिकरिया के पीछे ऐसे चाहने वाले बुजरक एहिया ही हुए जो सबको ज्ञान दे रहे हैं।

पीछे उसके एते नाम लेवे, खासोंमें खासगी देवे।
भांत भांत नाम जुदे बेसुमार, अपने नामें सब किए उस्तुवार।। १४ ।।

जिकरिया के बाद में एहिया पैगम्बर ब्रह्मसृष्टियों में सिरदार होकर ज्ञान समझाते हैं। खुदा ने इस एहिया पैगम्बर को अपने तरह-तरह के नाम–इमाम मेंहेंदी, श्री प्राणनाथजी, हकी स्वरूप, आदि देकर बड़ी मजबूती से दीन पर खड़ा किया।

आखिर अपने काम मजबूत, ए अरस परस नाम कह्या मेहेमूद।
आखिर बुजरकी महंमद पर आई, खासी उमत महंमदें सराही।। १५ ।।

यह अपने काम पर आगे चलकर बड़ी मजबूती से खड़े हुए। तब खुदा ने कहा कि मेरे और इनके बीच कोई फर्क नहीं है। इस तरह से पूरी बुजरकी आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी महाराज पर आई और उन्होंने अपनी उम्मत की बड़ी सराहना की है।

Nijanand App

इस्म धरेका माएना एह, ऐसी सबी कोई और न देह।
ए तिसवास्ते ऐसा कह्या, गुनाह कस्त कोई जाहेर न भया।। १६ ।।

एहिया मेहराज ठाकुर को खुदा का नाम "प्राणनाथजी" मिला आज दिन तक इस संसार में किसी के तन को ऐसी शोभा (महिमा) नहीं मिली, इसलिए कहा है कि एहिया पैगम्बर से किसी तरह का गुनाह (कसूर) नहीं होगा।

हो साहेब मेरे जिकरिया यों केहेवे, मेरे फरजंद क्यों ऐसा होवे।
मेरी औरत है इन हाली, सो तो नहीं जनने वाली।। १७ ।।

अब फरिश्ता जाकर खुदा से कहता है कि जिकरिया पैगम्बर ने कहलवाया है कि ऐसा गुणवान पुत्र मुझे कैसे मिलेगा? मेरी औरत बहुत बूढ़ी हो गई है। वह बच्चा पैदा नहीं कर सकती।

अब मैं पोहोंच्या उमेद एती, बुजरकी पाइए इनसेती।
ना कछू एती थी खबर, ना देहेसत लई दिल धर।। १८ ।।

जिकरिया कहते हैं कि मैं इस उम्र में पहुंचा हूं, फिर भी लड़के की चाहना करता हूं क्योंकि इस लड़के से दीन इस्लाम को बुजरकी (बड़ाई) मिलेगी। ऐसा मुझे कुछ पता नहीं था। न किसी प्रकार की चिन्ता थी।

मोहे गरीबी और नातवान, ए बड़ाई आपसों हुई पेहेचान।
होए पेहेचान जो मेरी चाहे, बिलंद करने जो कुदरत उठाए।। १९ ।।

जिकरिया कहते हैं, हे मेरे खुदा! मैं तो गरीब और शक्तिहीन हूं। मुझे दीन-धर्म की साहेबी आपसे मिली है। दीन-धर्म की मेरी बादशाही का विस्तार करना चाहें तो तारतम ज्ञान की महिमा को सिर पर उठावें और जागनी का काम करें।

कहे फरिस्ते खुदा के हुकम, ए जिकरिया कह्या जो तुम।
ए बात योंही कर है, बुढ़ापा नातवानी कहे।। २० ।।

फरिश्ते ने खुदा के हुकम से कहा कि तुमने जो कहा है वह बात इसी तरह की है। बुढ़ापा कहा है, वह भी ठीक है। शक्तिहीन कहा, वह बात भी सही है।

ए तेरे खुदाएने कह्या, पैदा करने काम फरजंद का भया।
कह्या बीच इस सिनसे, आसान खुदा के दो सकसोंसे।। २१ ।।

फरिश्ता ने कहा, हे जिकरिया! खुदा ने कहा कि तेरे घर लड़का पैदा करने का हुकम दे दिया है। जिकरिया ने पूछा मुझे पुत्र कब मिलेगा? तो उत्तर मिला कि इसी साल मिलेगा। खुदा के लिए लड़का देने का काम बड़ा आसान है। वह बसरी और मल्की सूरतों को एक तन में इकट्ठा करके तीसरा हकी सूरत पैदा कर देंगे जिसके लिए सारे काम आसान होंगे।

तो सांचा एहिया पैदा किया, नाबूदसेंती बूदमें लिया।
बुजरकी सों खुदाएने कही, जिकरिया फरजंद पोहोंच्या सही।। २२ ।।

फरिश्ता कहता है कि खुदा ने तेरे चाहे अनुसार लड़का देना स्वीकार कर लिया है। जब मेहराज ठाकुर पैदा हुए, तो वह तन तो मिटने वाला था। अब जब श्री देवचन्द्रजी के चरणों में मेहराज ठाकुर आए तो देवचन्द्रजी ने श्री इन्द्रावतीजी की आत्मा परख कर तारतम देकर अखण्ड की पहचान कराई।

Nijanand App

निजानन्द सम्प्रदाय का विस्तार करने के वास्ते खुदा ने इसको बड़ी साहेबी दी है। तुम्हारे चाहने के अनुसार यही एहिया बेटा आया है।

खुसखबरीसों हुआ खुसाल, पेहेले न सुध थी वजूद इन हाल।
ए बात जाहेर न जानी कबे, दूजे फेरे पोहोंचे इन मरतबे।। २३ ।।

जिकरिया पैगम्बर को पहले इस बात की उम्मीद नहीं थी। जब उसे एहिया लड़का मिलने की खबर फरिश्ते ने दी, तो वह बहुत खुश हुए। इस बात को किसी ने कभी जाना नहीं था। यह जब दूसरे जामे (तन) श्री प्राणनाथजी के तन में आए तब इन रहस्यों का पता चला।

कहे जिकरिया साहेब मेरे, किन बिध वाका होसी तेरे।
मेरी निसानी की खबर जेह, मोहे नहीं परत मालूम एह।। २४ ।।

जिकरिया पैगम्बर कहता है, हे मेरे खुदा मैं तुम्हारा एहसान कैसे चुकाऊं? मेरी जो अपनी औलाद गादीपति बिहारीजी हैं, वह यह काम नहीं कर सकती।

कह्या खुदाएने निसानी तेरी, न सकेगा कहे हकीकत मेरी।
मरदों से बात न होवे इन, केहेनी तीन रात और चौथा दिन।। २५ ।।

खुदा ने कहा यह बात ठीक है कि तेरी औलाद गादीपति बिहारीजी मेरी हकीकत को जाहिर नहीं कर सकेगा। मोमिनों से बातें करने की ताकत इसमें नहीं है। यह तेरा लड़का बिहारीजी तीन रात और चौथा दिन की लीला बोल नहीं सकेगा, अर्थात् बृज, रास, जागनी और परमधाम की बात मोमिनों के साथ नहीं कर सकेगा।

ए बेटे नसली की जंजीर, ए पावें गिरो वचिखिन वीर।
लैलत कदर के तीन तकरार, दिन फजरका खबरदार।। २६ ।।

यह तेरे नसली बेटे गादीपति बिहारीजी की हकीकत है। यह ज्ञान की बातें मोमिनों के सिरदार श्री प्राणनाथजी महाराज ही कर सकेंगे। यह लैल तुल कदर के तीन भाग (बृज, रास, जागनी) की बात और फजर का ज्ञान मारफत सागर देकर सबको जगाकर अखण्ड मुक्ति प्रदान करेंगे।

ए क्या जाने फरजंद पैगंमरी, ए खिताब दिया एहिया नजरी।। २७ ।।

तेरा बेटा पैगम्बरी नहीं समझता, इसलिए तेरे नजरी पुत्र एहिया को धर्म का कार्य सौंपा है।

।। प्रकरण ।। १४ ।। चौपाई ।। ४११ ।।

छिपके साहेब कीजे याद, खासलखास नजीकी स्वाद।
बड़ी द्वा माहें छिपके ल्याए, सब गिरोहसों करे छिपाए।। १ ।।

अपने धाम धनी को छिपकर ही रिझाना चाहिए और तभी अपने धनी के नजदीक जाने का स्वाद मिलता है। यह मोमिनों की बन्दगी (चितवन) है। श्री श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी महाराज ने छिपकर बन्दगी की और किसी को जाहिर नहीं होने दिया।

बरस निन्यानवेलों सरम, न करी जाहेर होए के गरम।
बरस निन्यानवे कही द्वरम, साथ ईसाके समझियो मरम।। २ ।।

निन्यानवे वर्ष (सम्वत् १७३७) रामनगर तक होते हैं। वहां तक श्यामा महारानी का दर्जा रहा, ऐसा समझना। आगे जब शेख खिदर के सामने खुद खुदाई का दावा लिया, तो हकी स्वरूप जाहिर हो गए।

Nijanand App

निजानन्द सम्प्रदाय का विस्तार करने के वास्ते खुदा ने इसको बड़ी साहेबी दी है। तुम्हारे चाहने के अनुसार यही एहिया बेटा आया है।

खुसखबरीसों हुआ खुसाल, पेहेले न सुध थी वजूद इन हाल।
ए बात जाहेर न जानी कबे, दूजे फेरे पोहोंचे इन मरतबे।। २३ ।।

जिकरिया पैगम्बर को पहले इस बात की उम्मीद नहीं थी। जब उसे एहिया लड़का मिलने की खबर फरिश्ते ने दी, तो वह बहुत खुश हुए। इस बात को किसी ने कभी जाना नहीं था। यह जब दूसरे जामे (तन) श्री प्राणनाथजी के तन में आए तब इन रहस्यों का पता चला।

कहे जिकरिया साहेब मेरे, किन विध वाका होसी तेरे।
मेरी निसानी की खबर जेह, मोहे नहीं परत मालूम एह।। २४ ।।

जिकरिया पैगम्बर कहता है, हे मेरे खुदा मैं तुम्हारा एहसान कैसे चुकाऊं? मेरी जो अपनी औलाद गादीपति बिहारीजी हैं, वह यह काम नहीं कर सकती।

कह्या खुदाएने निसानी तेरी, न सकेगा कहे हकीकत मेरी।
मरदों से बात न होवे इन, केहेनी तीन रात और चौथा दिन।। २५ ।।

खुदा ने कहा यह बात ठीक है कि तेरी औलाद गादीपति बिहारीजी मेरी हकीकत को जाहिर नहीं कर सकेगा। मोमिनों से बातें करने की ताकत इसमें नहीं है। यह तेरा लड़का बिहारीजी तीन रात और चौथा दिन की लीला बोल नहीं सकेगा, अर्थात् बृज, रास, जागनी और परमधाम की बात मोमिनों के साथ नहीं कर सकेगा।

ए बेटे नसली की जंजीर, ए पावें गिरो वचिखिन वीर।
लैलत कदर के तीन तकरार, दिन फजरका खबरदार।। २६ ।।

यह तेरे नसली बेटे गादीपति बिहारीजी की हकीकत है। यह ज्ञान की बातें मोमिनों के सिरदार श्री प्राणनाथजी महाराज ही कर सकेंगे। यह लैल तुल कदर के तीन भाग (बृज, रास, जागनी) की बात और फजर का ज्ञान मारफत सागर देकर सबको जगाकर अखण्ड मुक्ति प्रदान करेंगे।

ए क्या जाने फरजंद पैगंमरी, ए खिताब दिया एहिया नजरी।। २७ ।।

तेरा बेटा पैगम्बरी नहीं समझता, इसलिए तेरे नजरी पुत्र एहिया को धर्म का कार्य सौंपा है।

।। प्रकरण ।। १४ ।। चौपाई ।। ४११ ।।

छिपके साहेब कीजे याद, खासलखास नजीकी स्वाद।
बड़ी द्वा माहें छिपके ल्याए, सब गिरोहसों करे छिपाए।। १ ।।

अपने धाम धनी को छिपकर ही रिझाना चाहिए और तभी अपने धनी के नजदीक जाने का स्वाद मिलता है। यह मोमिनों की बन्दगी (चितवन) है। श्री श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी महाराज ने छिपकर बन्दगी की और किसी को जाहिर नहीं होने दिया।

बरस निन्यानवेलों सरम, न करी जाहेर होए के गरम।
बरस निन्यानवे कही हुरम, साथ ईसाके समझियो मरम।। २ ।।

निन्यानवे वर्ष (सम्वत् १७३७) रामनगर तक होते हैं। वहां तक श्यामा महारानी का दर्जा रहा, ऐसा समझना। आगे जब शेख खिदर के सामने खुद खुदाई का दावा लिया, तो हकी स्वरूप जाहिर हो गए।

Nijanand App

सो ए ना जननेवाली कही, तलब बेटे की राखे सही।
बूढ़ा ईसा आवाज करे, आस्ती आवाज कोई ना दिल धरे।। ३ ।।

जिकरिया कहता है कि मेरी अब निन्यानवे वर्ष की उम्र हो गई है और बेटे की चाहना बाकी है। बूढ़ा ईसा (श्री देवचन्द्रजी) इतनी कमजोर आवाज से बोलते थे, जिसकी कोई परवाह नहीं करता था।

पांच जिल्दें इन मजलें पाई, तो लों बात करी छिपाई।
जेता कछू केहेता पुकार, सुनने वाला न कोई सिरदार।। ४ ।।

यहां रामनगर तक रास, प्रकास, खटरुती, कलस, सनंध मिल गई थीं। फिर भी अपने खुदाई दावे को छिपाकर रखा, क्योंकि श्री देवचन्द्रजी की धीमी आवाज को सुनने वाला कोई सिरदार नहीं था।

आवाज उनकी थी इन पर, चाहे आप कोई लेवे खबर।
ए सुनियो दूजी विख्यात, दूजे जामेंकी कहूं बात।। ५ ।।

जिकरिया (श्री देवचन्द्रजी) का इल्म इस प्रकार था कि जिसे ज्ञान चाहिए, वह श्री देवचन्द्रजी के पास जाए। अब स्वामीजी कहते हैं कि अब दूसरे जामे अर्थात् मैं अपनी बात करता हूं।

कह्या सुनो मेरे परवरदिगार, धोए हाड़ बुढ़ापे नार।
खंभ में वजूद इन घर, बूढ़े हाड़ सुस्त इन पर।। ६ ।।

जिकरिया पैगम्बर ने (श्री देवचन्द्रजी ने) कहा है कि मेरे खुदा! मेरी बात सुनो। बुढ़ापे ने मुझे कमजोर कर दिया। केवल शरीर में हड्डियां बाकी हैं और इस तन में केवल रीढ़ की हड्डी पर ही यह तन खड़ा है जिससे सभी अंग सुस्त हो गए हैं।

कह्या होवे वजूद तमाम, इन सें भली भांत होवे काम।
जो सिर मेरा हुआ सुपेत, तरफ रोसनी नहीं अचेत।। ७ ।।

जिकरिया पैगम्बर कहता है, हे खुदा! यह शरीर भले बूढ़ा है, परन्तु इससे धर्म का काम अच्छी तरह से हो रहा है। मेरा सिर सफेद जरूर हो गया, परन्तु ज्ञान की रोशनी कम नहीं हुई है।

अंदर ज्वानी है रोसन, काह ज्यों पकड़े अगिन।
उसही झलकार थें मकबूल, बूढ़े रोसनी न गई भूल।। ८ ।।

शरीर के अन्दर ज्ञान की जवानी है। जैसे घास के ढेर को आग जला देती है उसी तरह से ज्ञान की शक्ति से इनकी अर्जी खुदा ने स्वीकार की। बूढ़े होने पर तारतम ज्ञान से कमजोरी नहीं है।

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। ४१९ ।।

ए जंजीर सिपारे सोलमें माहें, बरस सौ की मजल है जांहें।
याद किया माहें कुरान, किस्से इद्रीस की पेहेचान।। १ ।।

कुरान के सोलहवें सिपारे में सौ साल की मंजिल है और इद्रीस पैगम्बर का किस्सा लिखा है।

Nijanand App

सो ए ना जननेवाली कही, तलब बेटे की राखे सही।
बूढ़ा ईसा आवाज करे, आस्ती आवाज कोई ना दिल धरे।। ३ ।।

जिकरिया कहता है कि मेरी अब निन्यानवे वर्ष की उम्र हो गई है और बेटे की चाहना बाकी है। बूढ़ा ईसा (श्री देवचन्द्रजी) इतनी कमजोर आवाज से बोलते थे, जिसकी कोई परवाह नहीं करता था।

पांच जिल्दें इन मजलें पाई, तो लों बात करी छिपाई।
जेता कछू केहेता पुकार, सुनने वाला न कोई सिरदार।। ४ ।।

यहां रामनगर तक रास, प्रकास, खटरुती, कलस, सनंध मिल गई थीं। फिर भी अपने खुदाई दावे को छिपाकर रखा, क्योंकि श्री देवचन्द्रजी की धीमी आवाज को सुनने वाला कोई सिरदार नहीं था।

आवाज उनकी थी इन पर, चाहे आप कोई लेवे खबर।
ए सुनियो दूजी विख्यात, दूजे जामेंकी कहूं बात।। ५ ।।

जिकरिया (श्री देवचन्द्रजी) का इलम इस प्रकार था कि जिसे ज्ञान चाहिए, वह श्री देवचन्द्रजी के पास जाए। अब स्वामीजी कहते हैं कि अब दूसरे जामे अर्थात् मैं अपनी बात करता हूं।

कह्या सुनो मेरे परवरदिगार, धोए हाड़ बुढ़ापे नार।
खंभ में वजूद इन घर, बूढ़े हाड़ सुस्त इन पर।। ६ ।।

जिकरिया पैगम्बर ने (श्री देवचन्द्रजी ने) कहा है कि मेरे खुदा! मेरी बात सुनो। बुढ़ापे ने मुझे कमजोर कर दिया। केवल शरीर में हड्डियां बाकी हैं और इस तन में केवल रीढ़ की हड्डी पर ही यह तन खड़ा है जिससे सभी अंग सुस्त हो गए हैं।

कह्या होवे वजूद तमाम, इन सें भली भांत होवे काम।
जो सिर मेरा हुआ सुपेत, तरफ रोसनी नहीं अचेत।। ७ ।।

जिकरिया पैगम्बर कहता है, हे खुदा! यह शरीर भले बूढ़ा है, परन्तु इससे धर्म का काम अच्छी तरह से हो रहा है। मेरा सिर सफेद जरूर हो गया, परन्तु ज्ञान की रोशनी कम नहीं हुई है।

अंदर ज्वानी है रोसन, काह ज्यों पकड़े अगिन।
उसही झलकार थें मकबूल, बूढ़े रोसनी न गई भूल।। ८ ।।

शरीर के अन्दर ज्ञान की जवानी है। जैसे घास के ढेर को आग जला देती है उसी तरह से ज्ञान की शक्ति से इनकी अर्जी खुदा ने स्वीकार की। बूढ़े होने पर तारतम ज्ञान से कमजोरी नहीं है।

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। ४१९ ।।

ए जंजीर सिपारे सोलमें माहें, बरस सौ की मजल है जांहें।
याद किया माहें कुरान, किस्से इद्रीस की पेहेचान।। १ ।।

कुरान के सोलहवें सिपारे में सौ साल की मंजिल है और इद्रीस पैगम्बर का किस्सा लिखा है।

Nijanand App

बेटा नवासे साहेब का, बाप दादा नूह था।
अबनूस था उसका नाम, इद्रीस लकब कह्या इस ठाम।। २ ।।

अग्रसेन राजा की लड़की का लड़का (दोहता) श्री कृष्ण था। बाप का नाम वसुदेव था। उन श्री कृष्ण का नाम अबनूस लिखा है। रामनगर में आकर श्री प्राणनाथजी महाराज के तन से इद्रीस जैसा काम करने से इद्रीस का खिताब मिला।

ए लकब दिया है सांच कारन, मालूम हुआ वास्ते इन।
अव्वल खत यों लिख्या कलाम, नजूम दरजी पना किया इसलाम।। ३ ।।

इनको इद्रीस का खिताब सब धर्मग्रन्थों से सत्य के ज्ञान को छांटने के कारण मिला। कुरान में इद्रीस के लिए लिखा कि उन्होंने कपड़े के टुकड़े जोड़-जोड़कर चादर बनाई।

तीस वरक हुए नाजल, ऊपर जामें कहे असल।
बीच किताब ल्याए इद्रीस, पीछे आदमके सौ बरीस।। ४ ।।

श्री प्राणनाथजी को अब तक सनंध के तीस प्रकरण उतरे। रामनगर की मंजिल में सौ वर्ष सम्वत् १७३८ पूरे होने पर खुदाई दावा लेकर भिखारीदास और शेख खिदर को कुरान पुराण से अपनी पहचान विजियाभिनन्द बुध और इमाम मेंहेंदी होने की कराई, तो इद्रीस का खिताब मिला।

तेहेकीक वह था कहे खलक, एही सांच कहेगा हक।
पोहोंचाया चौथे आसमान, बीच मेयराज भिस्त पेहेचान।। ५ ।।

जब तक आखिरी इद्रीस श्री प्राणनाथजी जाहिर नहीं हुए, तब तक लोग कहते थे कि इद्रीस पैगम्बर खुदा का सच्चा पैगाम लाने वाला आएगा। अब श्री प्राणनाथजी इमाम मेंहेंदी जाहिर हो गए। उन्होंने मोमिनों को चौथे आसमान परमधाम का ज्ञान दिया, जहां मुहम्मद साहब दर्शन करने (मेयराज की रात में) पहुंचे थे।

पैगंमरकी दरगाह साबित, रसूल इद्रीस फुरमाए मिले इत।। ६ ।।

मुहम्मद साहब के परमधाम में जाकर खुदा से बात करने की बात सत्य हो गई। रसूल ने कहा था आखिर को इद्रीस पैगम्बर आएगा। वह रामनगर में जाहिर हो गए।

|| प्रकरण || १६ || चौपाई || ४२५ ||

कह्या आम सिपारे माहें, अग्यारै सदी लिखी है जांहें।
हुकम हादी के खोलों इसारत, पाइए कौल जाहेर कयामत।। १ ।।

आम सिपारे में लिखा है कि ग्यारहवीं सदी में कयामत होगी। इस कयामत के वायदे को श्री राजजी महाराज के हुकम से मैं खोल देती हूं।

दावा हुआ हजरत के सेती, ए करार बांध्या सरत एती।
नाम हजरत के सेहर कही, अग्यारे गिरह रस्सी पर दई।। २ ।।

रसूल साहब ने कहा कि मेरे हाथ से कयामत जाहिर हो। इस बात की चाहना से यह बात तय हुई कि कयामत होगी। लिखा है यहूदी की एक लड़की ने रसूल साहब के ऊपर जादू किया और बालों की रस्सी में ग्यारह गांठें लगा दीं।

Nijanand App

रस्सी रखी कूएं के माहें, ऊपर पत्थर दिया तांहें।
जबराईलें कही खबर, भेज्या अली कूएं गया उतर।। ३ ।।

रस्सी को कुएं के अन्दर रखकर पत्थर से दबाकर बाहर आई। तब जबराईल फरिश्ता ने बताया कि हे रसूल! तेरे ऊपर यहूदी की लड़की ने जादू किया है। उन्होंने अली को भेजा जो कुएं में उतर गया।

अली रस्सी ल्याया ऊपर, गिरह अग्यारैं सदी हुई नजर।
अग्यारे आयत आई तत्पर, भेजी खुदा ने जबराईल खबर।। ४ ।।

अली रस्सी लेकर ऊपर आया। अब रसूल साहब ने समझा कि कयामत ग्यारहवीं सदी में होगी। उसी समय खुदा ने जबराईल के द्वारा ग्यारह आयतें भेजीं।

इन पढ़ने रसूल खबर भई, हर आयत हर गिरह खुल गई।
उमर रजीअल्ला करी नकल, अजब आयत आई सकल।। ५ ।।

इन आयतों को पढ़ने से ग्यारह गांठें खुल गईं। तब रसूल साहब को ग्यारहवीं सदी में कयामत होगी, इस बात की जानकारी मिली। उनके यार उमर ने इन आयतों को पढ़ा कि यह विचित्र आयतें आई हैं।

वास्ते रद करने को सेहर, खुली गांठें छूटे पैगंमर।
इनसे पनाह पकड़ी मैं, सो तिनकी फजर करी हैं जिने।। ६ ।।

रसूल साहब का जादू टोना हटाने के वास्ते सभी गांठें खुल गईं और रसूल जादू से मुक्त हुए। अब श्री महामतिजी कहते हैं कि इस किस्से से मुझे पता लगा कि फजर ग्यारहवीं सदी के बाद होनी है।

नोट—परमधाम में श्री राजजी महाराज ने मोमिनों तथा श्री श्यामाजी महारानी के ऊपर फरामोशी का परदा (जादू) डाला। रस्सी में ग्यारह गांठें ग्यारहवीं सदी की पहचान कराने वाली हैं। ग्यारहवीं सदी के आखिर में स्वयं जब प्राणनाथजी जाहिर हुए, तो बेसुधी हटी और जागनी शुरू हुई।

फलक चीज केहेते हैं एक, हुआ चाहिए दोऊ देखो विवेक।
महंमद ले उठे उमत खास, सो तो पोहोंचे साहेब विलास।। ७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि कयामत के वक्त आसमान लाल रंग का होता है। विचार करके देखो। नौतनपुरी में श्री श्यामाजी महारानी श्री देवचन्द्रजी आए। चन्द्रमा जैसे उदय हुए। चन्द्रमा उदय होते समय जैसे रंग लाल होता है वैसे ही श्री देवचन्द्रजी का ज्ञान फैला। यह एक फलक (आसमान) है। फिर श्री पद्मावतीपुरी धाम में श्री प्राणनाथजी के मुखारबिन्द से कुलजम सरूप की वाणी का सूर्य उदय हुआ। सूर्य उदय होते समय रंग लाल होता है। इस तरह से कुलजम सरूप की वाणी को सुनने वालें के दिल खुशी से भरे लाल हैं। यह दूसरी फलक (आसमान) है। इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज कुलजम सरूप की वाणी से मोमिनों को जगाकर अखण्ड घर परमधाम ले जाएंगे।

पीछे रह्या जो पत्थर घास, सो इन दुनियां की पैदास।। ८ ।।

महाराजा छत्रसालजी कहते हैं कि पीछे जो बच जाएंगे, वह पत्थर और घास (जीवसृष्टि) हैं। यह चौरासी लाख योनियों में जन्में मरेंगी।

।। प्रकरण ।। १७ ।। चौपाई ।। ४३३ ।।

Nijanand App

सिपारा आम आधा पूरन, फजर मक्कीए सूरत रोसन।
खास उमत आगे करों बयान, ले रोसनी मारो सैतान।। १ ।।

आम सिपारा तीसवां में जहां आधा पूरा होता है, वहां मक्की सूरत में फजर के बारे में लिखा है। अपनी अंगनाओं के वास्ते मैं वर्णन करती हूं। इसके ज्ञान से मोमिन नि:सन्देह होकर भ्रम मिटाएंगे।

सौगंद खाई बीच होनें फजर, द्वा दोस्तों बखत नजर।
फजर बंदगी होसी आराम, जीव दिल पावे इसलाम।। २ ।।

कुरान हदीस में ग्यारहवीं सदी के बीच फजर होने का बयान है, जिसको रसूल साहब ने कसम खाकर लिखा है, इसलिए खुदा के दोस्त मोमिनों का मन खुदा की बन्दगी में लगेगा। फजर की बन्दगी में मोमिनों तथा संसार के जीवों को निजानन्द सम्प्रदाय से अखण्ड सुख मिलेगा।

पेहेला रोज कौल हुरमत, सो हादी देखावे रोज कयामत।
जिस बरस बीच होए फजर, पेहेले जिल्हज थें खुली नजर।। ३ ।।

पहले दिन दसवीं सदी में श्री श्यामाजी महारानी (श्री देवचन्द्रजी) आए, जिससे मोमिनों को ईमान मिला। दूसरे तन में आकर कयामत को जाहिर किया। बारहवीं सदी में फजर होगी। यह बात पहले से ही तारतम ज्ञान से बताई।

ए पेहेले दिन की कही दसमी रात, दसमी सदी बीच आए साख्यात।
इन दसमी से अग्यारमी भई प्रभात, मिले दोस्तों सों करी विख्यात।। ४ ।।

दसवीं सदी को दिन की आखिरी रात कहा है (दसवीं रात)। दसवीं सदी में श्री श्यामाजी महारानी श्री देवचन्द्रजी के तन में प्रगट हुए। ग्यारहवीं सदी में ज्ञान का सवेरा हुआ। कुलजम सरूप की वाणी को श्री प्राणनाथजी महाराज ने मोमिनों में जाहिर किया।

दूसरे सरूप मिल करी कस्त, हाजी मस्कीनों को देखाई वस्त।
कह्या अरफेका अगला दिन, वास्ते अग्यारहीं ईद रोसन।। ५ ।।

दूसरे तन मलकी स्वरूप श्री श्यामाजी महारानी तीसरे हकी स्वरूप श्री प्राणनाथजी के तन से जाहिर हुए और कष्ट उठाकर मोमिनों को अखण्ड परमधाम की पहचान कराई। दसवीं सदी के आगे का दिन ग्यारहवीं सदी में कुलजम सरूप की वाणी आने से बड़ी खुशी हुई।

पढ़ना द्वा वजीफा जित, सब चाह्या हाजियों का हुआ इत।
पाक होवे सबों का दम, तब जाहेर हुई ईद खसम।। ६ ।।

ग्यारहवीं सदी में मोमिन खुदा से विनती करेंगे, ऐसा लिखा है। उनकी सभी कामनाएं पूरी होंगी। जब वाणी से सभी के संशय मिटकर निर्मल हो जाएंगे, तब इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज जाहिर होंगे और सभी को खुशी होगी।

पेहेला रोज कयामत बयान, सो हजार बरस की इसारत जान।
दोऊ सरूप कहे दो अंगुली, दसमी से दूजी अग्यारहीं मिली।। ७ ।।

पहले दिन में कयामत की हकीकत एक हजार वर्ष की बताई है। रसूल साहब से जब उनके यारों ने पूछा कि कयामत कब होगी, तो उन्होंने दो उंगली से इशारा किया, अर्थात् दो स्वरूप जब मिलेंगे, अर्थात् दसवीं के स्वरूप श्री श्यामाजी महारानी, ग्यारहवीं के स्वरूप श्री प्राणनाथजी मलकी और हकी सूरत मिलेंगी तब कयामत होगी।

Nijanand App

दोऊ मिल अग्यारहीं भई, सब सालें मिलाइयां बीच कही।
कलीम अल्ला रोसनी दसमी मिनें, अग्यारमीमें ऊग्या दिनें।। ८ ।।

ग्यारहवीं सदी में मलकी और हकी स्वरूप मिले तो ज्ञान की रोशनी फैली। इसी ग्यारहवीं सदी में मोमिनों का मिलना कहा है। श्री श्यामाजी महारानी का तारतम ज्ञान जाहिर हुआ और ग्यारहवीं सदी में कुलजम सरूप की वाणी आई।

रात में रोसनी सब जुदी भई, इब्राहीम साल्हे मिल फजर कही।
भी फजर कही रोसनी बादल, बरस्या नूर रूहअल्लासों मिल।। ९ ।।

सौ वर्ष की रात्रि में जगह-जगह पर वाणी उतरी। श्री देवचन्द्रजी तथा श्री श्यामाजी के दूसरे तन श्री प्राणनाथजी दोनों स्वरूपों ने मिलकर कुलजम सरूप की वाणी दी। फजर के समय रूह अल्लाह श्री श्यामाजी को बादल कहा। इलम के जाहिर होने को ही कुरान में फजर कहा है। श्री प्राणनाथजी महाराज हकी स्वरूप के अन्दर श्री श्यामाजी महारानी के मिलने से कुलजम सरूप की वाणी की बरसात हुई।

बरस्या बादल नूर रोसन, गिरे आंझू सरमिंदे सबन।
सब रोवें होवें पसेमान, एही हाल होसी सारी जहान।। १० ।।

श्री प्राणनाथजी के मुखारबिन्द से परमधाम की वाणी जाहिर हुई। सब झूठ की पूजा करने वाले शर्मिंदे हुए। अपनी अज्ञानता पर रोकर पश्चाताप करेंगे। सारी दुनियां का यही हाल होगा।

|| प्रकरण || १८ || चौपाई || ४४३ ||

साखी–
तीन दिन कहे जो बुजरक, सो तीनों सूरतों के दिन।
रसूल से कयामत लगे, ए जो किए रोसन।। १ ।।

कुरान के तीन दिन बड़े बताए हैं। बड़ी महिमा कही है। यह तीन दिनों में तीनों सूरतों की हकीकत बसरी, मलकी और हकी कही है। रसूल साहब कुरान लाए। रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी तारतम लाए। हकी सूरत कुलजम सरूप की वाणी लाए। इस तरह से रसूल साहब से कयामत तक की हकीकत लिखी है।

याद करो खुदाए के तांई, तकबीर कहों दिन गिने हैं जांहीं।
ए तीन दिन जो हैं बुजरक, पीछे ईद जुहा के हक।। २ ।।

कहा है कि कुरान में कयामत के दिन जाहिर होने का लिखा है, इसलिए हरदम खुदा के स्वरूप को याद करो। इन तीनों दिनों की बड़ी महिमा कही है। इनके पीछे बारहवीं सदी में श्री राजजी महाराज के स्वरूप श्री प्राणनाथजी महाराज खुद खुदा जाहिर हुए।

नजीक इमाम आजम के कही, पीछे निमाज सुबह की भई।
अरफा से असर ईद दिन, दोए साहेब भए कौल इन।। ३ ।।

आजम नाम के इमाम ने अपनी किताब में लिखा है कि बारहवीं सदी में फजर की नमाज पढ़ी जाएगी। अरफा अर्थात् दसवीं सदी से लेकर बारहवीं सदी (फजर) तक के बीच रूह अल्लाह श्री श्यामाजी और इमाम मेंहेंदी दो साहेब हाजिर हुए।

Nijanand App

दोऊ मिल अग्यारहीं भई, सब सालें मिलाइयां बीच कही।
कलीम अल्ला रोसनी दसमी मिनें, अग्यारमीमें ऊग्या दिनें।। ८ ।।

ग्यारहवीं सदी में मलकी और हकी स्वरूप मिले तो ज्ञान की रोशनी फैली। इसी ग्यारहवीं सदी में मोमिनों का मिलना कहा है। श्री श्यामाजी महारानी का तारतम ज्ञान जाहिर हुआ और ग्यारहवीं सदी में कुलजम सरूप की वाणी आई।

रात में रोसनी सब जुदी भई, इब्राहीम साल्हे मिल फजर कही।
भी फजर कही रोसनी बादल, बरस्या नूर रूहअल्लासों मिल।। ९ ।।

सौ वर्ष की रात्रि में जगह-जगह पर वाणी उतरी। श्री देवचन्द्रजी तथा श्री श्यामाजी के दूसरे तन श्री प्राणनाथजी दोनों स्वरूपों ने मिलकर कुलजम सरूप की वाणी दी। फजर के समय रूह अल्लाह श्री श्यामाजी को बादल कहा। इलम के जाहिर होने को ही कुरान में फजर कहा है। श्री प्राणनाथजी महाराज हकी स्वरूप के अन्दर श्री श्यामाजी महारानी के मिलने से कुलजम सरूप की वाणी की बरसात हुई।

बरस्या बादल नूर रोसन, गिरे आंझू सरमिंदे सबन।
सब रोवें होवें पसेमान, एही हाल होसी सारी जहान।। १० ।।

श्री प्राणनाथजी के मुखारबिन्द से परमधाम की वाणी जाहिर हुई। सब झूठ की पूजा करने वाले शर्मिंदे हुए। अपनी अज्ञानता पर रोकर पश्चाताप करेंगे। सारी दुनियां का यही हाल होगा।

|| प्रकरण || १८ || चौपाई || ४४३ ||

साखी–
तीन दिन कहे जो बुजरक, सो तीनों सूरतों के दिन।
रसूल से कयामत लगे, ए जो किए रोसन।। १ ।।

कुरान के तीन दिन बड़े बताए हैं। बड़ी महिमा कही है। यह तीन दिनों में तीनों सूरतों की हकीकत बसरी, मलकी और हकी कही है। रसूल साहब कुरान लाए। रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी तारतम लाए। हकी सूरत कुलजम सरूप की वाणी लाए। इस तरह से रसूल साहब से कयामत तक की हकीकत लिखी है।

याद करो खुदाए के तांईं, तकबीर कहों दिन गिने हैं जांहीं।
ए तीन दिन जो हैं बुजरक, पीछे ईद जुहा के हक।। २ ।।

कहा है कि कुरान में कयामत के दिन जाहिर होने का लिखा है, इसलिए हरदम खुदा के स्वरूप को याद करो। इन तीनों दिनों की बड़ी महिमा कही है। इनके पीछे बारहवीं सदी में श्री राजजी महाराज के स्वरूप श्री प्राणनाथजी महाराज खुद खुदा जाहिर हुए।

नजीक इमाम आजम के कही, पीछे निमाज सुबह की भई।
अरफा से असर ईद दिन, दोए साहेब भए कौल इन।। ३ ।।

आजम नाम के इमाम ने अपनी किताब में लिखा है कि बारहवीं सदी में फजर की नमाज पढ़ी जाएगी। अरफा अर्थात् दसवीं सदी से लेकर बारहवीं सदी (फजर) तक के बीच रूह अल्लाह श्री श्यामाजी और इमाम मेहेंदी दो साहेब हाजिर हुए।

Nijanand App

सुबह सेती अरफे का दिन, आखिर तांईं असर इन।
बांधी उमेद बड़ी आगूं आवन, भई तीनों दिन निमाज पूरन।। ४ ।।

दसवीं से बारहवीं सदी तक इन्हीं दोनों स्वरूपों मलकी और हकी सूरतों का अमल रहा। पहले जमाने से भक्तों ने इन दोनों स्वरूपों के आने की चाहना मांग रखी थी। अब आकर सबकी चाहना पूरी कर रहे हैं। अब तीनों स्वरूप बसरी, मलकी, हकी एकतन श्री प्राणनाथजी के अन्दर हो रहे हैं। इन तीनों के जमाने में जिन्होंने इमाम मेंहेंदी के समय 'मनुष्य तन मिले' की चाहना की थी। अब प्राणनाथजी के तन में तीनों मिलकर इमाम मेंहेंदी के तन में आए हैं और सबको मनचाहे सुख मिल रहे हैं।

इन मसलें साफई इमाम, माफक दूजे साहेब का नाम।
सिताबी फिरे जो कोई, तो रोज मिलावा लेवे सोई।। ५ ।।

साफई इमाम ने अपनी किताब में साफ लिखा है कि रूह अल्लाह (श्री श्यामाजी महारानी) जब दूसरा तन धारण करेंगी। तभी वह कयामत जाहिर करने वाले खुदा के दूसरे रूप होंगे। यदि अब भी कोई संशय करता है कि कयामत जल्दी क्यों नहीं होती, तो कयामत के दिनों की गिनती का जोड़ लगाकर देख ले।

अग्यारहीं बारहीं जिल्हज करे, सो गुनाह कछू ना धरे।
बाजे हैं जाहिल आरब, बातें करें सिताबी तब।। ६ ।।

ग्यारहवीं और बारहवीं सदी में जिसने श्री प्राणनाथजी के स्वरूप को पहचानकर कुर्बानी की, उसको किसी तरह का गुनाह नहीं होगा। कुछ लोग ऐसे हैं जो कहते हैं कि कयामत क्यों नहीं आ रही है?

गिरोह एक बखत आखिर, आबिद को खुदाए कह्या यों कर।
सिताबी होवे रुखसद, तुझ पर गुनाह नाहीं कद।। ७ ।।

आखिरी कयामत के समय में मोमिन ही संसार को त्यागेंगे। जो श्री राजजी की अंगनाएं होंगी वह जल्दी ही दुनियां की मोह माया से छुटकारा पा जाएंगी और उनको किसी तरह से कष्ट नहीं होगा।

और कोई ढील करे जो तांहीं, तीन रात रहे मजल माहीं।
तिनको कछुए नहीं आजार, तेहेकीक योंही है निरधार।। ८ ।।

ग्यारहवीं सदी में जो मोमिन जाग नहीं सके और माया में फंसे रहे, लेकिन बृज, रास, जागनी में श्री राजजी के साथ रहे, उनको किसी प्रकार का कष्ट नहीं होगा। यह निश्चित है।

इनमें जो कोई परहेज करे, पीछे अदा के हज गुनाह से डरे।
जो कोई खतरों से फिरया होए, परहेज करे आराम वास्ते सोए।। ९ ।।

इनमें जो परहेज करने वाली ईश्वरीसृष्टि हैं और ग्यारहवीं सदी कयामत ज़ाहिर होने के बाद भी गुनाहों से डरता रहे और ईमान गिराने वालों से बचता रहे, उनको भी अखण्ड सुख मिलेगा।

बाकी जेती रही उमर, तिनमें रखे खुदाए का डर।
कयामत को होवें जाहेर, पोहोंचेंगे बदले यों कर।। १० ।।

अब इस शरीर में जितनी आयु बची है उतने दिन खुदा से डरो। कयामत के दिन यह सब बातें जाहिर हो जाएंगी। उसका उसी अनुसार फल मिलेगा।

।। प्रकरण ।। १९ ।। चौपाई ।। ४५३ ।।

Nijanand App

तारीख नामा

जिनको कयामत की है सक, क्यों कर उठसी एह खलक।
बात नहीं ए बरकरार, काफर न देखें ए विस्तार।। १ ।।

कई लोगों को कयामत होने में संशय है। यह झूठा संसार अखण्ड कैसे होगा? यह बात सत्य नहीं है। ऐसे काफिर लोगों को खुदा की शक्ति का पता नहीं है।

न देखें अपना हवाल, कई पैदा किए आदमी डाल।
खुदा खाक पाक से पैदा किया, तिन बूंद का ए विस्तार कर दिया।। २ ।।

वह अपनी असलियत को नहीं देखते कि उनके जैसे खुदा ने कितने आदमी पैदा कर दिए। खुदा ने मिट्टी पानी के सहयोग से वीर्य की एक बूंद से इतना बड़ा मनुष्य तन बना दिया।

एही तमाम जो पैदाइस कही, तिनका खुलासा कर देऊं सही।
जिन सेती होवे मकसूद, इन नाबूद सेती ल्याया बूद।। ३ ।।

यह सारी दुनियां जो पैदा है उसकी हकीकत बता देती हूं। जिससे सभी को पहचान हो जाए कि मिट जाने वाली दुनियां में एक मेहराज ठाकुर को खुदा ने माया से कैसे निकाला और इतना बड़ा काम कराया।

तिनमें बाजे कहे बेसुध, तिनको कबूं न आवे बुध।
इनमें खुदाए किए दोए, कयामत काम दूजे से होए।। ४ ।।

श्री देवचन्द्रजी महाराज के दो लड़के हैं। एक नसली, दूसरा नजरी। उनमें नसली पुत्र बिहारीजी को कभी भी बुद्धि नहीं आने वाली है और वह संसार में ही लिपटे रहेंगे। संसार को अखण्ड करने का काम नजरी पुत्र श्री मेहराज ठाकुर से ही होगा।

साहेब चाहे सो करे, निपट माहें नजर में धरे।
ए खुदाए पेहेले किया करार, जमाना होसी सिरदार।। ५ ।।

यह उस पारब्रह्म धाम के धनी श्री राजजी महाराज की इच्छा है, चाहे जिसको अपनी मेहेर की नजर में ले लें, चाहे जिसको दूर कर दें। श्री राजजी महाराज ने रसूल साहब से पहले ही वायदा कर लिया था कि आखिर के जमाने में मोमिनों की सिरदारी होगी जिसमें श्री प्राणनाथजी मोमिनों के सिरदार होंगे।

खावंद होए के करसी काम, तिनका अव्वल से धरिया नाम।
बाहेर ल्याया तुमारे तांई, छिपा लड़का था पेट माहीं।। ६ ।।

यह सारी दुनियां के खुदा बनकर कयामत का काम करेंगे, इसीलिए इनका पहले से ही श्री प्राणनाथजी नाम रखा है। जैसे मां के पेट में बच्चा छिपा रहता है, इसी तरह से यह केशव ठाकुरजी के घर में छिपे पड़े थे, जिन्हें खुदा ने तुम्हारे वास्ते झूठे कुटुम्ब से निकाला।

निहायत था नातवान, ना वर पाएगी ना काम पेहेचान।
सब तरबियत तुमको किया, पोहोंचे कुदरत तमाम हाथ दिया।। ७ ।।

यह जब बिल्कुल बच्चे थे, नादान थे, इनको यह जानकारी भी न थी कि इनसे कौन-सा काम लिया जाएगा और उस समय किसी की भी कृपा प्राप्त नहीं थी। इस तरह के एक बालक को खुदा ने सब तरह से संभाल कर तुम सबके वास्ते उनको दिया है और सारी शक्ति इनके हाथ दे दी थी।

Nijanand App

तूं था बीच कौम जाहिल, तित खुदाए ने दई अकल।
बरस बारहीं के लिए तीस, दस लिए अग्यारहीं के किए चालीस।। ८ ।।

आप क्षत्रिय घराने में थे। वहां से निकालकर अपने चरणों में लेकर खुदा ने जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान दिया। कुरान में बताए अनुसार रूह अल्लाह की चालीस वर्ष की बादशाही उनके ही अंग मोमिनों के द्वारा होनी है। श्री श्यामाजी महारानी के दूसरे तन श्री प्राणनाथजी से बादशाही हुई जो ग्यारहवीं सदी के अंतिम दस वर्ष (सम्वत् १७३५ से १७४५ तक) से बारहवीं सदी के तीस वर्ष (१७७५) तक हुई।

तुममें से कोई होएगा ऐसा, जो पोहोंच के करेगा वफा।
बीच ज्वानियां आगूं ज्वान, बाहेर फेर हुए निदान।। ९ ।।

कुरान में पहले से ही लिखा है कि मोमिनों में से कोई ऐसा सिरदार होगा जो खुदा की आज्ञा का पालन करेगा और उसी अनुसार मोमिनों में से श्री प्राणनाथजी ने सिरदारी की।

|| प्रकरण || २० || चौपाई || ४६२ ||

लिख्या आम सिपारे सूरत, आठईं माहें मजकूर कयामत।
सौंह करी साहेब आसमान, ए इसारत बारहीं सदी में निदान।। १ ।।

कुरान के तीसवें सिपारे (आम सिपारे) की आठवीं सूरत में कयामत का बयान लिखा है। जिसको रसूल साहब ने कसम खाकर कहा कि खुदा आएंगे और बारहवीं सदी में कयामत होगी।

दो हादी दसमी सदी से आए, उमत तिनमें लई मिलाए।
दस ऊपर दोए बुरज जो कही, इनमें हादी उमत मजकूर भई।। २ ।।

दसवीं सदी से रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी श्री देवचन्द्रजी के तन में प्रगट हुए और ग्यारहवीं सदी में श्री प्राणनाथजी आए। इन दोनों स्वरूपों ने मोमिनों की जमात को इकट्ठा किया। कुरान में जो दस और दो बुर्ज कहे हैं, वह बारहवीं शताब्दी का वर्णन है। दसवीं सदी के ऊपर दो बुर्ज ही दो स्वरूप हैं। इन स्वरूपों की मोमिनों को पहचान हुई।

दस और दोए जुदे कहे, ए इसारत जिनकी सोई लहे।
ए बुरज कहे दस और दोए, ए गिनती मजल चांदकी सोए।। ३ ।।

कुरान में सीधे बारह न लिखकर दस और दो लिखे हैं। यह इशारतें जिनके वास्ते लिखी हैं, वह मोमिन ही समझेंगे। यह दस और दो बुर्ज जो कहे हैं, इनका अर्थ है कि मुहम्मद साहब जिनको दूज का चांद कहा है। उनके जाने के बाद दसवीं सदी के बाद दो स्वरूप आएंगे और बारहवीं सदी में कयामत होगी।

या दरिया या आसमान सब, ए कौल साहेब का न भूलें कब।
ए सौगंद खाए के करी सरत, एही रोज जो कही कयामत।। ४ ।।

यहां समुद्र और आसमान सभी खुदा के हुकम से बने हैं। यह उनके हुकम के अनुसार ही चलते हैं। मुहम्मद साहब ने सौगन्ध खाकर कहा कि बारहवीं सदी में कयामत होगी।

फेर फेर कह्या सौं खाई, अल्ला की साहेदी देवाई।
खुदाए देखता है सबन, और जानता है सबन के मन।। ५ ।।

उन्होंने बार-बार खुदा की सौगन्ध खाकर कयामत होने को कहा है और कुरान की गवाही भी दी है। रसूल साहब ने कहा कि खुदा सबको देखता है और सबके दिलों को जानता है।

Nijanand App

तूं था बीच कौम जाहिल, तित खुदाए ने दई अकल।
बरस बारहीं के लिए तीस, दस लिए अग्यारहीं के किए चालीस।। ८ ।।

आप क्षत्रिय घराने में थे। वहां से निकालकर अपने चरणों में लेकर खुदा ने जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान दिया। कुरान में बताए अनुसार रूह अल्लाह की चालीस वर्ष की बादशाही उनके ही अंग मोमिनों के द्वारा होनी है। श्री श्यामाजी महारानी के दूसरे तन श्री प्राणनाथजी से बादशाही हुई जो ग्यारहवीं सदी के अंतिम दस वर्ष (सम्वत् १७३५ से १७४५ तक) से बारहवीं सदी के तीस वर्ष (१७७५) तक हुई।

तुममें से कोई होएगा ऐसा, जो पोहोंच के करेगा वफा।
बीच ज्वानियां आगूं ज्वान, बाहेर फेर हुए निदान।। ९ ।।

कुरान में पहले से ही लिखा है कि मोमिनों में से कोई ऐसा सिरदार होगा जो खुदा की आज्ञा का पालन करेगा और उसी अनुसार मोमिनों में से श्री प्राणनाथजी ने सिरदारी की।

|| प्रकरण || २० || चौपाई || ४६२ ||

लिख्या आम सिपारे सूरत, आठईं माहें मजकूर कयामत।
सौंह करी साहेब आसमान, ए इसारत बारहीं सदी में निदान।। १ ।।

कुरान के तीसवें सिपारे (आम सिपारे) की आठवीं सूरत में कयामत का बयान लिखा है। जिसको रसूल साहब ने कसम खाकर कहा कि खुदा आएंगे और बारहवीं सदी में कयामत होगी।

दो हादी दसमी सदी से आए, उमत तिनमें लई मिलाए।
दस ऊपर दोए बुरज जो कही, इनमें हादी उमत मजकूर भई।। २ ।।

दसवीं सदी से रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी श्री देवचन्द्रजी के तन में प्रगट हुए और ग्यारहवीं सदी में श्री प्राणनाथजी आए। इन दोनों स्वरूपों ने मोमिनों की जमात को इकट्ठा किया। कुरान में जो दस और दो बुर्ज कहे हैं, वह बारहवीं शताब्दी का वर्णन है। दसवीं सदी के ऊपर दो बुर्ज ही दो स्वरूप हैं। इन स्वरूपों की मोमिनों को पहचान हुई।

दस और दोए जुदे कहे, ए इसारत जिनकी सोई लहे।
ए बुरज कहे दस और दोए, ए गिनती मजल चांदकी सोए।। ३ ।।

कुरान में सीधे बारह न लिखकर दस और दो लिखे हैं। यह इशारतें जिनके वास्ते लिखी हैं, वह मोमिन ही समझेंगे। यह दस और दो बुर्ज जो कहे हैं, इनका अर्थ है कि मुहम्मद साहब जिनको दूज का चांद कहा है। उनके जाने के बाद दसवीं सदी के बाद दो स्वरूप आएंगे और बारहवीं सदी में कयामत होगी।

या दरिया या आसमान सब, ए कौल साहेब का न भूलें कब।
ए सौगंद खाए के करी सरत, एही रोज जो कही कयामत।। ४ ।।

यहां समुद्र और आसमान सभी खुदा के हुकम से बने हैं। यह उनके हुकम के अनुसार ही चलते हैं। मुहम्मद साहब ने सौगन्ध खाकर कहा कि बारहवीं सदी में कयामत होगी।

फेर फेर कह्या सौं खाई, अल्ला की साहेदी देवाई।
खुदाए देखता है सबन, और जानता है सबन के मन।। ५ ।।

उन्होंने बार-बार खुदा की सौगन्ध खाकर कयामत होने को कहा है और कुरान की गवाही भी दी है। रसूल साहब ने कहा कि खुदा सबको देखता है और सबके दिलों को जानता है।

Nijanand App

ग्वाही भी साहेब की कही, सौंह भी खुदाए की खाई सही।
एक कौल बीच बंदा कह्या, पैगंमर भी एही भया।। ६ ।।

रसूल साहब ने खुदा की गवाही भी दी और उनकी सौगन्ध खाकर भी कहा कि खुदा खुद आएगा। एक जगह उन्होंने खुदा को बन्दे के रूप में आना बताया है, अर्थात् जब तक श्री प्राणनाथजी जाहिर नहीं हुए, तब तक मेहराज ठाकुर कहलाए और बाद में इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी जाहिर हो गए।

॥ प्रकरण ॥ २१ ॥ चौपाई ॥ ४६८ ॥

अमेतसालून

महंमदें जाहेर करी दावत, डर फुरमाया रोज कयामत।
पढ्या खलक ऊपर कुरान, ए तीनों मानें नहीं फुरमान।। १ ।।

रसूल साहब ने कयामत आने की दावत जाहिर की और सबको उनके कर्मों के हिसाब से बयान होने का डर भी बताया। इस बात को उन्हीं लोगों को कुरान से पढ़ाया, परन्तु बेईमान लोग यह तीनों बातें न मुहम्मद को, न कयामत को और न कुरान को ही मानते हैं।

काफर पूछें मोमिनों से ले, न पूछे रसूल को दिल दे।
खुदाए ताला ने कह्या यों कर, किस चीज से पूछें काफर।। २ ।।

काफिर लोग रसूल साहब के पास दिल की चाहना से पूछने नहीं आते, बल्कि उनके सेवकों से दोष निकालने के लिए पूछा करते हैं कि कुरान में लिखा है कि तब खुदा ताला ने इस तरह से कहा कि इन काफिर लोगों को किस बात का संशय है?

कुरान चीज ऐसी बुजरक, फेर तिनमें ल्यावें सक।
रसूल को नाम धरें काफर, किवता झूठा जादूगर।। ३ ।।

खुदा ने कहा कि तुम्हें कुरान से इतना महत्वपूर्ण ज्ञान दिया है। फिर भी उस पर संशय लाते हो। काफिर रसूल साहब को झूठी कविता करने वाला कवि और झूठे चमत्कार करने वाला जादूगर कहते हैं।

ए बुजरक बुनियाद नबुवत, बीच कौल दरगाह बड़ी सिफत।
कोई कहे पैगंमर है, कोई सायर दिवाना कहे।। ४ ।।

रसूल साहब शुरू से ही पैगम्बर हैं। कुरान में लिखे अनुसार रसूल साहब की बड़ी भारी महिमा है, किन्तु कुछ लोग तो पैगम्बर मानते हैं। कुछ लोग कवि (शायर) और कुछ दीवाना कहते हैं।

कोई कोई कयामत को मानें, कोई कोई सामे मारें तानें।
एक गिरो मिने नबुवत, कहे छुड़ावेंगे वे कयामत।। ५ ।।

कोई-कोई कयामत को मानते हैं और कोई सामने आकर ताना मारते हैं—बचो-बचो, कयामत आ रही है। एक जमात में रसूल साहब नबी कहलाते हैं। वह कहते हैं कि कयामत के समय रसूल साहब फिर आएंगे और हमको शैतान के पंजे से छुड़ाएंगे।

Nijanand App

ग्वाही भी साहेब की कही, सौंह भी खुदाए की खाई सही।
एक कौल बीच बंदा कह्या, पैगंमर भी एही भया।। ६ ।।

रसूल साहब ने खुदा की गवाही भी दी और उनकी सौगन्ध खाकर भी कहा कि खुदा खुद आएगा। एक जगह उन्होंने खुदा को बन्दे के रूप में आना बताया है, अर्थात् जब तक श्री प्राणनाथजी जाहिर नहीं हुए, तब तक मेहराज ठाकुर कहलाए और बाद में इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी जाहिर हो गए।

।। प्रकरण ।। २१ ।। चौपाई ।। ४६८ ।।

अमेतसालून

महंमदें जाहेर करी दावत, डर फुरमाया रोज कयामत।
पढ़्या खलक ऊपर कुरान, ए तीनों मानें नहीं फुरमान।। १ ।।

रसूल साहब ने कयामत आने की दावत जाहिर की और सबको उनके कर्मों के हिसाब से बयान होने का डर भी बताया। इस बात को उन्हीं लोगों को कुरान से पढ़ाया, परन्तु बेईमान लोग यह तीनों बातें न मुहम्मद को, न कयामत को और न कुरान को ही मानते हैं।

काफर पूछें मोमिनों से ले, न पूछे रसूल को दिल दे।
खुदाए ताला ने कह्या यों कर, किस चीज से पूछें काफर।। २ ।।

काफिर लोग रसूल साहब के पास दिल की चाहना से पूछने नहीं आते, बल्कि उनके सेवकों से दोष निकालने के लिए पूछा करते हैं कि कुरान में लिखा है कि तब खुदा ताला ने इस तरह से कहा कि इन काफिर लोगों को किस बात का संशय है?

कुरान चीज ऐसी बुजरक, फेर तिनमें ल्यावें सक।
रसूल को नाम धरें काफर, किवता झूठा जादूगर।। ३ ।।

खुदा ने कहा कि तुम्हें कुरान से इतना महत्वपूर्ण ज्ञान दिया है। फिर भी उस पर संशय लाते हो। काफिर रसूल साहब को झूठी कविता करने वाला कवि और झूठे चमत्कार करने वाला जादूगर कहते हैं।

ए बुजरक बुनियाद नबुवत, बीच कौल दरगाह बड़ी सिफत।
कोई कहे पैगंमर है, कोई सायर दिवाना कहे।। ४ ।।

रसूल साहब शुरू से ही पैगम्बर हैं। कुरान में लिखे अनुसार रसूल साहब की बड़ी भारी महिमा है, किन्तु कुछ लोग तो पैगम्बर मानते हैं। कुछ लोग कवि (शायर) और कुछ दीवाना कहते हैं।

कोई कोई कयामत को मानें, कोई कोई सामे मारें तानें।
एक गिरो मिने नबुवत, कहे छुड़ावेंगे वे कयामत।। ५ ।।

कोई-कोई कयामत को मानते हैं और कोई सामने आकर ताना मारते हैं—बचो-बचो, कयामत आ रही है। एक जमात में रसूल साहब नबी कहलाते हैं। वह कहते हैं कि कयामत के समय रसूल साहब फिर आएंगे और हमको शैतान के पंजे से छुड़ाएंगे।

Nijanand App

केतेक साहेबसों बैठे फिर, केतेक कयामत से मुनकर।
बाजों को दुनियां हैयात, बाजे सक ल्यावें इन बात।।६।।

कितने लोग तो ऐसे हैं जो खुदा को ही नहीं मानते। कितने ऐसे हैं जो कयामत का विश्वास नहीं करते। कई लोग ऐसे हैं जो दुनियां को अखण्ड समझे बैठे हैं और कई ऐसे हैं जो सब बातों में संशय रखते हैं।

खुदाए की सौंह खाए के कही, के कयामत नजीक आई सही।
पेहेली नीयत अकीदे अपनी, झूठा कौल ना करे धनी।।७।।

रसूल साहब ने खुदा की सौगन्ध खाकर कहा कि कयामत निकट आ गई है। पहले अपनी नीयत साफ करके देखो कि खुदा झूठा वायदा कभी नहीं करते।

जिमी को कह्या बिछान, तिन पर ल्यावसी तीनों जहान।
पहाड़ मेखां कही उस्तुवार, पैदा किया दुनियां नर नार।।८।।

खुदा ने अपने हुकम से जमीन को बिस्तर बनाया जिस पर ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि को उतारेंगे और जीवसृष्टि को पैदा करेंगे। जमीन के बिस्तर के ऊपर कीलों की तरह पहाड़ बनाए और ऐसी जमीन पर नर-नारी (जीवों) को पैदा किया।

तो नसल तुमारी बाकी रहे, स्याह सुपेत छोटे बड़े कर कहे।
कोई खूब कोई किए बुरे, नींद रात ताजगियां करे।।९।।

तुम्हारी औलाद में जो बचे रहेंगे, कर्मों के अनुसार उनमें से किसी के मुंह काले होंगे, कोई सफेद। इनमें कोई छोटे होंगे कोई बड़े होंगे। कोई अच्छे काम करेंगे, कोई बुरे काम करेंगे। कोई रात भर जागकर बन्दगी करेंगे।

रात निकोइयों को भाने, कूवत हैवानी की आने।
बंदगी इनसे होवे दूर, सब ढांपे अंधेर मजकूर।।१०।।

संसार पशुवृत्ति का हो जाएगा और भलाई करने वालों को कष्ट देंगे। यह लोग खुदा की बन्दगी से दूर हो जाएंगे और माया के अंधेरे में फंसे रहेंगे।

साहेब फतुआत का यों कहे, साहेब रातों के तले रात रहे।
इनकी नजरों न छिपे दुस्मन, जो कोई हैं साहेब के तन।।११।।

न्याय करने वाले साहेब खुदा ने कुरान में लिखा है कि गफलत, अर्थात् माया के खेल के तुच्छ जीव जो त्रिगुण के पूजक हैं, वह मोमिनों के ईमान, इश्क, बन्दगी में खलल नहीं डाल सकते। यह मोमिन श्री राजजी महाराज के अंग हैं, इसलिए इनकी नजर से दुश्मन नहीं छिपेंगे।

रातों चलने वाले कहे सेखल इसलाम, करें परदा दुनियां सों चलें आराम।
दिन के तांईं कह्या बाजार, इत बे इन्साफी चलन हार।।१२।।

रात में बन्दगी करने वाले, अर्थात् छिपकर बन्दगी करने वाले मोमिन हैं। यह दुनियां में दिखावा नहीं करते और अपने धनी को रिझाते हैं। दुनियां में सारे जीव बेईमानी पर चलने वाले हैं, इसलिए इनको दिन का बाजार कहा है, क्योंकि यह लोग लूट-पाट, मार-पीट, झगड़े-फसाद, निन्दा में मग्न रहते हैं।

Nijanand App

ए जो चले रातों के यार, मैं इन बंदे पाकों की जाऊं बलिहार।
कह्या जो साहेब का दिन, ओ बखत तलब करें मोमिन।। १३ ।।

जो रात को, अर्थात् छिपकर बन्दगी करने वाले हैं, मैं (महामति) ऐसे मोमिनों के चरणों पर बलिहारी जाती हूं। कयामत के वक्त साहेब के आने का जो दिन कहा है, उस समय की मोमिन चाहना करते हैं।

इनहीं में ढूंढ़ें हासिल, इस दिन उमत की फसल।
इनके तले सातों आसमान, ए सारों के ऊपर जान।। १४ ।।

इन मोमिनों को ही खुदा की पहचान है। इनके वास्ते ही ग्यारहवीं सदी में कुलजम सरूप की वाणी आई। मृत्युलोक से बैकुण्ठ तक सातों आसमान के देवी-देवताओं के ऊपर इन मोमिनों की महिमा को समझो।

और खलक जो इनके तले, तिन खलकों को होए जुलजुले।
पैदा किया आफताब रोसन, ए दिन हुआ वास्ते मोमिन।। १५ ।।

इन देवी-देवताओं के नीचे जो जीवसृष्टि है, उनको दैवी-प्रकोप के कष्ट भोगने पड़ेंगे। कुलजम सरूप की वाणी का सूर्य मोमिनों के वास्ते ही उदय हुआ है।

इनों के साथ उतरया बादल, सो नूर बादलियां रोसन जल।
तिनकी पैदास कही दाना घास, ए कही इसारत तीनों पैदास।। १६ ।।

इन मोमिनों के साथ श्री श्यामाजी महारानी बादल बनकर आई हैं। जिनके तारतम वाणी के ज्ञान से सबको ज्ञान (बूंदें) मिला। इन तारतम रूपी पानी की बूंदों से ही तीनों प्रकार की सृष्टियों को आत्मा का आहार मिला।

गेहूं जौ और कह्या घास, काफर फरिस्ते रूहें उमत खास।
फरिस्ते जो गेहूं इसलाम, और घास कह्या सब काफर तमाम।। १७ ।।

गेहूं, जौ और घास तीन सृष्टियों की पहचान है। काफिर घास, फरिश्ते जौ और मोमिनों को गेहूं कहा है।

मोती दरियाव से काढ़्या महंमद, इन विध इत लिख्या सब्द।
घास कह्या सब चारा हैवान, गिरो उतरी दोऊ दरियाव से जान।। १८ ।।

कुरान में ऐसा लिखा है कि भवसागर से इमाम मेंहेंदी ने मोती को बाहर निकाला। सारी दुनियां को जानवरों की तरह घास खाने वाला कहा है। ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि की दो जमातें परमधाम और अक्षरधाम से उतरी हैं, ऐसा जानो।

याही को बाग दरखत कहे, नजीक मिलाप लपेटे गए।
इनों के बीच चले हुकम, रोज कयामत को जाहेर खसम।। १९ ।।

मोमिनों को परमधाम के बगीचे के वृक्ष की उपमा दी है और उनकी संगति करने से ईश्वरीसृष्टि ने भी शोभा पाई। कयामत का दिन जाहिर होने पर इनका हुकम सब मानेंगे।

बरकरार किया हुकम बखत, ए इसारत जाहेर कही कयामत।
ए फसल परहेजगार मोमिन, काफरों के तंबीह के दिन।। २० ।।

कयामत का समय श्री राजजी के हुकम से निश्चित है। उस समय मोमिनों को तथा ईश्वरीसृष्टि को कुलजम सरूप की वाणी का आनन्द मिलेगा और काफिर लोग अपने कर्मों का फल भोगेंगे।

Nijanand App

इस रोज फूंके करनाए, असराफील सूर कुरान के गाए।
एक सूरें आखिर हुई सबन, दूजे सूरें उठे सब तन।।२१।।

कयामत के दिन असराफील फरिश्ता कुलजम सरूप की वाणी की गर्जना करेगा। उसकी एक गर्जना से सबके झूठे अहंकार समाप्त हो जाएंगे और दूसरी गर्जना से महाप्रलय होकर सबको बहिश्तों में कायमी मिल जाएगी।

सब उठे कबर थें अपनी, कायम किए कयामत के धनी।
इमाम सालबी यों कहे बनी, रसूल पूछे उमत अपनी।।२२।।

कयामत के दिन कुलजम सरूप की वाणी से निर्मल करके सारे संसार के जीवों को जगाएंगे और उनको श्री प्राणनाथजी महाराज अखण्ड मुक्ति प्रदान कर बहिश्तों में कायम करेंगे। इमाम सालवी अपने बेटे से कहते हैं कि कयामत के समय कायम करने से पहले रसूल साहब अपनी जमात का हिसाब लेंगे।

कहे कयामत में सबे उठाए, दस बिध फैल पूछे जाए।
बांदर सूरत होसी सुकन चीन, जिनों हिरदे में नहीं आकीन।।२३।।

इमाम सालवी अपने बेटे से कहता है कि कयामत के वक्त सबको सावचेत (सतर्क) किया जाएगा और सब संसार के लोगों के कामों का दस तरह से हिसाब लिया जाएगा। जिन्होंने वाणी को पहचाना, लेकिन यकीन नहीं लाए, उनकी बन्दर की शक्ल हो जाएगी।

सुवर सूरत हरामखोर कहे, जो कबूं हलाल के ढिग ना गए।
गधे सूरत कहे हरामकार, जिन के बुरे फैल रोजगार।।२४।।

जिन लोगों में कभी परिश्रम (मेहनत) की कमाई नहीं की और लूट, घसोट, चोरी, कपट की कमाई खाई है, वह सुअर बन जाएंगे। जो धन्धों में बुरे काम करेंगे उनको हरामी कहा है और उन्हें गधे की सूरत मिलेगी।

सूद खाने वाले हुए अंधे, उसी खैंच से दोजख फंदे।
न किया सिजदा न सुनी पुकार, सो हुए बेहेरे पड़े दोजख मार।।२५।।

जो हमेशा ब्याज का धन्धा करते हैं, वह अन्धे हो जाएंगे। जिन्होंने वाणी को नहीं सुना और खुदा पर सिजदा नहीं किया, वह कान से बहरे हो जाएंगे।

गूंगे कहे जालिम हुकम,वे सबके तले न ले सकें दम।
पढ़े जुबां काटे पीव लोहू बहे, झूठे फैल मुख सीधे कहे।।२६।।

जालिम अधिकारी (अफसर) गूंगे हो जाएंगे और सबके नीचे दबे होंगे जो सांस भी न ले पाएंगे। झूठी बातों को सत्य करके कहने वाले वकीलों की गवाही करने और ऐसे दूसरे लोगों की जुबान काट दी जाएगी और उस कटी जुबान से खून और पीव बहेगा।

मलें दोजखी हाथ पांऊं दोए, ताए देखे भिस्ती अचरज होए।
उड़न वाले कहे मोमिन, मुतकी भी पड़ोसी तिन।।२७।।

दोजख में जलने वाले लोग हाथ मल-मलकर पश्चाताप करेंगे और इनकी ऐसी हालत देखकर मोमिनों और ईश्वरीसृष्टि को हैरानी होगी। मोमिनों को इश्क, ईमान के परों पर उड़ने वाला कहा है। ईश्वरीसृष्टि उनकी पड़ौसी है।

Nijanand App

ताए हर भांत रंज पोहोंचाया जिन, सो लटके बीच सूली अगिन।
चुगलखोर काटे हाथ पांऊं, और सखती दिलों को लगे घाउ।। २८ ।।

इन ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि को जिसने कष्ट पहुंचाया है, वह सूली पर चढ़ाया जाएगा और नीचे से आग जलाई जाएगी। चुगलखोरों के हाथ-पांव काट दिए जाएंगे। जो कठोर दिल वाले हैं, उनकी छाती में भाले मारे जाएंगे।

ए दस भांत की कही दोजक, जो बे फुरमान हुए हक।
जिनहू फैल जैसे किए, तिनको बदले तैसे दिए।। २९ ।।

जो खुदा के अवज्ञाकारी रहे, खुदा के फरमान को नहीं माना, उनको दस प्रकार की दोजख की अग्नि में जलना पड़ेगा। ऐसा इमाम सालवी ने अपने बेटे से कहा। फिर जिसने जैसे कर्म किए, उनको वैसा ही फल मिला।

फुरमाया केतेक फेर उठाए, तकब्बरों दोजख हमेसगी पाए।
और जो कहे मोतिन के घर, सो खासी उमत साहेब के दर।। ३० ।।

उन्होंने ऐसा बताया है कि पश्चाताप करने के बाद उनको फिर निर्मल करके अखण्ड कर दिया जाएगा। जो अहंकार के नशे में चूर अभिमानी लोग हैं, वह दोजख की अग्नि में जलते ही रहेंगे। जब तक उनका अभिमान चूर-चूर नहीं होगा, यकीन नहीं लाएंगे। जिनको मोमिन कहा है, वह श्री राजजी महाराज के अंग हैं। उनको कुरान में मोती कहा है, वह परमधाम के रहने वाले हैं।

उनको जो लगे रहे, सो मुतकी बूंदों मिले कहे।
जिनों इनों की दोस्ती लई, साहेबें पातसाही तिनको दई।। ३१ ।।

मोमिनों का साथ जिन्होंने किया, उनको ईश्वरीसृष्टि कहा है। वह इनके साथ मिलकर चलेंगे। ऐसी ईश्वरीसृष्टि जिन्होंने मोमिनों की सच्ची दोस्ती की है, उनको राजजी महाराज ने अखण्ड बहिश्त दी।

और भी सुनो दूजी जंजीर, दिल दे देखो खीर और नीर।
ए जो दुनियां का कह्या आसमान, दो टुकड़े दिल कह्या जहान।। ३२ ।।

और भी कुरान के दूसरे बयान को सुनो और अपने दिल से सत्य और झूठ को पहचानो। लिखा है कि आखिर के समय में दुनियां के आसमान के दो टुकड़े हो जाएंगे और इसी तरह दुनियां वालों के दिल भी टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे, अर्थात् दिल के दो टुकड़े हो जाएंगे, अर्थात् दिलों में कुफ्र छा जाएगा।

ए रोज है निपट सखत, यों जुलजुला होसी कयामत बखत।
बीच हवा के पहाड़ उड़ाए, ए जो दुनियां में बुजरक केहेलाए।। ३३ ।।

कयामत के समय खलबली मचेगी। वह समय बहुत ही कठिनाई का होगा। दुनियां के अन्दर बड़े-बड़े इलमी, ज्ञानी, धर्माचार्य जो अपने को बड़ा समझ रहे थे उनके पहाड़ों जैसे अहंकार हवा में उड़ जाएंगे।

बुजरकों धोखा क्योंए न जाए, तो बखत ऐसा दिया देखाए।
फितुए इनों के जावें तब, ऐसा कठिन बखत देखें जब।। ३४ ।।

ऐसे पढ़े-लिखे ज्ञानी धर्माचार्यों के संशय कभी नहीं मिटेंगे, इसलिए दुनियां को ऐसा कठिन समय दिखाया। ऐसी खलबली (संकट) का समय जब देखेंगे, तभी उनके अहंकार मिटेंगे।

Nijanand App

ठंढे वजूद होवें वर पाए, तब हकीकत देखें आए।
सब दुनियां हुई गुन्हेगार, यों देख्या बखत दोजखकार।। ३५ ।।

कुलजम सरूप की वाणी जाहिर होने से जब उनके अहंकार समाप्त हो जाएंगे, तब शान्त होकर वह इस हकीकत को आकर समझेंगे। उस समय सारी दुनियां के दिलों में कुफ्र छाया होगा तब वह सच्चे दिल से आकर कुलजम सरूप की वाणी को समझेंगे।

अब जो सुनो खास उमत, खड़े रहो दोजख एक बखत।
जिन भागो गोसे रहो खड़े, देखो दोजखियों खजाने बढ़े।। ३६ ।।

अब जो ब्रह्मसृष्टि हो वह सुनो। दोजख की अग्नि में लोगों को जलता हुआ देखकर दूर मत हटना। अपने इश्क ईमान पर बराबर खड़े रहना और देखना गुनहगार किस तरह से आकर दोजख की अग्नि में जलते हैं।

भिस्त रजवान मोमिन निगेहवान, दोजख खजाना पोहोंचे कुफरान।
तहां तांई बखत पोहोंचे सबन, पैदरपे जले अगिन।। ३७ ।।

मोमिनों की मेहर भरी नजर से दोजख में जलने वाले पाक (साफ, निर्मल) होकर बहिश्तों में जाएंगे। अखण्ड मुक्ति को प्राप्त करेंगे। काफिर लोग तब तक दोजख की अग्नि में जलते रहेंगे, जब तक उनके अहंकार खत्म नहीं हो जाएंगे। उनको लगातार जलने वाली अग्नि से तभी छुटकारा मिलेगा और तभी वह बहिश्तों में जा सकेंगे।

गुजरे हैं हद सें काफर, दूर दराज जानी थी आखिर।
दुख लंबे हुए तिन कारन, यों मता पाया दोजखियों हाल इन।। ३८ ।।

काफिर लोग समझते थे कि कयामत अभी बहुत दूर है और इसलिए वह डटकर कुफ्र कर रहे थे, इसलिए उनको बहुत लम्बे समय तक दोजख की आग में जलने का कष्ट सहन करना पड़ेगा।

करे मोअलिम नकल अपनी जुबांए, सांची जिकर जो कही खुदाए।
जब मगज माएने लीजे खोल, तब पाइए इसारत बातून बोल।। ३९ ।।

खुदा ने जिस वाणी को सत्य कहा है, उसके पढ़े-लिखे लोग अपनी जबान से मनमाने अर्थ करते हैं। जब कुलजम सरूप की वाणी से कुरान और सभी धर्मग्रन्थों के रहस्य खुल गये, तो हकीकत का पता लग जाएगा।

साखी–
दुनियां की उमर कही, अव्वल सिपारे माहें।
सात हजार साल चालीस, नीके देखियो ताहें।। ४० ।।

कुरान के पहले सिपारे में दुनियां की उम्र सात हजार चालीस वर्ष लिखी है, जिसे अच्छी तरह से देखना।

तैंतालीस जुफ्त जो कहे, हर जुफ्त सत्तर बहार भए।
हर बहार सात सौ बरस लए, हर बरस तीन सौ साठ दिन दए।। ४१ ।।

दुनियां की उम्र को पहले सिपारे में तैंतालीस जुफ्त करके लिखा है। एक जुफ्त में सत्तर बहार होते हैं और एक बहार में सात सौ वर्ष होते हैं और एक वर्ष में तीन सौ साठ दिन होते हैं।

Nijanand App

याके एकैस लाख सात हजार दिन, आदम पीछे मजल इन।
ए रसूल के आए की मजल, ए गिनती कर तुम देखो दिल।।४२।।

इस तरह से इक्कीस लाख सात हजार दिन हुए। यह दिनों की गिनती आदम सफी अल्लाह, अर्थात् जबसे सृष्टि बनी है तबसे लिखी है। मोमिनों का एक साल एक दिन के समान निकल जाएगा। रसूल साहब के आने तक की गिनती का हिसाब है, करके देखो।

पांच हजार ताए बरस भए, आठ सौ सैंतालीस ऊपर कहे।
त्रेसठ बरस उमर के लिए, छे हजार नब्बे कम किए।।४३।।

रसूल साहब के आने तक दुनियां की उम्र पांच हजार आठ सौ सैंतालीस वर्ष हुई। रसूल साहब की उम्र तिरसठ वर्ष जोड़ी, तो पांच हजार नौ सौ दस, अर्थात् छः हजार में नब्बे वर्ष कम हुए।

इतथें रसूलें करी सफर, इनके आगे की करों जिकर।
अग्यारहीं के जब बाकी दस, तब दुनियां उमर सात हजार बरस।।४४।।

रसूल साहब पांच हजार नौ सौ दस वर्ष के बाद चले गए। अब उनके आगे की हकीकत बताती हूं। ग्यारहवीं सदी के जब बाकी दस साल रह गए तो दुनियां की उम्र पूरे सात हजार वर्ष हो गई, सम्वत् १७३५ आ गया।

इत थें अमल भयो इमाम, चालीस बरसों फजर तमाम।
जोड़ा पर जोड़ा गुजरे, दुनियां उमर इत लों करे।।४५।।

अब सम्वत् १७३५ के बाद इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी की जागृत बुद्धि का राज शुरू हुआ और रूह अल्लाह की चालीस वर्ष की बादशाही इनके तन से शुरू हो गई। यह सम्वत् १७७५ तक चली और तब जगह-जगह कुलजम सरूप की वाणी पहुंचाई गई। कुरान के अन्दर इन चालीस सालों को दो जोड़े करके कहा है, अर्थात् दो बीसों की बादशाही लिखी है। दुनियां की उम्र यहां तक कही है।

तिनमें जो दस बरसों फजर, सब दुनियां भई एक नजर।
तीस बरस जब अग्यारहीं पर, तब दुनियां सब भई आखिर।।४६।।

इन चालीस के पहले दस वर्ष में कुलजम सरूप की वाणी फजर का ज्ञान मिला और वेद कतेब सभी के छिपे रहस्य खुल गए। ग्यारहवीं सदी के ऊपर जब तीस वर्ष बीते, अर्थात् सम्वत् १७७५ में दुनियां के धर्म ईमान सब समाप्त हो गए।

सत्तर बरस पुलसरात के कहे, सो उठने कयामत बीच में रहे।
पुलसरात दुख कहिए क्यों कर, काफर जलें जुलजुले आखिर।।४७।।

उसके बाद सत्तर वर्ष तक शरीयत के ज्ञान से पश्चाताप करने का समय था, जो कयामत के उठने के बीच में रहे। इन सत्तर वर्षों में, अर्थात् सम्वत् १७७५ से १८४५ तक लोगों को बड़ा पछताना पड़ा कि श्री प्राणनाथजी और मोमिन पास आए और हम लाभ न ले सके। पुलसरात शरीयत के चलने वाले काफिरों को इस खलबली में बड़ा दुःख हुआ।

Nijanand App

दस और दोए बुरज जो कहे, सो बारहीं कयामत के पूरे भए।
ए तीसरी बड़ी फरिस्तों की फजर, पीछे उठ खड़ी दुनियां नूर नजर।। ४८ ।।

इस तरह से कुरान में दसवीं सदी का बयान दो बुर्जों का बयान किया है। वह बारहवीं सदी सम्वत् १८४५ में पूरी हो गई। उसके बाद देवी-देवताओं को, अजाजील को वाणी की पहचान होगी। तब सब दुनियां अक्षर की नजर में अखण्ड हो जाएगी।

।। प्रकरण ।। २२ ।। चौपाई ।। ५१६ ।।

दिन कयामत के पूरे कहे, सो खास उमतवालोंने लहे।
क्यों लहे जाको लिखी दोजक, जावे नहीं तिनों की सक।। १ ।।

इस तरह से कुरान के पहले सिपारे में जो कयामत की गिनती लिखी है, उसे मोमिनों ने अच्छी तरह समझा। दुनियां वाले जिन्हें दोजख की अग्नि में जलना है, वह इसको नहीं समझ सकते और न कभी उनके संशय ही मिट सकते हैं।

पुरसिस का दिन साहेब देखावे, कयामत कौल दूजा कोई न पावे।
पांच सूरत लिखी आम सिपारे, ए समझें पाक दिल उजियारे।। २ ।।

यह तो इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी की कृपा से कयामत के दिन का पता लगता है। वैसे कयामत कब होगी, इस बात को दुनियां वाले नहीं समझ पाते। कुरान के तीसवें आम सिपारे में श्री राजजी महाराज के पांच स्वरूपों का मिलना इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के अन्दर इकट्ठा होना लिखा है। बृज, रास, अरब रसूल साहब, नीतनपुरी, श्री श्यामा महारानी और हकी स्वरूप श्री प्राणनाथजी महाराज। इसको मोमिन ही समझ सकते हैं, जिनके दिल निर्मल हैं।

ए पांचों नेक अमल जो करें, सो भिस्ती फुरमान से ना टरें।
और झूठा काम बदफैली करे, सो दोजख की आग में परे।। ३ ।।

जो इन पांचों के बताए, अर्थात् श्री प्राणनाथजी के बताए निजानन्द सम्प्रदाय की राह पर रहनी से ईमानदारी से चलेंगे, वही ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि अखण्ड धामों की रहने वाली हैं। दुनियां वाले झूठे काम और बदचलनी से जीवन व्यतीत करते हैं। वह दोजख (पश्चाताप) की अग्नि में जलेंगे।

हमेसां दोजखी बदकार, रोज कयामत के हुए खुआर।
ए दिन किने न किया मुकरर, ताए पेहेचानो जिन दई खबर।। ४ ।।

सदा कुकर्म करने वाले जीवसृष्टि ही दोजखी हैं जो कयामत के दिन शर्मसार होंगे। कयामत के दिन को आज दिन तक किसी ने नहीं बताया। अब श्री प्राणनाथजी महाराज कयामत की जानकारी दे रहे हैं। इनके स्वरूप को पहचानो।

कोई न जाने राह न जाने दिन, इन समें हादिएं किए चेतन।
उस दिन बदला होवे अति जोर, हाथों सीधे साहेब करे मरोर।। ५ ।।

परमधाम कब जाना होगा, किस रास्ते से जाना होगा, इसकी जानकारी किसी को नहीं थी। कुरान हदीसों में लिखा है कि कयामत के दिन सबको अपने कर्मों का फल मिलेगा और तब श्री प्राणनाथजी महाराज अपने कर कमलों द्वारा सबको सीधे रास्ते पर चलाएंगे।

Nijanand App

दस और दोए बुरज जो कहे, सो बारहीं कयामत के पूरे भए।
ए तीसरी बड़ी फरिस्तों की फजर, पीछे उठ खड़ी दुनियां नूर नजर।। ४८ ।।

इस तरह से कुरान में दसवीं सदी का बयान दो बुर्जों का बयान किया है। वह बारहवीं सदी सम्वत् १८४५ में पूरी हो गई। उसके बाद देवी-देवताओं को, अजाजील को वाणी की पहचान होगी। तब सब दुनियां अक्षर की नजर में अखण्ड हो जाएगी।

॥ प्रकरण ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ ५१६ ॥

दिन कयामत के पूरे कहे, सो खास उमतवालोंने लहे।
क्यों लहे जाको लिखी दोजक, जावे नहीं तिनों की सक।। १ ।।

इस तरह से कुरान के पहले सिपारे में जो कयामत की गिनती लिखी है, उसे मोमिनों ने अच्छी तरह समझा। दुनियां वाले जिन्हें दोजख की अग्नि में जलना है, वह इसको नहीं समझ सकते और न कभी उनके संशय ही मिट सकते हैं।

पुरसिस का दिन साहेब देखावे, कयामत कौल दूजा कोई न पावे।
पांच सूरत लिखी आम सिपारे, ए समझें पाक दिल उजियारे।। २ ।।

यह तो इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी की कृपा से कयामत के दिन का पता लगता है। वैसे कयामत कब होगी, इस बात को दुनियां वाले नहीं समझ पाते। कुरान के तीसवें आम सिपारे में श्री राजजी महाराज के पांच स्वरूपों का मिलना इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के अन्दर इकट्ठा होना लिखा है। बृज, रास, अरब रसूल साहब, नौतनपुरी, श्री श्यामा महारानी और हकी स्वरूप श्री प्राणनाथजी महाराज। इसको मोमिन ही समझ सकते हैं, जिनके दिल निर्मल हैं।

ए पांचों नेक अमल जो करें, सो भिस्ती फुरमान से ना टरें।
और झूठा काम बदफैली करे, सो दोजख की आग में परे।। ३ ।।

जो इन पांचों के बताए, अर्थात् श्री प्राणनाथजी के बताए निजानन्द सम्प्रदाय की राह पर रहनी से ईमानदारी से चलेंगे, वही ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि अखण्ड धामों की रहने वाली हैं। दुनियां वाले झूठे काम और बदचलनी से जीवन व्यतीत करते हैं। वह दोजख (पश्चाताप) की अग्नि में जलेंगे।

हमेसां दोजखी बदकार, रोज कयामत के हुए खुआर।
ए दिन किने न किया मुकरर, ताए पेहेचानो जिन दई खबर।। ४ ।।

सदा कुकर्म करने वाले जीवसृष्टि ही दोजखी हैं जो कयामत के दिन शर्मसार होंगे। कयामत के दिन को आज दिन तक किसी ने नहीं बताया। अब श्री प्राणनाथजी महाराज कयामत की जानकारी दे रहे हैं। इनके स्वरूप को पहचानो।

कोई न जाने राह न जाने दिन, इन समें हादिएं किए चेतन।
उस दिन बदला होवे अति जोर, हाथों सीधे साहेब करे मरोर।। ५ ।।

परमधाम कब जाना होगा, किस रास्ते से जाना होगा, इसकी जानकारी किसी को नहीं थी। कुरान हदीसों में लिखा है कि कयामत के दिन सबको अपने कर्मों का फल मिलेगा और तब श्री प्राणनाथजी महाराज अपने कर कमलों द्वारा सबको सीधे रास्ते पर चलाएंगे।

Nijanand App

तित पोहोंच के सुध दई तुमें किन, बुजरकी दई इत इन।
निहायत इस रोज की कोई न पावे, ए पातसाह पुरसिस का देखावे।। ६ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज के चरणों में पहुंचने पर पता चलेगा कि कयामत के दिन की पहचान तुम्हें किसने कराई? कुलजम सरूप की वाणी से दुनियां के जीवों को अखण्ड मुक्ति प्रदान कर बहिश्तों में कायम करने की शोभा खेल में तुमको इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने दी है, जिसकी खबर आज तक किसी को नहीं थी। इस बात की पहचान न्याय करने वाले श्री प्राणनाथजी महाराज करा रहे हैं।

किनको नफा न देवे कोए, तब कोई न किसी के दाखिल होए।
कूवत तिन समें कहुंए जाए, तो कोई नफा किसी को न सके पोहोंचाए।। ७ ।।

न्याय के दिन कोई भी किसी को लाभ नहीं दे सकेगा और न ही दु:ख-सुख में मददगार बन सकेगा। तब किसी की भी इलम, चतुराई नहीं चलेगी। कर्मों के हिसाब से ही सबको न्याय मिलेगा।

हुकम हादी का साहेब फुरमान, करे सिफायत खुदा मोमिनों पेहेचान।
मोमिन आकीनदारों को चाहें, हकमें भी उनहीं को मिलाएं।। ८ ।।

श्री राजजी महाराज ने जो कुरान में फरमाया था, उसके रहस्यों को श्री प्राणनाथजी महाराज ने कुलजम सरूप की वाणी से खोल दिया है। उससे पारब्रह्म अक्षरातीत धाम धनी तथा मोमिनों की पहचान हो गई है। ऐसे ही यकीन वाले मोमिनों को ही प्राणनाथजी अपने सुन्दरसाथ में शामिल कर रहे हैं।

जब जाहेर हुआ रोजा और हज्ज, तब काजिएं खोल्या मुसाफ मगज।
ए बात साहेबें छत्रसालसों कही, घर इमाम बिलंदी छत्ता को दई।। ९ ।।

जब इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने कुरान के छिपे रहस्य खोल दिए, तब मोमिन का हज (तीर्थ स्थान) परमधाम है और रोजा दुनियां को छोड़कर अपने श्री राजजी के चरणों में समर्पित करना है, जाहिर हो गया। तब श्री प्राणनाथजी ने यह सभी बातें छत्रसालजी महाराज को समझाई और परमधाम के बारह हजार मोमिनों का सिरदार "अमीरुल मोमिन" बनाया।

॥ प्रकरण ॥ २३ ॥ चौपाई ॥ ५२५ ॥

नौमी आगे अरफा ईद कही, ले दसमी आगे सब लीला भई।
मजलें सब अग्यारहीं के मध, सो कहे कुरान विवेक कई विध।। १ ।।

नवीं सदी के आगे दसवीं सदी खुशी का दिन कहा है (ईसा रूह अल्लाह का आना कहा है)। दसवीं सदी के आगे ग्यारहवीं सदी में सब लीला हुई। ग्यारहवीं सदी के अन्दर तारतम ज्ञान आया। कुलजम सरूप की वाणी उतरी। मोमिनों की जागनी शुरू हुई। श्री प्राणनाथजी विजियाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार आखरुल्जमा इमाम मेंहेंदी साहेब जाहिर हुए। यह बात कुरान में कई तरह से लिखी है।

ए अग्यारहीं बीच बड़ो विस्तार, प्रगटे बिलंद सब सिरदार।
सब न्यामतें सिफतें दई सितार, उतरियां आयतें जो उस्तवार।। २ ।।

ग्यारहवीं सदी के अन्दर ही जागनी के काम का विस्तार हुआ। सभी सिरदार (प्रधान) शाकुण्डल, शाकुमार, ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि संसार में प्रगट हुए। ग्यारहवीं सदी में ही कुलजम सरूप की वाणी और परमधाम की सब न्यामतें श्री राजजी महाराज ने दीं।

Nijanand App

दस और दोए बुरज जो कहे, सो बारहीं कयामत के पूरे भए।
ए तीसरी बड़ी फरिस्तों की फजर, पीछे उठ खड़ी दुनियां नूर नजर।। ४८ ।।

इस तरह से कुरान में दसवीं सदी का बयान दो बुर्जों का बयान किया है। वह बारहवीं सदी सम्वत् १८४५ में पूरी हो गई। उसके बाद देवी-देवताओं को, अजाजील को वाणी की पहचान होगी। तब सब दुनियां अक्षर की नजर में अखण्ड हो जाएगी।

।। प्रकरण ।। २२ ।। चौपाई ।। ५१६ ।।

दिन कयामत के पूरे कहे, सो खास उमतवालोंने लहे।
क्यों लहे जाको लिखी दोजक, जावे नहीं तिनों की सक।। १ ।।

इस तरह से कुरान के पहले सिपारे में जो कयामत की गिनती लिखी है, उसे मोमिनों ने अच्छी तरह समझा। दुनियां वाले जिन्हें दोजख की अग्नि में जलना है, वह इसको नहीं समझ सकते और न कभी उनके संशय ही मिट सकते हैं।

पुरसिस का दिन साहेब देखावे, कयामत कौल दूजा कोई न पावे।
पांच सूरत लिखी आम सिपारे, ए समझें पाक दिल उजियारे।। २ ।।

यह तो इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी की कृपा से कयामत के दिन का पता लगता है। वैसे कयामत कब होगी, इस बात को दुनियां वाले नहीं समझ पाते। कुरान के तीसवें आम सिपारे में श्री राजजी महाराज के पांच स्वरूपों का मिलना इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के अन्दर इकट्ठा होना लिखा है। बृज, रास, अरब रसूल साहब, नौतनपुरी, श्री श्यामा महारानी और हकी स्वरूप श्री प्राणनाथजी महाराज। इसको मोमिन ही समझ सकते हैं, जिनके दिल निर्मल हैं।

ए पांचों नेक अमल जो करें, सो भिस्ती फुरमान से ना टरें।
और झूठा काम बदफैली करे, सो दोजख की आग में परे।। ३ ।।

जो इन पांचों के बताए, अर्थात् श्री प्राणनाथजी के बताए निजानन्द सम्प्रदाय की राह पर रहनी से ईमानदारी से चलेंगे, वही ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि अखण्ड धामों की रहने वाली हैं। दुनियां वाले झूठे काम और बदचलनी से जीवन व्यतीत करते हैं। वह दोजख (पश्चाताप) की अग्नि में जलेंगे।

हमेसां दोजखी बदकार, रोज कयामत के हुए खुआर।
ए दिन किने न किया मुकरर, ताए पेहेचानो जिन दई खबर।। ४ ।।

सदा कुकर्म करने वाले जीवसृष्टि ही दोजखी हैं जो कयामत के दिन शर्मसार होंगे। कयामत के दिन को आज दिन तक किसी ने नहीं बताया। अब श्री प्राणनाथजी महाराज कयामत की जानकारी दे रहे हैं। इनके स्वरूप को पहचानो।

कोई न जाने राह न जाने दिन, इन समें हादिएं किए चेतन।
उस दिन बदला होवे अति जोर, हाथों सीधे साहेब करे मरोर।। ५ ।।

परमधाम कब जाना होगा, किस रास्ते से जाना होगा, इसकी जानकारी किसी को नहीं थी। कुरान हदीसों में लिखा है कि कयामत के दिन सबको अपने कर्मों का फल मिलेगा और तब श्री प्राणनाथजी महाराज अपने कर कमलों द्वारा सबको सीधे रास्ते पर चलाएंगे।

Nijanand App

तित पोहोंच के सुध दई तुमें किन, बुजरकी दई इत इन।
निहायत इस रोज की कोई न पावे, ए पातसाह पुरसिस का देखावे।। ६ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज के चरणों में पहुंचने पर पता चलेगा कि कयामत के दिन की पहचान तुम्हें किसने कराई? कुलजम सरूप की वाणी से दुनियां के जीवों को अखण्ड मुक्ति प्रदान कर बहिश्तों में कायम करने की शोभा खेल में तुमको इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने दी है, जिसकी खबर आज तक किसी को नहीं थी। इस बात की पहचान न्याय करने वाले श्री प्राणनाथजी महाराज करा रहे हैं।

किनको नफा न देवे कोए, तब कोई न किसी के दाखिल होए।
कूवत तिन समें कहूंए जाए, तो कोई नफा किसी को न सके पोहोंचाए।। ७ ।।

न्याय के दिन कोई भी किसी को लाभ नहीं दे सकेगा और न ही दुःख-सुख में मददगार बन सकेगा। तब किसी की भी इलम, चतुराई नहीं चलेगी। कर्मों के हिसाब से ही सबको न्याय मिलेगा।

हुकम हादी का साहेब फुरमान, करे सिफायत खुदा मोमिनों पेहेचान।
मोमिन आकीनदारों को चाहें, हकमें भी उनहीं को मिलाएं।। ८ ।।

श्री राजजी महाराज ने जो कुरान में फरमाया था, उसके रहस्यों को श्री प्राणनाथजी महाराज ने कुलजम सरूप की वाणी से खोल दिया है। उससे पारब्रह्म अक्षरातीत धाम धनी तथा मोमिनों की पहचान हो गई है। ऐसे ही यकीन वाले मोमिनों को ही प्राणनाथजी अपने सुन्दरसाथ में शामिल कर रहे हैं।

जब जाहेर हुआ रोजा और हज्ज, तब काजिएं खोल्या मुसाफ मगज।
ए बात साहेबें छत्रसालसों कही, घर इमाम बिलंदी छत्ता को दई।। ९ ।।

जब इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने कुरान के छिपे रहस्य खोल दिए, तब मोमिन का हज (तीर्थ स्थान) परमधाम है और रोजा दुनियां को छोड़कर अपने श्री राजजी के चरणों में समर्पित करना है, जाहिर हो गया। तब श्री प्राणनाथजी ने यह सभी बातें छत्रसालजी महाराज को समझाईं और परमधाम के बारह हजार मोमिनों का सिरदार "अमीरुल मोमिन" बनाया।

॥ प्रकरण ॥ २३ ॥ चौपाई ॥ ५२५ ॥

नौमी आगे अरफा ईद कही, ले दसमी आगे सब लीला भई।
मजलें सब अग्यारहीं के मध, सो कहे कुरान विवेक कई विध।। १ ।।

नवीं सदी के आगे दसवीं सदी खुशी का दिन कहा है (ईसा रूह अल्लाह का आना कहा है)। दसवीं सदी के आगे ग्यारहवीं सदी में सब लीला हुई। ग्यारहवीं सदी के अन्दर तारतम ज्ञान आया। कुलजम सरूप की वाणी उतरी। मोमिनों की जागनी शुरू हुई। श्री प्राणनाथजी विजियाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार आखरुल्जमा इमाम मेंहेंदी साहेब जाहिर हुए। यह बात कुरान में कई तरह से लिखी है।

ए अग्यारहीं बीच बड़ो विस्तार, प्रगटे बिलंद सब सिरदार।
सब न्यामतें सिफतें दई सितार, उतरियां आयतें जो उस्तवार।। २ ।।

ग्यारहवीं सदी के अन्दर ही जागनी के काम का विस्तार हुआ। सभी सिरदार (प्रधान) शाकुण्डल, शाकुमार, ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि संसार में प्रगट हुए। ग्यारहवीं सदी में ही कुलजम सरूप की वाणी और परमधाम की सब न्यामतें श्री राजजी महाराज ने दीं।

Nijanand App

तित पोहोंच के सुध दई तुमें किन, बुजरकी दई इत इन।
निहायत इस रोज की कोई न पावे, ए पातसाह पुरसिस का देखावे।। ६ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज के चरणों में पहुंचने पर पता चलेगा कि कयामत के दिन की पहचान तुम्हें किसने कराई? कुलजम सरूप की वाणी से दुनियां के जीवों को अखण्ड मुक्ति प्रदान कर बहिश्तों में कायम करने की शोभा खेल में तुमको इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने दी है, जिसकी खबर आज तक किसी को नहीं थी। इस बात की पहचान न्याय करने वाले श्री प्राणनाथजी महाराज करा रहे हैं।

किनको नफा न देवे कोए, तब कोई न किसी के दाखिल होए।
कूवत तिन समें कहुंए जाए, तो कोई नफा किसी को न सके पोहोंचाए।। ७ ।।

न्याय के दिन कोई भी किसी को लाभ नहीं दे सकेगा और न ही दु:ख-सुख में मददगार बन सकेगा। तब किसी की भी इलम, चतुराई नहीं चलेगी। कर्मों के हिसाब से ही सबको न्याय मिलेगा।

हुकम हादी का साहेब फुरमान, करे सिफायत खुदा मोमिनों पेहेचान।
मोमिन आकीनदारों को चाहें, हकमें भी उनहीं को मिलाएं।। ८ ।।

श्री राजजी महाराज ने जो कुरान में फरमाया था, उसके रहस्यों को श्री प्राणनाथजी महाराज ने कुलजम सरूप की वाणी से खोल दिया है। उससे पारब्रह्म अक्षरातीत धाम धनी तथा मोमिनों की पहचान हो गई है। ऐसे ही यकीन वाले मोमिनों को ही प्राणनाथजी अपने सुन्दरसाथ में शामिल कर रहे हैं।

जब जाहेर हुआ रोजा और हज्ज, तब काजिएं खोल्या मुसाफ मगज।
ए बात साहेबें छत्रसालसों कही, घर इमाम बिलंदी छत्ता को दई।। ९ ।।

जब इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने कुरान के छिपे रहस्य खोल दिए, तब मोमिन का हज (तीर्थ स्थान) परमधाम है और रोजा दुनियां को छोड़कर अपने श्री राजजी के चरणों में समर्पित करना है, जाहिर हो गया। तब श्री प्राणनाथजी ने यह सभी बातें छत्रसालजी महाराज को समझाई और परमधाम के बारह हजार मोमिनों का सिरदार ''अमीरुल मोमिन'' बनाया।

॥ प्रकरण ॥ २३ ॥ चौपाई ॥ ५२५ ॥

नौमी आगे अरफा ईद कही, ले दसमी आगे सब लीला भई।
मजलें सब अग्यारहीं के मध, सो कहे कुरान विवेक कई विध।। १ ।।

नवीं सदी के आगे दसवीं सदी खुशी का दिन कहा है (ईसा रूह अल्लाह का आना कहा है)। दसवीं सदी के आगे ग्यारहवीं सदी में सब लीला हुई। ग्यारहवीं सदी के अन्दर तारतम ज्ञान आया। कुलजम सरूप की वाणी उतरी। मोमिनों की जागनी शुरू हुई। श्री प्राणनाथजी विजियाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार आखरुल्जमा इमाम मेंहेंदी साहेब जाहिर हुए। यह बात कुरान में कई तरह से लिखी है।

ए अग्यारहीं बीच बड़ो विस्तार, प्रगटे बिलंद सब सिरदार।
सब न्यामतें सिफतें दई सितार, उतरियां आयतें जो उस्तवार।। २ ।।

ग्यारहवीं सदी के अन्दर ही जागनी के काम का विस्तार हुआ। सभी सिरदार (प्रधान) शाकुण्डल, शाकुमार, ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि संसार में प्रगट हुए। ग्यारहवीं सदी में ही कुलजम सरूप की वाणी और परमधाम की सब न्यामतें श्री राजजी महाराज ने दीं।

Nijanand App

छिपा था बुजरक बखत, जाहेर हुआ रोज देखाई कयामत।
अग्यारहीं सुख ले चले सिरदार, पीछे बारहीं में जले बदकार।। ३ ।।

इस कयामत के दिन की जानकारी जो आज दिन तक किसी को नहीं थी, वह अब श्री प्राणनाथजी महाराज ने जाहिर कर दी है। ग्यारहवीं सदी में मोमिनों को अखण्ड सुख मिला और बारहवीं सदी में दुनियां वाले पश्चाताप की अग्नि में जले।

जिन पाई राह रोज कयामत, सो उठे फजर के नूर बखत।
फजर पीछे जब ऊग्या दिन, तब तो तोबा तोबा हुई तन तन।। ४ ।।

जिन मोमिनों तथा ईश्वरीसृष्टि को कयामत के दिन की पहचान हो गई, उनको कुलजम सरूप की वाणी से मूल घर की पहचान हुई। कुलजम सरूप की वाणी से अज्ञानता के अन्धकार को मिटाकर सवेरा हो गया। फिर जब हादी श्री प्राणनाथजी महाराज अन्तर्ध्यान हुए, तब सभी हाय-तोबा करने लगे कि श्री प्राणनाथजी आए थे और हम पहचानकर सुख न ले सके।

तब तो दरवाजा मूंद के गया, पीछे तो नफा काहू को न भया।
सब जले जल्या अजाजील, जाए उठाया असराफील।। ५ ।।

जब तक अन्तर्ध्यान नहीं हुए थे, तब तक एक बन्दगी का हजार गुना फल मिलता है। अन्तर्ध्यान होने पर तोबा का दरवाजा बन्द हो गया। अब उतना ही लाभ मिलेगा जितनी बन्दगी करोगे। सारी दुनियां पश्चाताप करती रही कि श्री प्राणनाथजी आए और हमने पहचाना नहीं। बारहवीं सदी के बाद जब सब देवी-देवता और अजाजील फरिश्ता पश्चाताप के बाद निर्मल हो गए, तब असराफील फरिश्ता जागृत बुद्धि से अजाजील को होश में लाएगा।

एक सूरें उड़ाएके दिए, दूसरे तेरहींमें कायम किए।
यों कयामत हुई जाहेर दिन, महंमदें करी उमत रोसन।। ६ ।।

असराफील फरिस्ते ने श्री प्राणनाथजी के अन्दर जाहिर होकर पहला सूर ग्यारहवीं सदी सम्वत् १७३५ में फूंककर बड़े-बड़े धर्माचार्यों और काजियों के अहंकार को समाप्त किया और कुरान में छिपे रहस्यों को खोलकर कयामत के निशानों को जाहिर कर दिया और कयामत को जाहिर कर दिया तथा मोमिनों और ईश्वरीसृष्टि का आना संसार में जाहिर कर दिया और दूसरे सूर से तेरहवीं सदी में कायमी करने का काम शुरू हुआ।

|| प्रकरण || २४ || चौपाई || ५३१ ||

|| प्रकरण तथा चौपाइयों का सम्पूर्ण संकलन ||

|| प्रकरण || ५२७ || चौपाई || १८७५८ ||

|| बड़ा कयामतनामा सम्पूर्ण ||

|| श्री कुलजम सरूप सम्पूर्ण ||

Nijanand App